॥ श्रीमत्कुंजविहारिणे नमः ॥

।। श्रीस्वामीहरिदासो विजयतेतराम ।।

रसिक-कुल-कमल-दिवाकर महामधुररससार नित्यविहार-प्रकाशक
अनन्य-नृपति श्रीस्वामीजी महाराज एवं परम्परानुवर्ती
आचार्यो के महोत्सवों की

समाज-श्रृंखला



श्रीस्वामी हरिदास रसोपासना पीठ सेवा संस्थान

श्रीहरिदास नगर
श्रीधाम वृन्दावन

❐ प्रकाशकः

श्रीस्वामी हरिदास रसोपासनापीठ सेवा संस्थान

श्रीहरिदास नगर, वृन्दवन

❐ चतुर्थ संस्करण :

सन् 2018

❐ प्रकाशन तिथि

श्री राधाष्टमी महोत्सव

❐ सेवार्थ :

अनुराग शर्मा

गाजियाबाद (उ0प्र0)

✻ श्रीमत्कुंजविहारिणे नमः ✻

।। श्रीस्वामीहरिदासो विजयतेतराम ।।

समाज-श्रृंखला

रसिक अनन्यनृपति श्रीस्वामीजू महाराज कौ
प्राकट्य-महोत्सव : भाद्र शु-8

मंगलाचरण

प्रथम लड़ाऊँ श्रीगुरू, बंदन करि श्रीहरिदास।
विपुल प्रेम निजु नेम गहि, कहि सुजस बिहारीदास।।१।।
गुरू सेवत गोविंद मिल्यौ, गुरू गोविंदै आहि।
बिहारिदास (श्री) हरिदास कौ, जीवत है मुख चाहि।।२।।

श्रीस्वामीकृष्णदासजी कृत मंगल-   राग-सुहौ विलावल, ताल-रूपक

प्रथम जथामति श्रीगुरू चरन लड़ाई हौं ।
उदित मुदित अनुराग प्रेम गुन गाई हौं ।।
गौरस्याम सुखरासि तिन्हैं दुलराई हौं ।
देहु सुमति बलि जाउँ आनंद बढ़ाई हौं ।।
आनंद सिंधु बढ़ाइ छिन छिन प्रेम प्रसादहिं पाई हौ ।
जय श्रीवरविहारिनिदासि कृपा तें हरषि मंगल गाई हौं ।।१।।

जय जय श्रीहरिदास रसिक कुल मंडना ।
अनन्य नृपति श्रीस्वामी सकल भय खंडना ।।
रसिक कमल कुल भानु सु प्रगट उदय कियो ।
भ्रम तम श्रम सब नासि सबनि कौं सुख दियो।।
दै सबनि सुख अति कृपा करि प्रगट बिहार सुनाइयो।
जय जय श्रीहरिदास रसिक मन भाइयो।।२।।
जानि विहार गुप्त अति भूतल प्रगट कियो।
कीरति जग विस्तार सुरस रसिकनि दियो।।
निरनय करि जस गाय सु परहित वपु धर्यौ।
धनि धनि कहैं सब रसिक अनन्य सुवर वर्यौ।।
वर वर्यौ धनि धन्य कहि कहि छिन छिन प्रति दुलरावहीं।
जय जय श्रीहरिदास वांछित फल पावहीं।।३।।
काम केलि माधुर्य सहज रति सर्वदा।
प्रेम सुभाव सरल मति सुधा गुन निर्मदा।।
विस्व सकल सुख देखि छिया करि छाँड़ियो।
दम्पति पति अभिराम अपनो पन माँड़ियो।।
माँड़िपन अभिराम छिन छिन दम्पति सहज लड़ावहीं।
देखि यह सुख रंग दोऊ मंद मधुर सुर गावहीं।।४।।
जय जय श्रीवृन्दावन सहज सुहावनों।
नित्यविहार आधार सदा मन भावनो।।
परम सुभग श्रीजमुना पुलिन मंजुल जहाँ।
विमल कमल कुल हंस सकल कूजित तहाँ।।
विमल कमल कुल हंस कूजित सेवत खग मृग सुख भरे।
मुदित बन नव मोर निर्तत राजत अति रूचि सों खरे।।५।।

कुसुमित कुंज रसाल लता अति सोहहीं।
अलिकुल कोकिल कीर कूजित मन मोहहीं।।
त्रिविध समीर बहत रस सुखद मनहिं लियें।
बसंत सरद सेवत चित वित मनहिं दियें।।
बसंत सरद सेवत सदा रितु सुख समुद्रहिं को गनैं।
विविध भाँतिन भूमि राजत सोभा देखत ही बनैं।।६।।
मन्दिर नवल निकुञ्ज मदन सेवत रहै।
मनि मुक्ता फल फलित सोभा गुन को कहै।।
श्रीकुञ्जबिहारी बिहारिन अतिसय राजहीं।
नित्यकिशोर सहज रति सुख मैं भ्रजहीं।।
नित्यकिसोर सहज सदा रति गौर स्याम तन सोहहीं।
कञ्चन तन धन दामिनि रतिपति देखत छबि मन मोहहीं।।७।।
अँग संग श्रीहरिदास बिहार करावहीं।
मननि लियें अनुसार सहज दिन भावहीं।।
सुख सम्पति रहैं साज समयो पाय सु गावहीं।
तान तरंग मधुर सुर राग सुनावहीं।।
तान तरंग सुनाइ मधुर सुर कुँवरि कुँवरि कुँवर सुख पावहीं।
रीझि रीझि स्यावासि कहि हँसि हार बसन पहिरावहीं।।८।।
प्रगट बिहारिनिदासि कृपा को वपु धस्यो।
श्रीकृष्णदासि बड़भाग सेवत नित अनुसस्यौ।।
सील सुभाव गुन अर्पि प्रिया प्रेमहिं लहें।
चित बित दै रूख लै मन सेवत नित रहें।।
रहें सेवत रूख लिये नित संक न काहू की करी।
जय श्रीवरविहारिनिदासि चरन रति सूर ज्यौं व्रत ना टरी।।६।।

और बहुत अपनाय जे मनवचक्रम करि अनुसरे।
मोसे पतित महा सठ तेऊ अपने करे।।
जैसें पारस परसि तें कंचन जानिये।
ऐसें किये श्रीनागरीदासि निश्चय उर आनिये।।
उर आनि निश्चै जानि यह सुख चरन कमल सेऊँ सदा।
जय श्रीवरविारिनिदासि प्रगट नित सिंधु सुधा रस सर्वदा।।१०।।
मन वच क्रम करि यह जय जो नर गाइहैं।
मनवांछित फल बेगि सदा सुख पाइहैं।।
निजु धन सर्वसु जानि उमँगि दुलराइहैं।
प्रेम लच्छिना भक्ति विपुल रस पाइहैं।।
रस पाय विपुल आनंद बाढ़यौ जन्म जन्म के श्रम गये।
जय श्रीवरविहारिनिदासि कृपा तें मन मनोरथ सब भये।।११।।

छोटा गुरू मंगल

मूल ताल

श्रीगुरू मंगल गाय मना।
श्रीहरिदास चरन बंदन करि विपुल विनोद बढ़ाय घना।।
श्रीविहारीविहारिनिदासि परम रूचि सरस मनोरथ पाय धना।
श्रीनरहरि रसिक सिरोमनि मूरति पीतांबर बलि जाय जना।।१।।
आजु महा मंगल भयो माई।
भई प्रसन्न सिरोमनि राधे यह सुख कह्यौ न जाई।।
परम प्रीति सों विलसत दोऊ प्रेम बढ़यो अधिकाई।
श्रीहरिदासी (जू) रसिकसिरोमनि उमँगि-उमँगि आनंद झरि लाई।२।
आजु समाज सहज मन भायो।
कुँवरि किसोरी गोरी भोरी निरखि हरिष हँसि कंठ लगायो।।

अपने अपने मेल मिलीं सब तान तरंगनि रंग बढ़ायो।
श्रीहरिदासी (जू) रसिकसिरोमनितन-मन-बचननि हियो सिरायो।।३।।

प्रथम दिवस

श्रीस्वामीजू कौ पद-　　राग-मल्हार, चौताल

ऐसी रितु सदा सर्वदा जो रहै बोलत मोरनि।
नीके बादर नीके धनुष चहुँदिसि नीकौ श्रीवृन्दावन आछी नीकी मेघन की घोरनि।। आछी नीकी भूमि हरी हरी आछी नीकी बूढ़नि की रेंगनि काम किरोरनि। श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कें मिलि गावत राग मलार जम्यौ किसोर किसोरनि।।१।।

श्रीगुरूदेवजू कौ पद-　　राग-सुहौ विलावल, ताल-रूपक

श्रीवृन्दावन कौ री चोज मनोज बढ़त रहै।
कुञ्जनि कुञ्जनि केलि नवेलि नवल कहैं।।
कहैं नवल नवेलि केलि सुनि सखी सुख पावहीं।
मंद मंद मधुर मिलै सुर सरस गीतहिं गवाहीं।।१।।
प्रथम प्रिया आराधि साधि सब पाइये।
प्रीतम अति अवलंब सू रसिक रिझाइये।।
रिझाइ अति अवलंब प्रीतम फूल तन मन में बढ़ै।
नेम गहि निर्बाहि यह रस प्रेम प्यारी कौ पढ़ै।।२।।
रहसि बहसि बदी होड़ परस्पर मन हरैं।
रसही रस उपजाइ उमँगि अँग अँग ढरैं।।
ढ़रैं रंग उमँगि रंगीले जिहीं अंग परनि परैं।
निपुन नागर नवल दोऊ हरषि हँसि अंकौं भरैं।।३।।

बहुरि कुँवरि करि रोड़ कोड़ के चाड़िले।
हारी होड़ न देत लेत लटि लाड़िले।।
लटि लेत परस न देति अपनों अंग अति नव नागरी।
कोक कुसल किसोर बरबस किये कुँवरि अचागरी।।४।।
अति आसक्त दुहूँ दिसि रिसहिं नसावहीं।
अति आनंद सुधाधर पीवत पिवावहीं।।
पिवाय अधर सुधा महा मधु मत्त मिलि कौतिक कियौ।
किये कौ सुख अल्प सखि सुनि कह्यौ भरि उमँग्यौ हियौ।।५।।
दंपति संपति सहित सबै सुख पूजहीं।
नखसिख कौतिक रासि विलसि कल कूजहीं।।
कूजि कलकंठी कृसोदरि स्याम श्रवन सुहावनी।
वारि पिय सुकुमारि पर मनु देत रीझि रिझावनी।।६।।
रीझ रहे सिरमौर और उबटी सबै।
तरूनि तरंग अनंग अंग लपटी जबै।।
लपटि स्याम तमाल बाला बेलि कोमल लौ लई।
हासि कुसुम उदित उरोजनि नेह नाजुक नित नई।।७।।
निजु रस रीति प्रतीति विपिन बसि तौ लहै।
रसिक अनन्य नृपति कौ संग समझि गहै।
गहै संग अनन्य नृपति कौ रंग लाग्यौ जब हिये।
भये साधन सिद्ध तिनके तिहीं छिन अनहीं किये।।८।।
नित्य बिहार आधार श्रीहरिदासी दियौ।
विपुल विनोदनि देखि सु जनम सुफल कियौ।।
कियौ जनम सुफल सु अपनों और प्रानी जे सुनैं।
संग मिलि श्रद्धा बढ़ै सुख दुर्लभ ब्रजजुवती जनैं।।६।।

स्यामा कौ आधार राजरस तौ कह्यौ।
सब रस कौ रस सार बिहार बिसद गह्यौ।।
गह्यौ बिसद बिहार अपनों जानि निजु कीनी मया।
(जै) श्रीवर बिहारिनिदासि सुखनिधि दुलहिनी की दिन दया।।१०।।

श्रीस्वामी ललितमोहिनीदेवजू कौ पद- राग कल्याण, ताल-अद्धा तिताला

बिहारी तेरे नैंना रूप भरे।
निरखि निरखि प्यारी राधे कौं अनत न कहूँ टरे।।
सुख कौ सार समूह किसोरी उमँगि उमँगि अंकौं भरे।
श्रीललितमोहनी की निजु जीवन उर सौं उरज अरे।।

श्रीस्वामी ललितकिसोरीदेवजूं कौ पद- एकताला

मेरी अँखियाँ रूप के रंग रँगी।
निरखि सरूप कुँवरि राधे कौ याही माँझ पगी।।
छिन छिन प्रति अवलोकि माधुरी ना सोई न जगी।
श्रीहरिदासीजू ललित केलि हित याही में जगमगी।।

द्वितीय दिवस

श्रीस्वामी जू कौ पद- राग-गौड़ मल्हार, ताल धमार

नाचत मोरनि संग स्याम मुदित स्यामाहिं रिझावत।
तैसीये कोकिला अलापत पपीहा देत सुर तैसोई मेघ गरजि मृदंग बजावत।। तैसीये स्याम घटा निसि सी कारी तैसीये दामिनि कौंधि दीप दिखावत। श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुञ्जबिहारी रीझि राधे हँसि कण्ठ लगावत।।

श्रीगुरूदेवजू कौ पद- राग-आसावरी, ताल रूपक

निकुञ्ज बिराजिये जू।
नव जोवन जुगराज बिहारी विहरत नव रति साजिये जू।।

मदन सदन मैदान विपिन रन रूपे हैं रसिक मन धीर।
वे उनके वे उनके छलबल तौलत गुननि गम्भीर।।१।।
उबटि बदन उमहे मन रञ्जन सज्जन सहज सुभाय।
अञ्जन अनी नैंन सर सूधे भृकुटिन चाप चढ़ाय ।।२।।
बिबि उरोज गज कुंभनि पर अञ्चल चल ढ़ाल ढुराय।
चँवर चिकुर चमकत मनसिज के फौजन सिलह सजाय।।३।।
कंचुकि कवच कसत कटि गाढ़े पीयरे बसन बनाइ।
बीरी बसीठ चुनौती दै सखि कीजिये जुद्ध अघाइ।।४।।
घोष रोष हनि बचन निसानैं चढ़ि तुरंग चित चाइ।
छोटी खुरी कटाछनि खूँदत उपजत अगनित भाइ।।५।।
बोलत भृंग बखानत बिरदनि सुनत सरस सहनाइ।
उमड़ि परत समुहाय सुभट नट नख छत छबि रहि छाइ।।६।।
खंड खंड भये गंड रदन छद दै भुजदंड सहाइ।
लूटत महा माधुरी घूंटत घूमत अंग अंग घाइ।।७।।
पीक कपोलनि पर सोंनित सद सोहत सुरति सुमार।
जीति रहे संग्राम सूर दोउ सम बल बैस उदार।।८।।
तजत न खेत हेत हठि गाढ़े अप अपने चित छोह।
खेम कुसल सल फबी रौतई पाये निपट निलोह।।६।।
जै श्रीविपुल बिहारिनिदासि खवासी करत रही अंग संग।
रसिक अनन्य सरोमनि श्रीहरिदासीजू के प्रेम अभंग।।१०।।
गावत गीत मीत मिलि बैठे सब रिस रोस नसाई।
सुरति समै के अंत उदित भये मुदित भये दुलराइ।।११।

कहत सुनत सेवत जे यह सुख ते धनि कौतिक हार।
श्रीवृन्दावन दिन बजत बधाई बलि बलि विसद बिहार।।१२।।

तृतीय दिवस

स्वामीजू कौ पद- राग-मारू मिश्रित, ताल धमार

प्यारी तेरी बाँफिन बान सुमार लागै भौहें ज्यौं धनुष।
एकही बार यौं छूटत जैसें बादर बरषत इन्द्र अनष।।
और हथियार को गनै चाहनि कनष।
श्रीहिरदास के स्वामी स्यामा कुञ्जबिहारी सोंप्यारी जब तू बोलत चनष-चनष।।

श्री गुरूदेवजू कौ पद- राग-मारू, ताल-धमार

चलौ जू कौतुक देखन जांहि।
सूचत सखी सुख प्रेम परस्पर नव जुवतिन मिलि मांहि।।१।।
गावति प्रेम भरी मन भावति फूली अंगनि मांहि।
नव वन नव निकुञ्ज नव पल्लव नव दल सीतल छांहि।।२।।
बिबिध रंग चित्रित बीथिन चलि बिमल जमुन जल न्हांहि।
कोमल कूल मूल बंसीवट निकट अटक कछु नांहि।।३।।
सुन्दर पुलिन नलिन नाना रंग अलि अवली अरूझांहि।
उड़त पराग राग रंजित रस मत्त मुदित गुंजांहि।।४।।
त्रिविध पवन मृदु गवन परम रूचि परसत श्रम नसि जांहि।
अति रति रूचि राजति संपति सुख दंपति हिये हितांहि।।५।।
तहाँ बिहरत द्वै मीत मनोहर वन बसि अनत न जांहि।
मृदु कुन्दन मनिमय अवनी पर रवनी रवन रमांहि।।६।।
आज समाज सहज सुख बरषत हरषत मिलि मन मांहि।
कोमल काम प्रेम मधुरे रस रहसि बहँसि किलकांहि।।७।।

मानौं मल्ल जुगल जीतन हित नित छल बलहिं तुलांहि।
राती गाती छाती कसि कटि पीत बसन फहरांहि।।८।।
अंगराग मद्रत भुज दंडनि मुख मंडित मुसिकांहि।
बिनु बैननि सैननि सुख नैननि चितै चितै इतरांहि।।६।।
हाव भाव भृकुटिन मटकत नट अटकि लटकि लपटांहि।
अपनी अपनी गौं गहि घातनि बातनि बिहँसि रिसांहि।।१०।।
कबहुँ-कबहुँ जूरि-जूरि अँग-अँग मुरि परसत हूँ न पत्यांहि।
अति लावन्य निपुन लाघवता पुनि सनेह नियरांहि।।११।।
सकल कला कोबिद विद्यानिधि काहू धीरज नांहि।
हाथापाई करत नवल बल अति ब्याकुल अकुलांहि।।१२।।
छाँड़त गहत गहावत भावत अति रसमिस मिलि जांहि।
गूढ़भाइ गाढ़े आलिंगन चुम्बन सखी सिहांहि।।१३।।
अति सुगन्ध समरंध भये मिलि अलि नलिनी बलि जांहि।
सहज सुरति रस मत्त परस्पर अंक निसंक समांहि।।१४।।
मूलताल- सुखद खुमारी कुञ्जबिहारी पुनि ऐंड़ाहिं जभांहि।
ये पुजवत वे निजवत इहि रस अचै अचै न अघांहि।।१५।।
श्रीबिहारिनिदासि लड़ावत त्यों-त्यों अलकलड़े लड़कांहि।
उमा रमा को सची सरस्वती व्रजजुवती ललचांहि।।१६।।
तिनको दरस देव दुर्लभ जे अराधा राधांहि।
भुव बसि वृन्दावन नहिं सेवत ते प्रानी पछतांहि।।१७।।

चतुर्थ दिवस

श्रीस्वामी जू कौ पद- राम-धनाश्री, ताल, चौताल

बेनी गूँथ कहा कोउ जानै मेरी सी तेरी सों राधे।
बिच-बिच फूल सेत पित राते को करि सकै एरी सों राधे।।
बैठे रसिक सँवारन बारन कोमल कर ककही सों साधे।
श्रीहरिदास के स्वामी स्याम नखसिख लौं बनाई दै काजर नखरी सों आधे।।

श्रीगुरूदेवजू कौ पद- राग-गौरी, ताल-ध्रुपद

मोहन मोहिनी सुहेलरा गाऊँ।
लाड़िलीलाल गहेलरा लड़ाऊ।।१।।
(श्री) वृन्दावन घन सहज सोभा मन लोभा उपजावै।
जिनकौं कृपा करैं श्रीस्यामा तिनहिं सुन्यौ जस भावै।।२।।
बिपिन बिलासिनि प्रेम प्रकासिनि जो निज प्रेमहिं पाऊँ।
ज्यौंहीं-ज्यौंही कुञ्जबिहार करौ मिलि त्यौंही-त्यौंही तुमहिं लड़ाऊँ।।३।।
सुनहु सहेली प्रेम-गहेली कौतिक एक दिखाऊँ।
अञ्चल जोरि चितै तृन तोरौं तन मन मोद बढ़ाऊँ।।४।।
रायबेलि सतबर्ग सेवती बिच बिच चम्पे की कालियाँ।
रचि रचि चौसर हार गुदैं गुहि पहिरावनि चलि अलियाँ।।५।।
कुसुमित कुञ्ज गुञ्ज अलि-माला चन्दन चर्चित गलियाँ।
सुखद समीर बहत सौरभ जल कमल बिराजत थलियाँ।।६।।
सारस हंस चकोर मोर पिक चात्रिक भाषा भलियाँ।
गावत रस जस पिय प्यारी कौ सखि सुनि पग प्रेम न टलियाँ।।७।।

कबहुँक बाल सलज्ज सु पिय तन कबहुँ हँसत मुख मोरी।
कबहुँक निपुन सुरति सुख सागर नागरि नवल किशोरी।।८।।
छिन छिन प्रति दम्पति नव नव रति अंग अंग अभिरामा।
प्रथम समागम स्याम दिनहिं दिन दूलह दुलहिन स्यामा।।।६।।❁
अंसन अंस जोरि भुज बल्लभ भामिनि जामिनि जागे।
बिलसत हँसत हँसावत रसबस अति आनंद अनुरागे।।१०।।
नौतन तरल तमाल लाल मिलि लता ललित फल फलियाँ।
देत असीष श्री बिहारिनिदासी करहु नवल नित रलियाँ।।११।।❁

श्रीस्वामी रसिकदेवजू कौ पद- राग-बिहाग, ताल धमार

❁ दूलहु दुलहनि अधिक बनी।

पूजन चलीं कलपतरू सुन्दरि औरहिं ठान ठनी।।
कियो है सखिन गठ जोरि सबन मिलि आगे धन पाछे जु धनी।
गावत चलीं गीत मंगल के सबहिं सुघर सजनी।।
रूनुक झुनुक पग धरति धरनि पर छवि पावत अवनी।
छिरकि सुगन्ध मूलतरू पूज्यौ फूलनमाल घनी।।
अञ्चल जोरि यहै बर मांगत रहौ यह प्रेम सनी।
(श्री) रसिकबिहारिननि होहु न मान छकि केलि-कला कवनी।।

श्रीगुरूदेवजू कौ पद- राग-दरबारी कान्हरो, ताल धमार

चिरजियौ लाल रसाल प्यारीजू तेरौ लाड़िली कौ लाल। चितवत चित बितहिं चुरावत मधुरे बैंन श्रवम सिरावत नैंननि ही पुनि देख्यौ भावत खिलौना सौ तेरे मन कौ ख्याल।। तेरे हित नित दरस परस हुलसि हुलसि हियो सरसत तू तन मन प्रानप्यारी तोसों प्रेम परनि ढाल। श्रीबिहारी बिहारिनिदास मिले सुख मुख देखत होत निहाल।।

पंचम दिवस

श्रीस्वामीजू कौ पद- राग-मल्हार, ताल चौताल

नदित मन मृदंगी रासभूमि सुकांति अभिनैं सुनवगति त्रिभंगी।
धापि राधा नटति ललिता रसवती नागरी गाइतेग्रि नाभि तान तुंगी।
रसद बिहारी बन्दे बल्लभा राधिका निसिदिन रंग रंगी।
श्रीहरिदासी के स्वामी स्यामा कुञ्जबिहारी संगीत संगी।।

श्रीनागरीदेवजू कौ पद- ताल-रूपक

(ए) प्यारी सहज मनै हरि लेत तू मन मोहनी मोहन हेत।
तुम अति प्रेम प्रवीन हो प्यारी सुघर सिरोमनि जान।।
मन क्रम बचन बिलासिनी मेरे तुम बिन गति नहिं आन।।१।।
तू तन तू मन में बसी प्यारी तू मम जीवनि प्रान।
तू सर्वसु धन मानिनी दै मोहिं मान रति दान।।२।।
भामिनी तुव भुव छेप हो (प्यारी) मोपै सह्यौ न जाय।
अञ्चल पल अलकावलि के अन्तर मन अकुलाय।।३।।
मो मन ऐसी होत है प्यारी तो तन में मिलि जाउँ। ❐
तुव मुख चन्द चकोर लौं नैना पान करत न अघाउँ।।४।।

श्रीस्वामी जू कौ पद- राग-कान्हरो, ताल रूपक

❐ ऐसी जीय होत जो जिय सौं जिय मिलै तन सौं तन समाइ लेहुँ तौ देखौ कहा हो (हो) प्यारी। तोही सौं हिलगि आँखि आँखिन सौ मिली रहैं जीवत कौ यहै (हैं) लहा हो (हो) प्यारी।। मोकौं इतौ साज कहाँ री प्यारी हौं अति दीन तुव बस भुव-छेप जाई न सहा हो (हो) प्यारी। श्रीहरिदास के स्वामीस्याम कहत राखि लै री ाहुबल हौं बपुरा काम दहा हो (हो) प्यारी।।

श्रवन सुजस रसना रसौं तुव करत रहौं गुन गान।
जाचत ज्यौं जल मीन लौं तुव दरस परस आघ्रान।।५।।
तुव लावनि गुन निधि आगरी (प्यारी) अब जिन करहु निदान।
पूरन प्रेम प्रकासिनी दै मोहिं अधर मधु-पान।।६।।
तब ललित बचन सुनि स्याम के प्यारी नैननि में मुसिक्याइ।
ब्याकुल बिरह बिलोकि कैं प्यारी लिये हैं लाल उर लाई।।७।।
मैं मान कियो तुम सों कबै प्यारे कलपि कलपि कित लेत। ◆
मेरे प्रीतम प्रान हो पिय जीवन तुमहिं समेत।।८।।
(तब) लटकि लगी उर स्याम के (प्यारी) हुलसति हँसति उदार।
कोक निपुन नव नागरी बरबस किये सुकुमार।।६।।
भये मदन मत्त रस माधुरी सुख बरसत सुख न आघाइ।
निरषि हरषि रस फूलहीं श्रीललितादिक सुख पाइ।।१०।।
सुरति रंग में रँगि रह्यौ (हौ) कुञ्ज-सदन सुखरास।
(श्री) बिपुलबिहारिनदासि पर बलि नवल नागरीदास।।११।।

श्रगुरूदेवजू कौ पद-

राग-कान्हरौ, ताल-धमार

◆ एजू जानत हो मेरे मन की मैं कब मान कियौ। तुम मेरी जीवनि जीव कौ ज्यौं जानत हौं कित मानत हौं पिय संभ्रम वचन बियौ।। क्यौ अनबोले है रहे गहे से मन कहत बचन समुझाइ सुनत हँसि आयौ हुलसि हियौ। श्रीबिहारिनिदास प्रीतम प्यारी प्रति बोलत खोलत कर कंचुकी कुच छल मुख अमृत पियौ।।

षष्ठ दिवस

श्रीस्वामीजू कौ पद- राम-पर्ज, ताल-धीमा तिताला

प्यारी तेरी पुतरी काजर हूँते कारी मानो द्वै भँवर उड़े री बराबरि।
चम्पे की डारि बैठे कुन्द अलि लागी है जेब अराअरि।।
जब आनि घेरत कटक काम कौ तब जिय होत डराडरि।
श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा कुञ्जबिहारी दोउ मिलि लरत झराझरि।।

श्रीस्वामी नागरीदेवजू कौ पद- राग-आसावरी, ताल-धीमा तिताला

चलि सखी देखन जाहिं कौतिक आजु भलौ री।
अपनी अपनी सौंज साजि सब बेगि चलौ री।।१।।
सुखद तरनिजा कूल फूल फूले कमल कली री।
तहाँ सारस हंस चकोर मोर झूमें आनि अली री।।२।।
फूली ललित लता द्रुमबेलि सोभा अमित बढ़ी री।
कूजित कोकिल कीर कुञ्ज अट्टान चढ़ी री।।३।।
अलि - कुल कुसुम समूह सरस वितान तनै री।
(देखि) तहाँ खेलत नवल नवेलि केलि कल हरत मनैं री।।४।।
बाजे बाजत रंग संच सुर तार बनै री।
बर किन्नर कठतार बीन डफ सरस घनै री।।५।।
गावत फाग सुहाग राग रस रंग पनै री।
सहेलिन कौ अनुराग भाग कबि कौन गनै री।।६।।
मुदित प्रिया पिय अंग अनंग बिनोद करैं री।
सोंधे सुरंग अबीर अरगजा निसंक भरैं री।।७।।
गौर स्याम अभिराम बसन सुरंग बनैं री।
सारी सुमन सुबास पीत-पट लसत तनैं री।।८।।

दोउ राजत अमित अपार सु सार बिहार करैं री।
उदित मदन मद मोद भुजा हँसि अँस धरैं री।।९।।
रति दान अधर रस पान बिलसत अंक भरैं री।
बिबि बिधु बदन निहार नैन रस रंग ढरैं री।।१०।।
बाढयौ रंग अपार हार मुक्ता लर टूटी।
कंचुकि कसन सुदेस कुसुम अलकावलि छूटी।।११।।
अति माधुर्य सनेह परस्पर बिबस भये री।
दोउ सुरति श्रमति अति जानि सहचरि अंक लये री।।१२।।
यह फाग नयो अनुराग सुहाग कह्यो न परै री।
(श्री) वृन्दाविपिन बिनोद कौन सुखसिन्धु तरै री।।१३।।
सेवत सुख रूख जानि नये सिंगार ठये री।
बलि बलि नागरिदास की स्वामिनि नेह नये री।।१४।।

सप्तम दिवस

श्रीस्वामीजू कौ पद- राग-धनाश्री, ताल-चौताल

दिन डफ ताल बजावत गावत भरत परस्पर छिन छिन होरी।
अति सुकुमार बदन श्रम बरसत भले मिले रसिक किसोर किसोरी।।
बातनि बतबतात राग रंग रमि रह्यो इत उत चाह चलत तकि खोरी।
सुनि श्रीहरिदास तमाल स्याम सों लता लपटि कञ्चन की थोरी।।

श्रीगुरूदेवजू कौ पद- (बना) राग-धनाश्री, होरी काफी, ताल-धमार

श्रीवृन्दावन सहज सुहावनों नवल नव नागर ए,
नव नागरि नेह निधान बना हाँ हंबै।
होरी खेलन के मते नवल नव नागर ए,
दोऊ बनि बैठे करि ठान बना हाँ हंबै।।१।।

मान मनावत प्रथमहीं दोउ करत परस्पर आन।
रोंटि मेंटि मिलि खेलहीं हँसि दिये हैं दुलहिनी पान।।२।।
नवल निकुँज बिराजहीं दोऊ रबितनया के तीर।
भृंग बिहंग कुलाहला नव नव जुवतिन की भीर।।३।।
स्याम ओर की साँवरी गोरी के गोरे गात।
उमँगि चलीं चित चौंप सों अपनी अपनी गहि घात।।४।।
सब सखी मन अनुसारिनी उन साज लई सब सौंज।
लालरतन मनि की कुंडी केसर की औंजा-औंज।।५।।
कस्तूरी करपूर सों (जहाँ। साखि कुमकुमा आदि।
चन्दन मलयागिरि घिस्यौ गौरामेद जवादि।।६।।
बाजे बाजत अनभती सब मिले है संच सुरतार।
बीन अमरती आवझी (बाजैं) बर किन्नर कठतार।।७।।
गावत चैत सुहावनौं मेरे पिय प्यारी के हेत।
खेलत मेलैं मिलवहीं (उन) वद्यौ है सबनि संकेत।।८।।
लै लावनि लाँगैं कसीं बैनी कटि सौं लपटाइ।
आधे कुच कंचुकि कसीं अति आनन्द उर न समाइ।।९।।
आज्ञा लै सनमुख भई (उन) दीनी हैं जुगति जनाइ।
अरगजा पिचकारी भरीं दोऊ भरत परस्पर धाइ।।१०।।
चौबा के चहले मचे भए अम्बर अरून अबीर।
हार जीत नहिं समझहीं दोऊ अति रस मगन गँभीर।।११।।
फाग खिलावत फूल सों दै सैनन ही सनकारि।
नैन कमल कज्जल भरे जहाँ मची है कटाक्षन मार।।१२।।

इक झूकि बैठी पीठ दै इक मानिनि है मुख मोरि।
एक मनावत दीन है इक पायन परत निहोरि।।१३।।
दिन दुलहिनि कौं दुलरावहीं दिन दूलह कौं दै गारि।
गावत सुख दे रूख लिये मुंख चुम्बत भरि अँकवारि।।१४।।
सोंधे में सोंधी सबै (अब) कौंन पिछानै काहि।
सबहि प्रेम रस रंग रँगी (जहाँ) रहे हैं रसिक मुख चाहि।।१५।।
मेरौ कुञ्जबिहारी कौतुकी यह कौतुक रह्यौ लुभाय।
मत्त भये रस माधुरी पीवत सुख दै धाय।।१६।।
होरी खेलत रँग रह्यौ सब गोरी लई बुलाय।
इनमें को गोरी को साँवरी मोसों कहौं स्याम समुझाय।।१७।।
स्याम कहैं गोरी सबै गोरी के तन मन स्याम।
निरखि बदन तन्मय भये यौं सुफल कियौ सब काम।।१८।।
बातनि रहसि बहसि बढ़ी दोऊ यहि बिधि खेलैं फाग।
अपने रसिकन की रस रीति कौ यौं प्रगट कियौ अनुराग।।१६।।
सखी सहेली सहचरी श्रीहरिदासी सुखरासि।
श्रीविपुल विहारिनदासि कौं हँसि रीझि दई स्याबासि।।२०।।

O

रस-सागर श्रीस्वामी बीठलविपुलदेवजू महाराज कौ प्राकट्य-महोत्सवःमार्गशीर्ष शु0 5

प्रथम दिवस

श्रीस्वामी कौ पद-

राग-केदारौ, ताल चौताल

सुनि धुनि मुरली बन बाजैं हरि रास रच्यौ।
कुञ्ज कुञ्ज द्रुम बेलि प्रफुल्लित मंडल कञ्चन मनिन खच्यौ।।

नृत्तत जुगल किसोर जुवति जन मन मिलि राग केदारौ मच्यौ।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुञ्जबिहारी नीके री आजु प्यारौ लाल नच्यौ।।

श्रीगुरूदेवजू कौ पद- राग-काफी, ताल -धमार

रसभीने बिहारी मन हस्यौ, ऐसी जुवती धीरज धरै को।
इक कौतिक देख्यो सुनि सजनी आज तरनिजा तीर।
बिमल तमाल लता लपटी सब सुक पिक भृंगन भीर।।१।।
हंस हंसिनी नलिन पुलिन मिलि पत्र बिलोल समीर।
दम्पति सम्पति सहज सु देखत बढ़ी मनसिज मन पीर।।२।।
सुभग बरन तन स्याम मनोहर सुन्दर नैन विसाल।
बंसी सरस मधुर सुर गावत गुन गन रूप रसाल।।३।।
हौं हीं लेत प्रीति परचो अलि ये अति प्रेम प्रवीन।
पलक ओट बन बोलत डोलत ब्याकुल तन मन लीन।।४।।
औचक अचक आय ऊभे भय हौं हीं सहज सुभाय।
कह्यौ कछु न लह्यौ मन कौ मतौ दरस परस अकुलाय।।५।।
कम्प पुलक तन स्वेद भयौ भ्रम मौपै कह्यौ न जाय।
अति चञ्चल अञ्चल गहि मेरौ बचनन रूचि उपजाय।।६।।
तैंहूँ मान सयान दृढ़ायौ मैं गाढ़े करि प्रान।
प्रीतम पानि उरज परसे हँसि मनहुँ बिसिष बर बान।।७।।
मूलताल-बिह्वल भये भाँवते पिय राखी उर कंठ लगाय।
बदन निहारि निवारि सकुच सखि आधर मधुर रस प्याय।।८।।
सर्वसु श्रीहरिदासी कौ सर्वोपरि नित्यबिहार।
बिपुल बिनोद सदा वृन्दावन रसिक अनन्य आधार।।६।।
श्रीललितादिक सेवत सन्तत सुख बर्षत हरष उदार।
श्रीबिहारिनिदास बिलास मगन मन मधुर प्रेम रस सार।।१०।।

द्वितीय दिवस

श्रीस्वामीजू कौ पद- राग-केदारौ, ताल-चौताल

जहाँ जहाँ चरन परत प्यारीजू तेरे तहाँ तहाँ मन मेरौ करत फिरत परछाहीं।
बहुत मूरति मेरी चँवर ढुरावत कोऊ बीरी खवावत एकव आरसी लै जाहीं।।
और सेवा बहुत भाँतिन की जैसी ये कहैं कोऊ तैसीये करौं ज्यौं रूचि जानौ जाहीं।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कौ भलें मनावत दाउ उपाहीं।।

श्रीगुरूदेवजू कौ पद- राग-काफी, ताल-धमार

हो हो रँगीली नागरी रँगरत्ता मत्ता तेरेरी नैन बैन सलौने चाव।
मोहि लिया मिठ बोलन डोलन मोहन रसिक राव।।१।।
साँवली बैनी मनों अलि श्रेनी सोहँदा झब्बा अन्त।
लटकि चली अलबेली रस बस कारन कामी कन्त।।२।।
उज्जली जोति झलकदा मोती उच्ची नक्कु लवंग।
एक अलक झलक कपोलनि बिथुरी मोतिन मंग।।३।।
अधर मधुर रस चखियाँ अखियाँ अञ्जन ऊपर लीक।
सेज सुरति रस केलि कलोलनि प्रेम परी सखि पीक।।४।।
चौसर चम्प गुलाब दी माला दलमली अँग अंग।
कुञ्ज भवन रवन रमी प्यारी पिय के रंग सुरंग।।५।।
चोली चित्र मित्र अलि भीनी अंगराग अनुराग।
निसि जागे रति रंग मनोहर पागि रहे गल लाग।।६।।
उच्च कुच्च नवरंगे चंगे अञ्चल अति उदार।
लाड़िली लाल लड़ावँदा भावँदा गाँवदा नित्य बिहार।।७।।
छैल छबीली की छाय रही छबि अंग अंग उर और।
कटि पट कच छूटी सर्वसु लुटि लियौ सिरमौर।।८।।

मूलताल-सखी सब गल्ला लखियाँ अखियाँ कुञ्जन कीति गल्ल।
सुनि सुनि सुख नेह सनेहिदा हँसि मिली मुख भल्ल।।९।।
श्रीकुञ्जबिहारी प्यारी पर वारी जीवन प्रीतम प्रान।
(श्री) बिहारिनदास जथामति तुव गुन लावनि रूप निधान।।१०।।

तृतीय दिवस

श्रीस्वामीजू कौ पद- राग-केदारी, ताल-चौताल

(ये) यह कौन बात जू अबहीं और अबहीं और अबहीं औरैं। देवनारि नागनारि और नारि ते न होहिं और की औरैं।। पाछे न सुनी अबहूँ आगेहूँ न ह्वै हैं यह गति अद्भूत रूप की और की औरैं। श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुञ्जबिहारी या रस ही बस भये यह भई और की औरैं।।

स्वामी नागरीदेवजू कौ पद- राग-मारू, ताल-धमार

स्यामा नागरी हो प्रबीन
सकल गुननिधान राजति नागर नेह नवीन।।१।।
नख सिख छबि रूप की रासि सोहत मोतिन मंग।
अलक झलक देखत छबि मोहे लाल अनंग।।२।।
कबरी कुसुम ग्रन्थित कच तिलक बिन्दुली भाल।
बंक भृकुटि मोहत मन चपल नैन बिसाल।।३।।
अति दुति ताटंकनि छबि भ्राजत लोल कपोल।
अधर दसन मुसिकनि सखि मधुरैं मधुरैं बोल।।४।।
सुभग नासा सोहत अति बेसर मनि लाल।
मुक्ता बहुभांति लसत चिबुक बिन्दु रसाल।।५।।

कंठपदिक छूटो लरैं मिही जंगाली पोति।
हेम जटित चौकी छबि जगमगै अति जोति।।६।।
कुच जुग स्याम कंचुकी यों राजत मोतिन हार।
उर अम्बर उडगन मानों कीनों है उदगार।।७।।
भुज मृणाल जुगल बलय झब्बा फौंदा स्याम सुढार।
पुहुप सुरंग फूले मनों मदन बिटप डार।।८।।
त्रिवली नाभि कटि नितम्ब किंकिनी सुरतार।
करभ जंघ जेहरि छबि नूपुर झनकार।।६।।
जुगल कमल अरून चरन राजैं बहु भाँति।
नख मनिगन देखत छबि मोहन मन सांति।।१०।।
पचरंग ढिग अरून सारी लँहगा पीत दुकूल।
गोरे तन भोरे मन देखत लालहिं फूल।।११।।
निरखत छबि अँग अँग मोहे स्याम प्रवीन।
चकाचौंधी लागी नैननि लाल भये आधीन।।१२।।
मूलताल-कुञ्ज कुञ्ज डोलनि बहु लीनें सखिन संग।
मुदित मोर निर्तत देखि दामिनी घन रंग।।१३।।
दम्पति रति सोहत अति बिलसत सुख सार।
श्रीललितादिक देखत दिन सर्बसु प्रान अधार।।१४।।
जै श्रीबरबिहारिनदास कृपा तें सेऊँ सुखरासि।
छिन छिन प्रति बलि बलि नवल नागरीदासि।।१५।।

चतुर्थ दिवस

श्रीस्वामीजू कौ पद राग-कैदारौ, ताल-चौताल

बनी री तेरे चारि चारि चूरी करनि।
कंठसिरी दुलरी हीरन की नासा मुक्ता ढरनि।।
तैसोई नैननि कजरा फबि रह्यौ निरखि काम जिय डरनि।
श्रीहरिदासि के स्वामी स्यामा कुञ्जबिहारी रीझि रीझि पग परनि।।

श्रीगुरूदेवजू कौ पद-

मोहन मोहिनी सुलेहरा गाऊँ। (पृष्ठ ११ पर देखें)

❁

अनन्य मुकुटमणि श्रीस्वामी बिहारिनदेवजू कौ प्राकट्य-महोत्सवः श्रावण शु0 3 (हरियाली तीज)

प्रथम दिवस

निकुञ्जू बिराजिये जू (पृष्ठ ७ पर देखें)

द्वितीय दिवस

चलौ जू कौतिक देखन जाँहि (पृष्ठ ६ पर देखें)

तृतीय दिवस

श्रीस्वामीजू कौ पद- राग-मल्हार, ताल-चौताल

नदित मन मृदंगी रासभूमि सुकान्त सुभ नवगति तृभंगी। धापि राधा नटति ललिता रसवती नागरी गाइतेग्रि नाभि तान तुंगी। रसंद बिहारी बंदे बल्लभा राधिका निसदिन रंग रंगी। श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुञ्जबिहारी संगीत संगी।

श्रीगुरूदेवजू कौ पद- साँवरी सहेली राग-बिहाग, ताल-धमार

मनमोहन भेष पलटि चले साँवरी सहेलो अपनौ नांउ बनाइ।
प्रेमसहेली सों मिली श्रीस्यामा मोहि मिलाई।।१।।
प्रेमसहेली यौं कह्यो तू मेरी सौ सीख सुभाव।
यौं मिलिये यौं बोलिये ज्यौं उपजै चित चाव।।२।।
तैं कह्यौ भलौ मन भाँवतौ अब बन्यौ (है) दाव उपाव।
हौं दैहुँ कहा सुख तेरोई सखि तोमें सबहि समाव।।३।।
जो तू कहि है सोई करि हौं सखी तेरे पाँयनि पाइ।
बातन हिल मिल रंग रह्यौ फूली अंग न माइ।।४।।
प्रेमसहेली कुञ्ज में साजे सकल सिंगार।
केस कुसुम बैनी गुही सोंधे सरस सुढार।।५।।
जुरौ चम्पौ जगमगै मधि मुक्तामनि लाल।
बिच बिच मल्ली मौलसिरी झब्बा सुरंग गुलाल।।६।।
पटियन प्रेम बनाइ लिख्यौ अरून सरस सीमंत।
भ्रम तम श्रम सब दूर होत सीसफूल हुलसंत।।७।।
सेंदुर कौ तिरछौ तिलक बिच मृगमद बिंदुली बनाइ।
तन मन निरखि हरषि भयौ रीझ प्रियाजू की पाइ।।८।।
अति बाँकी भौहैं सोहैं अञ्जन नैन विसाल।
चितवत चितहिं चुरावहीं जुवतिवृन्द नव बाल।।६।।
खुटिला खुभी जराव के अवतंसनि मनि लाल।
बेसरि मुक्ता झलमलै अधर मधुर सु रसाल।।१०।।
दसनावलि कल कुन्द लौं मुख हँसत लसत बहुभाँति।
रवि ससि कोटिक दामिनी सकुचि दुरति लति जाति।।११।।

रसनावलि गुन गन गनैं जाचति रति सुख सार।
चन्दन बन्दन कौ झलक चिबुक चखौड़ा चार।।१२।।
कंठपदिक छूटी लरैं उज्जल जलज सुदेस।
राते डोरा दुरंग भये पहिरें प्रेम अवेस।।१३।।
अतलस की अँगिया लसत अति आनंद उदित उरोज।
हँसति दुरति अञ्चल मुख दै तन घन मुदित मनोज।।१४।।
बिबिध बरन बहु भाँति जाति सारी सुमन सुबास।
लहँगा मँहगा मोल नहीं कोमल बिमल विलास।।१५।।
कर पहुँची चारि चारि चूरी कंकन वलय बाजूबन्द।
अँगुरिन मुँदरी सुन्दरी नखनि लसत सत इन्दू।।१६।।
अर्धचन्द बाँकी चौकी उपमा दैहुँ सु काहि।
झाबनि पर फौंदा फबै मानौ उपजे हैं मदन उमाहि।।१७।।
त्रिबली उदर सुहावनी मधि मोहन नाभि गंभीर।
छीन मध्य कटि किंकिनी मुखरित मुदित अधीर।।१८।।
सुन्दर सुभर नितम्बिनी जंघनि मनि मौज बिलोल।
सरस स्निग्ध सुमन बनी गुल्फ पिंडुरिया गोल।।१६।।
पगनि घूँघरा बाजने ऐड़ी अँगुरी लाल।
लटकि चलति गज गति लजति सीखत सुगति मराल।।२०।।
चूरा चौका चाँदनी पग नखनि दसहुँ दिसि जोति।
जित ढरि चरन सुधरनि धरति प्रीत प्रगट तित होत।।२१।।
अँग अँग निहारति मन हरति आरति तन मन काम।
प्रेमसहेली लै चलीं नवल कमल कुञ्ज धाम।।२२।।
मेघ महल परदा फुही बहु बादर विमल बितान।
अद्भुत बन आनँदमई तहाँ राजैं (श्री) स्यामा रसिक निधान।।२३।।

रतन खचित सारौट पर बैठी बन बिस्तार।
प्यारी प्रीतम कौ हित चित धरैं हुलसति हँसति उदार ।।२४।।
सोहत सखी समूह में जीति मदन भई भूप।
पचरंग छत्र चँवर ढरैं मन मोह्यो स्यामा रूप अनूप।।२५।।
प्रेमसहेली फिर चितयौ कछुक सिखै लई लाज।
चलीं चलीं जब निकट आई चञ्चल सहज बिराज।।२६।।
चौंकि परी चितयौ सबनि यह को आई आन।
प्रेमसहेली यौं कह्यौ यह सरस निपुन गुन गान।।२७।।
एक प्रेम सबहिन भयौ लै आई बर बाम।
प्रेमसहेली आगे ह्वै बोल लई निज नाम।।२८।।
प्रेमसहेली यौं कह्यौ यह मेरे कुल सील समान।
सरबस प्रेम हियौ सच्यो लै मिली अप बपु प्रान।।२९।।
देखत मन औरै भयौ आदर कियो सराहि।
नवल किसोरी यों कह्यौ तू मो ढ़िंग ते जिनि जाहि।।३०।।
नखसिख सुन्दर मोहिनी श्रीस्यामाजू के प्रान।
अंग अंग रस बरसहीं नागरि सुघर सुजान।।३१।।
नवलकिसोरी यों कह्यौ मोहि अपनो सो सिंगार सिखाय।
सुनत श्रवन मन सुख भयौ सीखै बलि कह्यौ लड़ाय।।३२।।
पानि परसि हँसि लै चली नव केसर की कुञ्ज।
अरून स्याम सित पीत मधुप गावत रस जस पुञ्ज।।३३।।
प्रेमसहेली पहिले ही रचि सचि सीतल सेज।
सकल सौंज उपयोग भोग प्रानप्रियाजू के हेज।।३४।।
तन रोम हरषि पुलकावली कीनौं कुञ्ज प्रवेश।
काम कुञ्ज अभिराम हीं बहु भाँतिन बढयौ अवेस।।३५।।

मूलताल- अब कछु राग सुनाई सखी रही रूष लियें मुख चाहि।
प्रगट प्रेम न जनावहीं गावति उमहि उमाँहि।।३६।।
जाके गावत तान तरंग अनंग नचै लीनी कंठ लगाइ।
भेंटत भुजनि भरम गयौ मिलि अँग अँग समाइ।।३७।।
मधुर प्रेम रस सिन्धु बढयौ गई निसि नसि भयौ भोर।
बिलसत हँसत न जानहीं भोरहु जुगलकिसोर।।३८।।
प्रेमसहेली के प्रेम कौ गावत ललना ताल।
छिन छिन प्रति रति विस्तरत करत प्रान प्रतिपाल।।३६।।
जो तुम मेरे प्रानपियारे रँगभरे उमँगि ढरे रसरासि।
तौ हौं तुम्हारो जस गाऊँ दिन दुलराऊँ तू तौ मेरी जीवनि बिहारिनिदासि।।

चतुर्थ दिवस

श्रीस्वामीजू कौ पद- प्रात:काल राग-भैरवी, ताल-चौताल

सौंधे नहाइ बैठी पहिरि पट सुन्दरि जहाँ फुलवारी तहाँ सुखवति अलकैं। कर नख सोभा कल केस सवाँरति मानौं नव घन में उडगन झलकैं।। विविध सिंगार लियें आगे ठाढ़ी प्रिय सखी भयौ भरू आन रतिपति दल दलकैं। श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुञ्जबिहारी छबि निरखत लागत नहिं पलकैं।।

श्रीगुरूदेवजू कौ पद- (झूमका) राग-विलावल, ताल-धमार

मेरे पिय प्यारी कौ झूमका सखि कहत परस्पर प्रेम,लाल बलि लाड़िली हो।
ये दोउ निमिष न बीछुरैं सखि इनहिं प्रेम कौ नेम।।१।।
प्रथम लड़ैती गाइहौं जाकौं श्रीवृन्दावन धाम।
पुनि रसिक रँगीली गाइहौं जाकौ कुञ्जबिहारी नाम।।२।।

नख सिख सुन्दर सोहई अद्भूत रूप अपार।
एक प्रान तन द्वै धरैं अति मधुर प्रेम रस सार।।३।।
पहिलौ झूमक ताहि कौ जाकौ सोहत सहज सुहाग।
दूजौ झूमक ताहि कौ जाकौ बाढ़त अति अनुराग।।४।।
पूरन प्रेम प्रकासिनी श्रीस्यामा अति सुकुँवारि।
मोहनजू के नैन चकोर लौं ससि जीवत बदन निहारि।।५।।
नव चम्पक तन कामिनी पिय सुभग साँवरी अंग।
दोउ समवैस विराजहीं लजि लागत पागनि अनंग।।६।।
नित नवलकिसोरी नागरी नित नागर नवलकिसोर।
प्रेम परस्पर झूमहीं जूरि दोउ नव जोवन जोर।।७।।
तन मन अरूझि न सुरझहीं दोउ मगन मदन मद मोद।
प्रेमसहेली सुन्दरी दोउ दौरि लिये गहि गोद।।८।।
झूमत झूमत आवहीं छबि अंसनि झूमत बाहु।
कुञ्ज कुटी तन मन दियें दोउ फूलत नागरी नाहु।।९।।
झूमक झब्बा झलकहीं नीबीबंद बाजूबन्द।
तरकि तरकि बंद टूटहीं सुख लूटत अति आनन्द।।१०।।
स्याम अधर अञ्जन भए मिलि राते नैन कपोल।*
श्रमजलकन बदन बिराजहीं मानौ नवमुक्ता निरमोल।।११।।

---

* अरूनाधर अञ्जन रञ्जित ह्वै बिथके अलिबन्ध कलोलनि में।
बिथुरी अलकैं सिथली पलकैं जु लखी ललिता गति गोलनि में।।
श्रीबिहारीबिारिनिदासि कहैं बलि चाल डगमगी डोलनि में।
मुस्क्यानि सयानि पिछानि प्रिया पिय की कछु पीक कपोलनि में।।

अब औरे छाजहीं सखि देखौ मन दै धाइ।
अपनौं सर्बस साँवरी लेहु ललना लाल लड़ाइ।।१२।।
झूमक सारी झूमहीं सखि पहिरें झूमक देहिं।
हरषि हरषि रस बरषहीं सखि निरखि निरखि सुख लेहिं।।१३।।
श्रीवृन्दावन दिन झूमका सखि झूमि रह्यौ फल फूल।
सुनि मन मुदित सबै आई झूमि कालिन्दी के कूल।।१४।।
मेरे कुञ्जरवन कौ झूमका गुन गावत कोकिल कीर।
प्रेम उमँगि हियौ भर्‍यौ सुख झूमत जमुना नीर।।१५।।
माते मुदित सिलीमुखा झूमि देत मधुर सुर घोर।
आनन्द उमँगि अलापहीं कल नाचत मोर चकोर।।१६।।
झुंडनि झुंडनि मृग - जुरि नैननि झूमक देहिं।
सुन्दर बदन निहारहीं सुर सब्द श्रवन भरि लेहिं।।१७।।
निरखि निरखि मुख रूख लियें बहुरी सब सीस नवाइ।
तन मन गुन अर्पन कियौ सुख दीनौं दुहुनि अघाइ।।१८।।
तब उनमान्यौ मन कौ मतौ सखि लै चली सुहित जनाइ।
सुन्दर पुलिन सरस कन झलकत कमल कुमुद देखै आइ।।१६।।
तहाँ सारस हंस प्रसंसित झूमक देत सुगतिन दिखाइ।
प्यारी हार पीताम्बर पिय सौं रीझि दियौ सुख पाइ।।२०।।
आगे उमँगि चलत लटकत सखि झूमक दै दुलराइ।
तहाँ नये नये रस छाकत कौतिक उझकत छबि रही छाइ। २१।।
कदली कुंद कदम्ब अम्ब बन बीथिन बर बिरमाइ।
तन बन किधौं बन तन भयौ कछु ब्यौरो बरन्यो न जाइ।।२२।।
मनिमंडल मुक्तामहल बहु रतनसार चित्रसाल।
कनक कलस छाजे झलकत बहु झूमत रतन प्रबाल।।२३।।

मधि मंजुल नव कुञ्ज किसलय दल सीतल सेज सुरंग।
कोमल कुसुम सरस सौरभ सब सम पराग बहु रंग।।२४।।
जाके परदनि द्वार झरोखनि झूमत मनसिज मदन अनंग।
तहाँ बैठे रीझि सराहि रसिकवर निरखि हरषि अँग अंग।।२५।।
चिबुक टटोरत छँद बंद छोरत परसत हँसत उतंग।
याही रस खेलत पुलि पुनि पिय प्यारी लेत उछंग।।२६।।
अंगराग अनुराग रँगे दूलह दुलहिनि द्वै देह।
सहचरि कहत सुरति सुखसागर झूमौ सहज सनेह।।२७।।
जै जै श्रीहरिदास प्रताप चरन बल बिपुल सु प्रेम प्रकासि।
मेरे गौर स्याम कौ सरस झूमका झूमि बिहारिनदासि।।२८।।

श्रीपीताम्बरदेवजू कौ पद- राग-भैरवी, ताल-तिताल

जै स्वामी जै स्वामी स्वामी जै स्वामी जै स्वामी।
अद्भुत रूप अनूप निरखि वपु गुननिधि पूरनकामी।।
सुन्दर चरन तरन भवसागर पद रज परसत पामी।
कटत पाप संताप जनम के दरस प्रकासित धामी।।
पिंडुरी जंघ नितम्ब निरखि छबि कटि सुदेस अभिरामी।
त्रिवली नाभि उदर रोमावलि हृदयमाल दरसामी।।
कंठ चिबुक मुख नयन नासिका भृकुटी श्रवन सुठामी।
मस्तक तिलक नाम अंकित बपु पीताम्बर सिरनामी।।१।।
जै राधे जै राधे जै राधे जै राधे।
गौरांगी नीलाम्बर भूषित भूषन ज्योति अगाधे।।
सहचरि संगनि स्याम धामिनी पुजवति मन की साधे।
रसिकबिहारनि कृपा निहारनि पीताम्बर आराधे।।२।।

श्रीस्वामी सहचरिशरणदेवजू कौ पद-

बाँकी पाग चन्द्रिका तापर तुर्रा रूरकि रहा है।
वर सिरपेंच माल उर बाँकी पट की चटकि अहा है।।
बाँके नैन मैन सर बाँके बैन बिनोद महा है।
बाँके की बाँकी झाँकी करि बाकी रही कहा है।।३।।

श्रीस्वामी ललिताकिशोरीदेवजू के पद-

लड़ैती तेरे चरन महा सुखदाई।
जिनहि निरखि लाल भए प्रीतम करत केलि मन भाई।।
कबहुँक सपरस करि आनँद में राखत कंठ लगाई।
येई चरन हमारे मस्तक अब डर करत बलाई।।४।।
बिहारिनि संग निरन्तर मेरे।
जिनकी कृपा लाल रहैं बांछित जीवत याही हेरे।।
निकसि न सकत रूप-सागर ते परे प्रेम रस फेरे।
ऐसी ललितकिशोरी प्रीतम कहा जगत के डेरे।।५।।

श्रीरूपसखीजू के पद-

चारू चिबुक बदनारविन्द पर हीरा ललित विराजै री।
सुन्दर चष मुसक्यान मनोहर निरखि मदन सचु लाजै री।।
मनमोहन कौ मन मधुकर हाँ कुञ्ज-भाल पर भ्राजैं री।
कुञ्जमहल रस प्यारी पिय को रसिक रूप सिरताजैं री।।६।।
बिथूरी अलकैं श्रमकन झलकैं घूमत पलकैं प्यारी की।
उपजत किरन तरून तन तेरे ललित कपोल किनारी की।
प्रतिबिंबित छबि अद्‌भुत बैनी लटकि चाल सुकुमारी की।
रीझि रसिकबर ललित छबीलौ लाल केलि उर धारी की।।७।।

श्रीगुरूदेवजू कौ पद-

बिहरत लाल बिहारिन दोऊ श्रीजमुनाजी के तीरें तीरें।
अद्भुत अखंड मंडल भुव पर वर भामिनि भुज भीरें भीरें।।
कुञ्ज गगन घन अलक बदरिया चलत परस्पर सीरें सीरें।
उपजत किरन कपोल बिमल हँसि लसि दसनावलि हीरें हीरें।।
तामें द्वै ससि श्रवत सुधा श्रमजलकन मुख छबि नीरें नीरें।
लोचन चारू चकोर चितै हित पीवत अधीरन धीरें धीरें।।
उमगि मिलत अनुराग नवल वर कल कुंडल चल बीरें बीरें।
(श्री) बिहारिनिदास सुरझत नहिं तन मन अरूझि अरून पट पीरें पीरें।।८।।

झूलन के पद

श्रीस्वामीजू कौ पद- संध्या समय राग-मल्हार, ताल-धमार

हिंडोरैं (अब) झूलत लाल दिन दूलहु दुलहिन बिहारिन देखौ री ललना।
गौर - स्याम छबि अति दुति बहुभाँति री बलना।।
नीलाम्बर पीताम्बर अञ्चल चलत धुजा फहरात कलना।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुञ्जबिहारी बिहारनि अबिचलना।।१।।

श्रीगुरूदेवजू के पद-

हिंडोरैं (अब) झूलन आई नई ऋतु सावन तीज सुहाई। कुञ्ज कुञ्ज तें निकसि हरी भूमि अरून बरन मानौं चन्द्र बधू सी श्रीस्यामाजू हरषि बुलाई।। अपनें अपनें मेल मिलीं अनुराग मल्हारहिं गावतताननि रूचि उपजाई। श्रीबिहारिनदास स्वामिनी स्याम के संग बाढयौ रँग अँग अँग रीझ रिझाई।।२।।

श्रीगुरूदेवजू कौ पद- राग-मल्हार, ताल-चौताल

हरियारो सावन सुहावनौं मन भावनो लागत अति नीकौ। इन उन बन में बदरन की छहियाँ गहि बहियाँ बोलत डोलत बन

बन तैसोई संग सबही कौ।। जहाँ तहाँ झूलावत झूलत जुगल नवल रीझि रिझावत आवत अनुराग भरि राग रंग प्यारी पी कौ। श्रीबिचित्र-बिहारिनदासि कहति दरसत जे यह सुख दिन धन्य धन्य भाग त्रिया तिनही कौ।।३।।

रस भरे प्रान प्रिया पिय झूलत फूलत अँग सँग सरस हिंडौरैं।
अति आतुर आसक्त भये बस भृकुटि कटाक्ष झकोरैं।।
छूट टूट गये हार बार बन्द छोरत छबि बहु भाँति लिहोरैं।
श्रीबिहारिनदासि सुख देख निरंतर पिय प्यारी यों हँसि मुख सौंमुख जोरैं।।४।।

श्रीस्वामी नागरीदेवजू कौ पद- राग-भैरवी, ताल-तिताल

अपनी जू नवल प्रिया सँग नवल हिंडोरैं लाल झूलत हैं।
जै श्रीवृन्दावन घन सहज सोभा आनंदसिंधु न थोर।
जहाँ सुभग जमुना कूल कमल जू सारस हंस चकोर।।
बोलत मधुर सुहावने अति मधुप कलरव घोर।
नवकुञ्ज कोकिल कीर चात्रिक गावत जस चहुँ ओर।।१।।

तैसिये पावस ऋतु भली घन मंद गरजन घोर।
तैसिये दामिनि धनुष चहुँदिसि बोलत मोरी मोर।।
तैसिये भूमि सुहावनी सखी हरित नाना भाँति।
रही अति छबि छाइ जित तित चन्द्रबधुन की पाँति।।२।।

नव लता ललित तमाल पल्लव बिबिध नाना जाति।
अति प्रेम भरि अनुराग झूमी फूल फल बहु काँति।।
रचित कुसुम बितान नाना बहत त्रिबिध समीर।
निरखि संपति बिबस ह्वै मन बढ़त मनसिज पीर।।३।।

तहाँ सच्यौ है रंग हिंडोरना सखी सहज चंपक कुंज।
नव केलि नाना सुखद संपति सरस सौरभ पुंज।।
रमकि झूलैं नवल दोऊ गौर साँवल गात।
पीत पट छबि सुरँग सारी अचंल धुजा फहरात।।४।।

सप्तसुर मिलि मधुर दोऊ करत है गुनगान।
तैसिये सहचरि संग गावति संच सुर बंधान।।
राग रागिनि मिले प्यारी लेत विकट सुर तान।
सुनि थाकित नागर चरन गहि सखि रीझ बारत प्रान।।५।।

बढ़त अति अनुराग छिन छिन करत नव नित रंग।
यह सुरति सागर मधुर जोरी सहज प्रेम (संग) अभंग।।
तैसिये सुखद बिहार स्वामिनी दासि नागरि संग।
तोरि तृन बलि जाय छबि पर बारति कोटि अनंग।।६।।५।।

श्रीस्वामी भगवतरसिकदेवजू कौ पद- ताल-रूपक

प्यारी राधे सावन मन भावन भयौ चलि सुरति हिंडोरैं झूल।।१।।
प्यारी राधे माथे मुकुट सुहावनौं अरू नाचत सिखर चढ़ि मोर।।२।।
प्यारी राधे घन गरजत मुरली बजै अरू दामिनि मुरि मुरिक्याति।।३।।
प्यारी राधे बचन रचन कल कोकिला अरू मुक्तावलि बग पाँति।।४।।
प्यारी राधे स्याम घटा तन अति बन्यौ अरू इन्द्रधनुष बनमाल।।५।।
प्यारी राधे छूटे कच टूटे धुरा अरू दादुर मृदु मञ्जीर।।६।।
प्यारी राधे अरून बसन बादर कसे अरू अनुकूली बर साँझ।।७।।
प्यारी राधे हरित भूमि हरषी हषी अरू इन्द्रबधु अवतंस।।८।।
प्यारी राधे नवल नेह उलही लता अरू किसलय दल पद पान।।६।।

प्यारी राधे संतत आस बिलास की अरू चलत पवन झकझोर।।१०।।
प्यारी राधे प्रेम पुलकि रस बर्षहीं अरू सरसत सरित अनंग।।११।।
प्यारी राधे भगवत उर सरवर भर्‍यौं अरू फूले दृग जलजात।।१२।।
(प्यारी राधे झूलत बिहारी प्यारी रसभरे अरू छबि की उठत तरंग।।१३।।
प्यारी राधे गौर स्याम तन अति बन्यौ अरू भूषन बसन सुरंग।।१४।।
प्यारी राधे श्रीवृन्दावन रस झूमही श्रीयमुना लेत हिलोर।।१५।।६।।)

श्रीस्वामी सरसदेवजू के पद-　　राग-मल्हार, ताल-चौताल

झूलत दोऊ नवल हिंडोलैं।
बिमल पुलिन कल कमल कुञ्ज मधि चितवत नैन सलोलैं।।
जोवन जोर इकोरनि देत आलिंगन करत कलोलैं।
श्रीसरसदास सुखरासि रहसि नव सुनत मधुर मृदु बोलैं।।७।।

झूलत फूलत सुरति हिंडोरैं।
पुलकि पुलकि किलकत हिलिमिलि नव जोवन जोर झकोरैं।।
छूटी लट पट सिथिल भये अँग अंग अनंग निहोरैं।
रहसत बिहँसत मिलत परस्पर उर कर चिबुक टटोरैं।।
अति रस भरे (ढरे) खरे डाँडी गहि निरखत बिबि मुख ओरैं।
श्रीसरसदास दरसत बिलास नित अति चञ्चल चितचोरैं।।८।।

श्रीस्वामी रसिकदेवजू कौ पद-　　राग-मारू, ताल-धमार

हिंडोरें झूलत तन सुकुमार।
पुलकि पुलकि राधे उर लगात प्रीतम प्रान अधार।।
भाये बसन सजे मनसिज के उर बर हार सुढार।
सुख में झूलति कुँवरि लाड़िली रमकत स्याम उदार।।
जुगल रूप अनूप बिराजत मनमथ भेद अपार।
श्रीरसिकबिहारी की छबि निरखत खरे (हैं) कुञ्ज के द्वार।।६।।

श्रीस्वामी नागरीदेवजू कौ पद- ताल-धमार

(सुएरी माई) झूलत ललना लाल हिंडोरैं राजैं सुभग स्याम तन गोरैं।
अँग अँग हरषत सुख बरषत मिलि मन करषत नैननि सों नैना जोरैं।।
उपजत मौज मनोज चोज रति सुरति रंग (रस उमँग्यौ) दुहुँ ओरैं।
श्रीनागरीदासबलिबिचित्र बिहारिनदासिमिलेंसुख बिहरत जुगलकिसोरैं।।१०।।

ताल-धमार

हिंडोरा हेली रंग रह्यो सरसाइ, राजी मैं तो वारीजी वारी हों छबि देखि।
झोटनि में झुकि झूमि रह्यौ पिया प्यारीजी रो रूप लुभाइ।।
तन भीजैं तरूवर चुवैं हो गलबहियाँ लपटाइ।
रसिकबिहारीजी रौ झूलनौजी म्हारै मन में झोटा खाइ।।११।।

श्रीस्वामी पीताम्बरदेवजू कौ पद-

यह रस रंग हिंडोर सहचरि हरियल सुही सुहाग लहरिया।
पहिरैं बसन सुरंग दुलहिनी कञ्चन नील निचोल गहरिया।।
दूलह घन दामिनि लपटाने तन मन सजि पट पीत पहरिया।
सहचरि रसिक देखि छबि ढाँपत पीताम्बर जुग रूप ठहरिया।।१२।।
बिहारी नेक धीरें झूलौ राज स्यामा प्यारी झूलें छैं थारेलार।
घन रमकन म्हारौ जिया लरजे छै ये छै अति सुकुमार।।
लचकत मचकत रंग हिंडोरैं भूषन लागैं भार।
मद छक छैला श्रीरसिकबिहारी नैना अतिसै रसाल।।१३।।

श्रीस्वामी ललिताकिशोरीदेवजू कौ पद-

रँगीले दोऊ झूलत सुरत हिंडोरें।
फूल फूल आनंद बढ़ावत निरखि रहत प्रिय ओरें।।
श्रीकुञ्जबिहारिन प्रान प्रान मिलि मुसिकत हैं मुख मोरें।
श्रीहरिदासी के रसमाते सुख कौ सिंधु झकोरैं।।१४।।

श्रीस्वामी पीताम्बरदेवजू कौ पद-

आजु तो झूलैं री दोऊ नवल हिंडोरना।
स्याम सधन घन दामिनि सों कीनौं पन जब तुम कौधौं प्यारी तब हम घोरना।। झुलावैं श्रीहरिदास दुलारी झूलैं दोऊ श्रीकुञ्जबिहारी सरस सुखनि कौ एरी ओर न छोरना। श्रीरसिकबिहारीजू थाके प्यारीजू के रसमाते पीताम्बर ओढ़ाय लैरी प्यारी करत निहोरना ।।१५।।

श्रीस्वामी ललितमोहिनीदेवजू कौ पद-

रंग हिंडोरना री झूलत लाड़िली पिय के संग।
मंद मंद झूलत फूलत दोऊ पहिरें बसन सुरंग।
अंग अंग हरषत सुख वरषत छबि की उठत तरंग।।
सुख में झूलति कुँवरि किसोरी भरि भरि लेत उछंग।
श्रीललितमोहिनी प्यारी पिय की निरखत केलि अभंग।।१६।।

श्रीस्वामी भगवतरसिकदेवजू के पद- राग-मल्हार, ताल-तिताल

ललना लाल हिंडोरें झूलैं।
सावन में मन भावन मन की मन भावन करि फूलैं।।
नीरद नवल नाहु उर ऊपर दामिनि भामिनी भूलैं।
भगवतरसिक झुलावत गावत गहि डाँड़ी भुज मूलैं।।१७।।

झूलैं दोऊ नव निकुञ्ज मधि ठाढ़े।
झोटा देत गहे भुज डाँड़ी अंग अनंगनि बाढ़े।।
नवसत साजि सिंगार सहचरि भूषन ग्यारह साढ़े।
भवतरसिक प्रेम परिपूरन देत आलिंगन गाढ़े।।१८।।

मेरी अलकलड़ी अलबेली।
झूलत रति बिपरीत हिंडोरैं नाहु अंस भुज मेली।।

मचकत जोबन जोर परस्पर परिरंभन पग पेली।
गावत राग मल्हार मनोहर भगवतरसिक सहेली।।१६।।

श्रीस्वामी बीठलविपुलदेवजू कौ पद-

आवत लाड़िली लाल फूले।
कुञ्ज केलि नवरंग बिहारी सुरति हिंडोरैं झूले।।८
निसि जागे अलसात रगमगे पट पलटे गति भूले।
श्रीबीठलबिपुल पुलकि ललितादिक दिन देखत द्रुम मूले।।२०।।

श्रीगुरूदेवजू कौ पद-

प्यारी झूलत अति रसमाती।
पिय के अंक निसंक हिंडोरैं लटकि लपटि लड़काती।।
पुलकि पुलकि प्रीतम उर लगात अतिरस रसिक (न) अघाती।
श्रीबिहारीबिहारिनिदास रहसि रस बिपुन अँग संग समाती।।२६।।

श्रीस्वामी पीताम्बरदेवजू कौ पद-

सावन आयो री हिंडोरैं झूलैं।
कहत प्रियाजू सों स्याम निरन्तर रीझि रीझि मन फूलैं।।
सुनि सुकुमार निवार सिंगार बसन हिय हूलैं।
(श्री) पीताम्बर पिय बोल सहचरी रसिक सखी अनुकूलैं।।२२।।

श्रीस्वामी ललितमोहिनीदेवजू कौ पद-   राग-मल्हार, ताल-धमार

उमँगि उमँगि आये चहुँ दिसि बदरा स्याम घटा अनंग भरे।
लड़ित चमकति रूप सुधा भरि बन सोभा सब हरे हरे।।
रंग हिंडोरैं झूलत दोऊ चकित होइ सखी ठाँन ठने।
(श्री) ललितमोहिनी सुख बरषावति गावति अति आनन्द भरे।।२३।।

श्रीस्वामी किशोरदासजू के पद- राग-मल्हार, ताल-धमार

प्रीतम प्यारी अंक निसंग सुखद हिंडोरना दोऊ झूलत हैं।
उदित वृन्दावन बिराजत मुदित द्रुम दल बेलि।
नव लता ललित सुकुसुम फल अलि रहै नवरस झेलि।।१।।
करि गान सुघर सुजान हित चित सुगति तान सकेलि।
मंजु गुंज सुनाइ रिझवत सुघर नवल नवेलि।।२।।
स्याम बरन सु तरनि तनया हरन मन सुख देत।
स्याम बाम सुधाम बसत सकाम रस जस हेत।।३।।
विविध रंग अनंग जुत चित बहत सुहि रस खेत।
मिलि चलत अति अलप गति नव ललित नलिनि समेत।।४।।
हेम वर सम तरनि थर नग जरित ढार सुढार।
किसलय दलनि सुनीलमनि मृदु नवल जोति अपार।।५।।
सुच्छ गुच्छ प्रवाल सम नमि रहै कुसुम सुचार।
सेवत लखि सुख मदन घन मन कदन बन आगार।।६।।
पावस रितु अति अमित गति लखि हरषि बोलत मोर।
दमकि दाँमिनी चपल चमकति करत कल घनघोर।।७।।
परसि सौरभ पवन गुनि सुनि मन सु उठति झकोर।
निरखि संपति हरषि दंपति रच्यौ सुरति हिंडोर।।८।।
गौर - स्याम सुठाम झूलत फूलत सरस सरूप।
पीवत अधर सुधा महा मद मत्त रहत अनूप।।९।।
लेत झौंटा देत दुहुँ दिसि रसिक गन मनि भूप।
भयौ परम हुलास श्रीहरिदास सुख सरबूप।।१०।।
नैंन सैंननि हरन मन मनसिज सरनि अनियार।
गहि करनि डाँड़ी तरन तरनी उरनि उर दरिमार।।११।।

संग रहत आनंद कंद नित आनन्द परम उदार ।
परम रस की रासि दासि किसोर बिबि सुकुमार ।।१२।।२४।।
भींजत मोहनी मोहन हरषि हिंडोरना दोऊ झूलत हैं ।
मधुर मत्त मनोज मन मकरन्द लेत सुछन्द ।
द्रुम दलनि बेलि नबेलि नव रस लटकी लिपटनि मन्द ।।१।।
झुकि जात आत डरात बातनि करत कोमल फन्द ।
गहि लेत डाँडी तरनि कर उर अरत आनँद कन्द ।।२।।
सुवन वन गुन गननि गावत वरनि वर सुख पात ।
मुदित मधुकर मदन मादिक मिलत मन न अघात ।।३।।
मरूत मन्द सुगन्ध सीतल सुखद मुख रूख गात ।
डगमगत दुम श्रम समन करनि पराग परसि गिरात ।।४।।
जुवति जूथनि जुरि परस्पर झूलि झुकनि झुलात ।
पिय प्रेम गाथा गात सकुचि डरात फिरि तुतरात ।।५।।
नैन ब्रीड़त करत क्रीड़ा मैंन मन न समात ।
निसि भोर दासकिसोर बिबि बनि वन विविध बिलसात ।।६।।२५।।

श्रीस्वामी पीताम्बरदेवजू कौ पद-

सुनि झूलि झूलनारी मेरा ।
नील कलेवर चम्पक वरनी उपमा मिलत न हेरा ।।
ज्यौं गरजै त्यौंही रस बरसै और न कोऊ नेरा ।
श्रीरसिक बिहार करत यौं कहियै पीताम्बर वर तेरा ।।२६।।

श्रीस्वामी ललितकिशोरीदेवजू कौ पद-

श्रीनिधिवनराज में फूल महल दोऊ फूले ।
काम केलि आतुर दोऊ प्रीतम अँग अँग अनुकूले ।।

हाव भाव आलिंगन चुम्बन गाढ़े गहि भुज मूले ।
श्रीललितकिसोरी हरषि हिंडोरैं नाभि कमलमधि झूले ।।२७।।

श्रीस्वामी रूपसखीजू का पद-

लाड़िली लाल हिंडोरैं झूलैं ।
अँग अँग मिलि अद्भुत झौंटा इह सुख कबहुँ न भूलैं।।
दृग जौरैं मुसिकात परस्पर दरसि नाभि भुज मूलैं ।
गौर - स्याम अभिराम मनोहर एक बैस सम तूलैं ।।
त्रिविध समीर नीरवर बरषैं बचन रचन अनुकूलैं ।
श्रीरसिक रूप नित श्रीहरिदासी विपुलबिहारिनि फूलैं ।।२८।।

श्रीस्वामी पीताम्बरदेवजू के पद-

लाल हिंडोरैं मौज बनी ।
डाड़ी पकरि चढ़त पटुली पर पलनैं लाल मनी ।।
अरून किरन तरूनी तन आभा रंग सुरंग सनी ।
श्रीपीताम्बर लखि रसिक स्वामिनी रीझत धन्य धनी ।।२९।।

लाल हिंडोरैं तीज बनी ।
दूलह स्याम सखी सुख झूलत फूलत तरकि तनी ।।
तन सुरंग पटुली जटित मनि मृदु रसरीति सनी ।
श्रीपीताम्बर उर परसि रसिकनी बकसत मौज घनी ।।३०।।

❋

श्रीस्वामी सरसदेवजू महाराज कौ प्रकछ्य-महोत्सव : शरद् पूर्णिमा

प्रथम दिवस

रसभीने बिहारी मन हरयौ । (पृष्ठ १६ पर देखें)

द्वितीय दिवस

हो हो रँगीली नागरी । (पृष्ठ २० पर देखें)

तृतीय दिवस

स्यामा नागरी हो प्रबीन । (पृष्ट २१ पर देखें)

चतुर्थ दिवस

श्रीस्वामीजू के पद- सन्ध्या समय रास के पद राम-केदारौ, ताल-चौताल

सुनि धुनि मुरली बन बाजै हरि रास रच्यौ ।
कुञ्ज कुञ्ज द्रुमबेलि प्रफुल्लित मंडल कञ्चन मनिन खच्यौ ।
नृत्तत जुगलकिसोर जुवतिजन मन मिलि राग केदारौ मच्यौ।।
श्रीहरिदास केस्वामी स्यामाकुञ्जबिहारी नीकेरी आजु प्यारौ लाल नच्यौ।।१।।

जहाँ तहाँ चरन परत प्यारीजू तेरे तहाँ तहाँ मन मेरौ करत फिरत परछाहीं। बहुत मूरति मेरी चँवर ढुरावत कोऊ बीरी खवावत एकव आरसी लै जाहीं ।। और सेवा बहुत भाँतिन की जैसीये कहैं कोऊ तैसीये करौं ज्यौं रूचि जानौ जाहीं। श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कौ भलें मनावत दाव उपाहीं।।२।।

यह कौन बात जू अबहीं और अबहीं और (अबहीं औरैं)। देवनारी नागनारि और नारि तें न होहिं और की औरैं।। पाछे ना सुनीं अबहुँ आगे हूँ ना ह्वै हैं यह गति अद्भुत रूप की और की औरैं। श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुञ्जबिहरी या रस ही बस भये यह भई और की औरै।।३।।

बनी री चारि चारि चूरी करनि ।
कंठसिरी दुलरी हीरन की नासा मुक्ता ढरनि ।।
तैसोई नैंननि कजरा फबि रह्यौ निरखि काम (जिय) डरनि।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामाकुञ्जबिहारी रीझि रीझि पग परनि।।४।।

कुञ्जबिहारी नाचत नीके श्रीलाड़िली नचावत नीके ।
औघर ताल धरैं श्रीस्यामा ताताथेई ताथेई बोलत संग पीके।।
तांडव लास और अंग को गनै जे जे रूचि उपजत जीके।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कौ मेरूसरस भयौ और रस गुनी परे फीके।।५।।

श्रीस्वामी बीठलविपुलदेवजू के पद-　　　　　　　　　　राग-केदारौ, ताल-धमार

नव बन नव निकुञ्ज नव बाला ।
नव रँग रसिक रसीलौ मोहन बिलसत कुञ्जबिहारी लाला।।
नव मराल जित धरत अवनि पग कूजित नूपुर किंकिनि जाला।
श्रीबीठलबिपुलबिहारी के उर यौं राजति जैसे चम्पे की माला।।६।।

नव निकुञ्ज नव भूमि रगमगी ।
नवल बिहारीलाल लाड़िलौ नवल सरदकी जौन्ह जगमगी।।
नव सत साजि सकल अंग सुन्दरि नवल बदन पर अलग सगबगी।
श्रीबीठलविपुल बिहारी के अंग लाड़ति लाड़िली सहज उर लगी।।७।।

ताल-चर्चरी

श्रीस्वामी नागरीदेजू कौ पद-

रसिक रसिकनी किसोर निर्त्तत रंग भीने ।
गौर सुभग स्याम तनै नटवर वपु वेष बनै तत्त ठुमक थेई थेई उघटत गति लीने ।। कोक संगीत सुघर गावत सुख सर्वोपरि तान तिरप लेत प्यारी पहिरें पट झीनें। अधर दसन दुति प्रकास

अलक झलक भुव बिलास तार सुरन चोरत चित नवल नेह नवीनें।। रीझि रवन मोहि रहे धाइ चपल चरन गहे लये लाल ललना हँसि अंस बहु दीने। दासि श्रीनागरि नवेलि नागर मिलि करत केलि आनन्द रस झेलि खेलि पूरन प्रेम प्रवीने।।८।।

श्रीस्वामी सरसदेजू कौ पद- राग-पर्ज, ताल-धीमा तिताल

निरतत रसभरे रसिकबिहारी ।
तान तिरप गति भेद अनागति घात लेति सुकुमारी।।
थेई थेई करत धरत पग चञ्चल उपजत नूपुर रव झनकारी।
गावत कटि लटकावत नैन नचावत प्रीतम प्यारी ।।
मृदगं तार सुर सप्त सञ्च मिलि तैसिये छिटकि रही उजियारी।
कोककला कल केलि झेलि रस क्रीड़त कुँवरि दुलारी ।।
द्रुम बेली फूली सुख बरषत चंपक बकुल गुलाब निवारी।
करत बिनोद बिपिन मन भाये श्रीसरसदास बलिहारी ।।९।।

श्रीगुरूदेवजू के पद- राग-विहाग, ताल-अद्धा तिताल

जोरी अद्‌भुत आज बनी ।
बारौं कोटि काम नख छबि पर उज्ज्वल नील मनी।।
उपमा देत सकुचि निरउपमित घन दामिनि लजनी ।
करत हास परिहास प्रेम जुत सरस बिलास सनी ।।
कहा री कहौं लावन्य रूप गुन सोभा सहस घनी ।
श्रीबिहारिनदास दुलरावत श्रीहरिदास कृपा बरनी ।।१०।।
देखि देखि मुख जीवत यों सुख मानत हैं रसरंगी ।
कबहुँ कोमल कर सों बंद छोरत कंचुकी कसन सुरंगी।।
नई नई प्रीति प्रतीत प्रियाजू सों नई रूचि चौंप सुचंगी।
श्रीबिहारिनदास की स्वामिनी स्याम नचावत होत तृभंगी।।११।।

श्रीस्वामी, सरसदेवजू कौ पद-

राजत नव निकुञ्ज नव जोरी ।
सुन्दर स्याम रसीले अँग अँग नवल कुँवरि तन गोरी।।
बदन माधुरी मदन सदन सुख सागर नागरि कुँवरकिसोरी
श्रीसरसदास नैननि सचु पावत कौतिक निपट नयौ री।।१२।।

श्रीस्वामी नरहरिदेवजु कौ पद-

खेलत रास लाड़िली लाल ।
तान गान गुन सिखवति प्यारी तहाँ न कोऊ बाल ।।
ताल मृदंग संगीत बिधि उघटत भूषन बजत रसाल ।
उरप तिरप लै नचति सुलप गति उपजत सुख के जाल।।
केलि कला रस बरषत हरषत परसत प्रेम बिसाल ।
श्रीनरहरिहरिदासि निकट सुख निरखत स्याम सुभग उर माल।।१३।।

श्रीस्वामी भगवतरसिकदेवजू कौ पद- राग-बहार सुघराई कान्हरौ, ताल-तिताला

नाचत दोऊ रहसि में संग भीने ।
हाव भाव उपजत अंग अंगनि कोककला मन दीने ।।
बाजत मधुर मृदंग किंकनी नूपुर ताल नवीने ।
होड़ा होड़ी तान तिरप गति लेत नहीं कोऊ हीने ।।
राकारति रजनी कर आनन उदित मदन बस कीने ।
रीझि रीझि भगवत की स्वामिनि लाल अंक भरि लीने।।१४।।

ताल-चौताल

श्रीस्वामीजू कौ पद-

अद्‌भुत गति उपजत अति नृर्त्तत दोऊ मंडल कुँवर किसोरी।
सकल सुधंग अंग भरि भोरी पिय निर्त्तत मुसकनि मुख मोरी
परिरंभन रस रोरी।। ताल धरैं बनिता मृदंग चन्द्रागति घात बजे
थोरी थोरी। सप्तभाइ भाषा विचित्र ललित गायन चित चोरी।।

श्रीवृन्दावन फूलनि फूल्यौ पूरन ससि त्रिविध पवन बहै थोरी थोरी। गति बिलास रस हास परस्पर भूतल अद्‌भुत जोरी।। श्रीजमुना जल बिथकित पुहुपनि बरषा रतिपति डारत तृन तोरी। श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुञ्जबिहारी कौ रस रसना कहै कोरी ।।१५।।

श्रीगुरूदेवजू कौ पद- राग-विहाग, ताल-अद्धा तिताला

राजत रास रसिक रस रासै ।
आस पास जुवती मुख मंडल मिलि फूली कमला से।।
मध्य मराल मिथुन मन मोहन चितवत आतुरता से ।
बचन रचन सुर सप्त नृत्य गति मदन मंयक विकासै।।
बाजत ताल मृदंग अंग संग मंद मधुर मृदु हासै ।
घूँघट मुकुट अटक लटकत नट अभिनव भृकुटि बिलासै।।
वारत कुसुम सुगन्ध देखि सखि आनंद हिये हुलासै ।
तृन तोरति रति जोरत छिन छिन बिपुल बिहारिनदासै।।१६।।

ताल-चर्चरी

रास रावनी रवन रसिक नवरंगी ।
बिपिन भूतलप नहिं अल्प मंडल रचित सुरति निर्तत उदित मुदित अँग संगी ।।१।। सभा कल कुञ्ज सुखपुञ्ज संपति सहित सघन मनि दीप्त बन कुसुमित सुरंगी। कहूँ भृंगी कहूँ मृगी कौतिक कहूँ नैंन सैंननि बिना बैंननि बिहंगी।।२।। ससिहिं भूल्यौं भवन गवन जमुना रहे मनु वारि अनुरागनि अभंगी। तहाँ नहीं कछु श्रम तम न गम विरह भ्रम मान लवलेस प्रवेस न प्रसंगी।।३।। बिमल गोरे गात मनहु निसि गत प्रात आई ऊभी भई उरजनि उतंगी। सकल सुख साधि आराधि राधा गुरै धरति

पग चपल साँवल तन त्रिभंगी।।४।। शब्द रसनावली ताल नीबीबन्द बलय बाजत मृदंग नूपुर उपंगी। रेख परमान अति जान सन्मुख सुलप मिलि चलत लटकि गति ग्रीव भ्रूभंगी।।५।। कोक संगीत अवघर सुघर लाड़िली अलग लागन लेत अनगति अनंगी। उपजि औरैं और रसिकवर सिरमौर रीझि रहे गहि ठौर सरस अंग अंगी।।६।। तहाँ सखी संखल निमेष अंकुस सकुच जीत गज वरैं मानौं मिलि मन मद मतंगी। बहुरि प्रिया पिय बिहँसत हँसत प्रेम घन भये मन मगन तन तरलित तरंगी।।७।। श्रीहरिदासी खरी विपुल प्रेमनि भरी मननि लै अनुसरी अंकनि उछंगी। जै श्रीवरबिहारिनदासि कहत सुख सार सुजसु त्रैलोक सर्वोपरि सुमंगी।।८।।१७।।

※

श्रीस्वामी नरहरिदेवजू महाराज कौ प्राकट्य-महोत्सव : ज्येष्ठा कृष्ण 2

प्रथम दिवस

निकुञ्ज बिराजये जू (पृष्ठ ७ पर देखे)

द्वितीय दिवस

रसभीने बिहारी मन हस्यौ (पृष्ठ १६ पर देखें)

तृतीय दिवस

स्यामा नागरी हो प्रवीन (पृष्ठ २१ पर देखें)

चतुर्थ दिवस

मोहन मोहनी सुहेलरा गाऊ (पृष्ठ ११ पर देखें)

पंचम दिवस

श्रीगुरूदेवजू कौ पद- रागबिलाबल, मूलताल

मनुहारि करैं मनुहार लला।

श्रीराधा आराधि लला। यह निजु नेम आराधि लला।।१।।
प्रेम करौ जिन बादि लला। पिय पग परसन की साधि लला।।२।।
सुनि सुन्दरि सुकुँवारि लला। मानिनि मान निवारि लला।।३।।❖
बिनु अपराध न गारि लला। कोमल करहिं न टारि लला।।४।।
नैन चलै च्वै वारि लला। पिय की प्रीति बिचारि लला।।५।।
हौं तन तन धन दैहौं वारि लला। मम बचननि प्रतिपारि लला।।६।।
इती करत कित आरि लला। अपने सुखहिं सँभारि लला।।७।।
इहि रस मन अनुसारि लला। हौं आई सेज सँवारि लला।।८।।
नव निकुञ्ज पग धारि लला। प्रीतम मुखहिं निहारि लला।।९।।
सुन्दरि मुरि मुसिकाइ लला। स्याम सखी सुख पाइ लला।।१०।।

श्रीगुरूदेवजू कौ पद- राग-पर्ज, ताल-धीमा तिताला

❖ हो नेक मानिनी मान निवारिये।

यहै जानि जिय मान सयानी हो आई हौं समझि सँवारियै।।
रूचि रूचिर नव कुञ्ज कुसुम तर सुरति सु समयौ सम्हारियै।
बिरह जु स्याम अधीर पीर अति आतुर पिय अँकवारियै।।
मिलि रस रंग अंग अंग पिय संग सरस कुसुम सुकुमारियै।
श्रीबिहारिनदास सुख निरखि हरषि तृन तोरि प्रान धन वारियै।।

अद्‌भुत उक्ति उपाइ लला। इक कौतिक देखैं आइलला।।११।।
बतरस लीनी लाइ लला। फूली अंग न माइ लला।।१२।।
उदित मुदित मन माहिंलला। चली अली गहि बाँह लला।।१३।।
नव दल सीतल छाँह लला। आपु निहारी नाहु लला।।१४।।
ललित बलित द्रुम बेलि लला। सबै सँवारत केलि लला।।१५।।
बढ़्‌ययौ मदन मद मोद लला। बीथी बिपुन बनोद लला।।१६।।
रबितनया के तीर लला। कोमल मलय समीर लला।।१७।।
अति आसक्त अधीर लला। बिनय निबारत चीर लला।।१८।।
चितवत बिबि मुख ओर लला। लोचन चारू चकोर लला।।१६।।
नित ही नवल किसोर लला। दोऊ नव जोवन जोर लला।।२०।।
मिलि मेंटी पिय की पीर लला। बिहरत प्रेम गंभीर लला।।२१।।
मिलि बिलसत निसि भोर लला। मेरे चित के चोर लला।।२२।।
छिन छिन पद प्रतिकूल लला। स्याम सहज अनुकूल लला।।२३।।
दै आलिंगन दान लला। मानिनि के धन मान लला।।२४।।
दै अधरामृत पान लला। पालि प्रिया मम प्रान लला।।२५।।
अब जिन करहु निदान लला। सतरभौंह अपमान लला।।२६।।
गौरस्याम कौ संग लला। देखि दुहुन कौ रंग लला।।२७।।
रतिपति की गति पंग लला। मन अनुराग अभंग लला।।२८।।
इहि रस बस सुखरासि लला। जस गाइ बिहारिनदासि लला।।२६।।

ज्येष्ठ कृष्णा २ को रात्रि में जागरण

ज्येष्ठ कृष्णा तृतीय : प्रातकाल

झूमका (पृष्ठ २७ पर देखें)

श्रीस्वामी रसिकदेवजू महाराज कौ पाकट्य-महोत्सव : माघ शुक्ला 5

प्रथम दिवस

श्रीस्वामीजू कौ पद-

राग-बसन्त, ताल-धमार

कुञ्जबिहारी कौ बसन्त सखि चलहु न देखन जाहिं।
नव बन नव निकुञ्ज नव पल्लव नव जुवतिन मिलि माहिं।।
बंसी सरस मधुर धुनि सुनियत फूली अंगन माहिं।
सुनि श्रीहरिदास प्रेम सौं प्रेमहिं छिरकत छैल छुवाहिं।।१।।

श्रीगुरूदेवजू कौ पद-

राग-गौरी, ताल-धमार

श्रीकुञ्जबिहारी हरषि बुलाई ह्याँ जो होड़ी हेली री।
काज करौ निजु आज हमारौ तू मेरी सुखद सहेली री।।१।।
खेलत हे इक ठौर भोर मैं पूछी प्रेम पहेली री।
घाल मिलावो माँगत मत भई झुकि नेह नवेली री।।२।।
हारी होड़ न देति लाड़िली छाँड़ि चली अवहेली री।
बैठी है मान गंभीर कुञ्ज नबजोवन गर्व गहेली री।।३।।
मेरे मन रूचि राचि रही मोसों काल्हि भली बिधि खेली री।
मेरी इनकी जानत है सब तू मन मतै महेली री।।४।।
बचन रचन सुनि चलि सहचरी (कैं) आतुर तन तलबेली री।
भोरे भाई आइ ढ़िंग बैठी जानत गटी गवेली री।।५।।
देखि अनमनैं स्याम सखी सँग सुमिरि समौ कल केली री।
हारि मानि निज नाहु भये बस अंस बाहु हँसि मेरी री।।६।।
मेंटी रोंट अटक नटवर भेंटत भरि भुजनि सकेली री।
उमड़ि चले मन मदन मनोहर मान मेंड़ पग पेली री।।७।।

मूलताल - स्याम तमाल रसाल लाड़िली गौर बरन बर बेली री।
कुञ्ज मंजु बर्षत पुहुपांजलि चंप गुलाब चमेली री।।८।।
श्रीबिहारी बिहारिनदासि मिले सुखरासि रसिक रस झेली री।
रीझै देत दुलहिनी दूलहु फूलौं प्रेमसहेली री।।६।।

द्वितीय दिवस

श्रीस्वामीजू कौ पद-

चलि री भीर तें न्यारेई खेलैं। कुञ्ज निकुञ्ज मंजु में झेलैं।।
जहाँ पंछिन सहित सखी न संग कोऊ तिहि बन चलि मिलि केलैं।
श्रीहरिदास के स्वामी स्याम प्रेम परस्पर बूका बन्दन मेलैं।।१।।

श्रीगुरूदेवजू कौ पद-   राग-जैतश्री, ताल-मधार

तू ना करि मान मनोहर लाल लड़ावैगो।

छिन छिन मान अयान करहु न सयान समझि सुकुँवारी जू।
प्यारे पिय की पीर न जानत व्याकुल बिरह बिहारी जू।।१।।
आसन सैन सुहाइ न परस्यौ असन बसन कर बीरा जू।
दरस परस की आस अवधि बदि हौं आई दै धीरा जू।।२।।
सुन्दर सुघर उदार धीरवर होत बिलंव अधीरा जू।
बिनु श्रम हौं लै मिलऊ लालहिं और निपट पथ नीरा जू।।३।।
तनत हिये मन सुनत उठत भयौ मोहि अचंभौ भारी जू।
पिय तन पीठि दीठि मो तन हँसि पूछति कुँवरि कहाँरी जू।।४।।
पिय के अंग संग अनुराग रमित श्रम आलस केलि बिसारी जू।
सदा समीप सुहाग नयो नित तू कबहूं होत न न्यारी जू।।५।।
प्रेम अवधि तुव प्रानप्रिया सुनि मन संभ्रम उपजावै जू।
श्रवन सुनत नैनन देखत मुख बचन प्रतीत न आवै जू।।६।।

अंग अंग बसन दसन रसनवलि कटि तट चरननि चित्र बनावै जू।
कर कंकन दर्पन देखत मोहिं यहि कौतुक हँसि आवै जू।।७।।
मूलताल-सुनि सुनि समझि समझि सखि बैननि नैन सैन जिय जानी जू।
सुकुचति हँसति न चितवति इत उत लटकि लाल लपटानी जू।।८।।
मन कौ मन, मन के मन सौं मिलि मगन भये तन लीना जू।
रस में रिस, रिस में रस उपजत रसिक प्रवीन प्रवीना जू।।६।।
श्रीवृन्दाबिपिन बिलासनि बिलसत श्रीबिहारीदास पिय प्यारी जू।
रूठत तूठत सब सुख बूटत या रस की बलिहारी जू।।१०।।

तृतीय दिवस

श्रीस्वामीजू कौ पद-

अबकें बसन्त न्यारेई खेलैं काहू सौं मिलि न खेलैं री तेरी सौं।
दुचिते भये कछु न सचु पदयत तू काहू सखी सौं मिलि न तेरी सौं।।
देखैगी जो रँग उपजैगो परस्पर राग रागनीन के फेरा फेरी सौं।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुञ्जबिहारी राग ही में रंग उपजैगो एरी सौं।

श्रीस्वामी नागरीदेवजू कौ पद-

राग-मारू, ताल-धमार

जय श्री वृन्दावन बिराजैं, जहाँ नित बिहरैं श्रीरसिक राइ।।
झिलमिलि झिलमिलि आसपास श्रीजमुना अति सोहै।
मिलि खेलै दोउ जलाथला सखि देखि मेरौ मन मोहै।।१।।
सौरभ कन पुलिन रंग बिमल कमल फूले।
सारस हंस चकोर मोर मृदु कूजित कल कूले।।२।।
कुसुमित कल कुञ्ज लता बिबिध रंग फूली।
मत्त मुदित गुञ्जित अलि अवली फिरैं भूली।।३।।
बहै सीतल मन्द सुगन्ध पवन सुक पिक सुर गावैं।
सुनि श्रवन रवनी रवन मदन मोद बढ़ावैं।।४।।

बनी बीथी बिचित्र चित्रित धर प्रतिबिंबित झाई।
मंडल मनिमय मौजमहल मुक्तनि छबि छाई।।५।।
पुहुप बितानिनि झलमलै झरोखनि सहचरि दुलरावैं।
अति अद्भुत सुख सेज सरस लाड़िली लाल लड़ावैं।।६।।
गौर सुभग साँबल सखि अंग अंगनि राजैं।
पहिरें पट पीत अरून मौजनि छबि छाजैं।।७।।
बिलोकत बिबि बदननि छबि हँसि उर लागैं।
बचन रचन कहैं प्रियाजू सौं लाल यहै रति मागैं।।८।।
मूलताल-मन्द मन्द मधुरे मधुरे सप्त सुरनि गावैं।
तान तरंग भृकुटि भंग अँग अँग अनंग नचावैं।।६।।
दोउ रूप उदित प्रेम मुदित मत्त मननि कर्षैं।
गुन रीझि सुरति अँग अँग हरषि सुखनि बरषैं।।१०।।
श्रीकुञ्जबिहारी-बिहाररिनदासिन सुख संतत करति खवासी।
नव नव रति छिन छिन प्रति सुख निरखि नागरीदासी।।११।।

चतुर्थ दिवस

श्रीस्वामीजू कौ पद- राग-बसन्त, ताल-अद्धा तिताला

(ए) रहौ रहौ बिहारीजू मेरी आँखिन में बूका मेलत कित अन्तर होत मुख अवलोकनि कौं। और भाँवती तिहारी मिल्यौ चाहति मिस कें पैयाँ लागौ पन पन कौं।। गावत खेलत जो सुख उपजत सो तौ कोटि वर है तन कौं। श्रीहरिदास के स्वामी कौ मिलत खेलत कौ सुख कहाँ पाईयत ऐसौ सुख मन कौं।।

श्रीगुरूदेवजू कौ पद-

हो हो रँगीली नागरी (पृष्ठ ३० पर देखें)

पंचम दिवस

श्रीस्वामीजू कौ पद-   बसन्त के पद   राग-बसन्त, ताल- चौताल

कुच गडुवा जोवन मौर कंचुकी बसन ढाँपि लै राख्यौ बसंत।
गुन मन्दिर रूप बगीचा में बैठी है मुख लसंत ।।
कोटि काम लावन्य बिहारी जाहि देखत सब दुख नसंत ।
ऐसे रसिक श्रीहरिदास के स्वामी तिनकौं भरन आई मिलि हसंत ।।१।।

राग-बसन्त, ताल-धमार

कुञ्जबिहारी कौ बसन्त सखि चलहु न देखन जाहिं ।
नव बन नव निकुञ्ज नव पल्लव नव जुवतिन मिलि माहिं।।
बंसी सरस मधुर धुनि सुनियत फूली अंग न माहिं।
सुनि श्रीहरिदास प्रेम सौं प्रेमहिं छिरकत छैल छुवाहिं।।२।।
चलि री भीर तें न्यारेई खेलैं। कुञ्ज निकुञ्ज मंजु में झेलैं।।
जहाँ पंछिन सहित सखी न संग कोऊ तिहि बन चलि मिलि केलैं।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा प्रेम परस्पर बूका बन्दन मेलैं।।३।।
अबकें बसन्त न्यारेई खेलैं काहू सों मिलि न खेलैं री तेरी सौं।
दुचिते भये कछू न सचु पइयत तू काहू सखी सौं मिलि न मेरी सौं।।
देखैगी जो रँग उपजैगौ परस्पर राग रागनीन के फेरा फेरी सौं।
श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा कुञ्जबिहारी राग ही में संग उवजैगौ एरी सौं।।४।।

राग-बसन्त, ताल-अद्ध तिताला

(ए) रहौ रहौ बिहारीजू मेरी आँखिन में बूका मेलत कित अन्तर होत मुख अवलोकनि कौं। और भाँवती तिहारी मिल्यौ चाहति मिस कें पैयाँ लागौ पन पन कौं।। गावत खेलत जो सुख उपजत सो तौ कोटि वर है तन कौ। श्रीहरिदास के स्वामी कौ मिलत खेलत कौ सुख कहाँ पाइयत ऐसो सुख मन कौ।।५।।

श्रीगुरूदेवजू कौ पद- राग-हमीर बसन्त, ताल-धमार

जै श्रीवृन्दावन आनँद न अंत । तहाँ श्रीस्यामा सन्तत बसंत ।।
सब रितु रातु राजत रसिक संग। ताके सुखदायक सब अँग अंग ।।
उपजत तन अनन्त अनंग रंग । यों बिहरत अनुरागी अभंग ।।
नख सिख रस श्रीमंत मंत। सखी प्रेम पुलकि कामिनी कंत।
दोउ घन दामिनि ज्यों मिलि लसंत। हौं दिन दरसौं बिलसत हसंत।।
कनकलता कुसुमित रसाल। ताके लोभ सु अलि साँवल तमाल।।
जाके अधर बिंब सिंदूर भाल। भई बिपुल पुलक मनसा बिसाल।।
ललित बलित श्रीफल बिलास। जाके नव जौवन मंजरी सुवास।।
ताके अलक भृंग मधु गन्ध लोभ। अञ्चल चञ्चल चित छुवत छोभ।।
जंघ कदलि मृदु भुज मृणाल। ताके नीलोत्प लोचन गुलाल।।
ताकि चरन कमल कर कमल लाल। सखी प्रान जीवन मोहन मराल।।
मूलताल-रूचि रवनी कवनी किसोर। जानत नहिं निसि गत भये भोर।।
चितवत प्यारी बिधु बदन ओर। पिय पान करत लोचन चकोर।।
पुनि नाभि निरखि नागर गंभीर। अति ब्याकुल है बैठे अधीर।।
पुनि नीबीबंद अवलंब स्याम। सखी बचन, रचन रिझवत सकाम।।
आतुर चातुर अति बड़ बनोद। सखी रहसि बहसि मन मदन मोद।।
दोऊ चाहि रहे दृग दृष्टि जोर। छोरत छबि कर छंद बंद निहोर।।
सुख आलिंगन चुंबन मिलाप। कूजित कोकिल कोमल अलाप।।
हार टूटि कल बलय फूटि। गये कसन कंचुकी चिकुर छूटि।।
आली बाली बर बिमल वारि। सेवत सींचती सुख मुख निहारि।।६।।
दोऊ सकत न बिबस बसन सँमारि। श्री बिहारिनदसी हँसी हँसि सिंगारी।।
चौताल-बिहरत राजरितु बनराइ। जहाँ नित उदित नव नव भाइ।।

रूपक-सहज कुसुम समूह नख-सिख सुन्दरी सुखदाइ।
लाल अलि आसक्त सौरभ मिलि बिलसि बिलसाइ।।
अंगराग पराग रँगे अंग पिय पीयूषै प्याइ ।
मत्त घूमत नैन जुगवर सैन मैन नचाइ ।।
सहज सरद बसन्त रितु रतिपति लियें ललचाइ ।
देखि यह सुख जियें हम सब सुख दियें समुदाइ ।।
या रसै सेवत न नीरस सरस कुकवि कहाइ ।
सब रसन कौ राजरस या बिनु न हियौ सिराइ ।।
सुनि समझि उपदेस श्रीहरिदासि दिन दुलराइ ।
जै श्रीबरबिहारिदासि बिपुल विनोद विसदनि गाइ ।।७।।

श्रीस्वामी बीठलविपुलदेवजू के पद- राग-बसन्त, ताल-धमार

सजनी नव निकुञ्ज द्रुम फूले ।
अलिकुल संकुल करत कुलाहल सौरभ मनमथ मूले।।
हरषि हिंडोरे रसिकरासि बर जुगल परस्पर झूले ।
श्रीबीठलविपुल बिनोद देखि नभ देव विमाननि भूले।।८।।
जुगलकिसोर मेरे कुञ्जबिहारी प्यारी बन बिहार बिहरत नवरंगा।
अरून हरित मुकुलित द्रुम पल्लव अलिकुल गुञ्ज अनंग तरंगा।।
सोंधै बहुत अबीर अरगजा खेल परस्पर छिरकत अंगा।
श्रीबीठलबिपुल बिनोद रीति रस सुख देखत ललितादिक संगा।।६।।

श्रीगुरूदेवजू कौ पद-

आजु बसन्त बन्यो सखि बन में।
फूल सौं लाल लड़ाइ लाड़िली खेलति मत्त मदन में।।
मूलताल-फूली लता ललितादिक देखति फूल बढ़ी तन मन में।
फूल सौं दासिबिहारिन गावति फूल के सुख सदन में।।१०।।

श्रीस्वामी नागरीदेवजू कौ पद-

बिहरत बिपुल भरत रँग ढुरकी ।
हरषि गुलाल उड़ाइ लाड़िली संपति कुसुमाकर की ।।
कसूँभी सारी सौंधे भीनी ऊपर बन्दन भुरकी ।
चोली नील ललित अञ्चल चल झलक उजागर उर की।।
मूलताल-मृदुल सुहास तरल दृग कुंडल मुख अलकावलि रूरकी।
श्रीनागरीदास केलि सुख सनी रही मैन ललक नहिं मुरकी।।११।।

श्रीस्वामी रसिकदेवजू कौ पद-   राग-हमीर, ताल-धमार

श्रीबिहारीजू खेलत बसन्त ।
रँगभरी सब सखी बिराजति राधेजू रूप लसन्त ।।
फूल्यौ जोवन मौर मञ्जरी अधर पान उलहन्त ।
आयौ(आयौ)मदन मानौं सैन साजि कैं चँवर चिकुर ढुरन्त।।
छूटत मूक झूक सौरभ की नैन गुलाल उड़न्त ।
कूजत मधुकर मञ्जीर कोकिला बाजे बजत अनन्त ।।
मूलताल-मच्यौ है परस्पर खेल कटाक्षनि क्रीड़त भामिनि कन्त।
श्रीरसिकबिहारी कौ सुख निरखत धीरज कौन धरन्त ।।१२।।

श्रीस्वामी ललितमोहिनीदेवजू कौ पद-   राग-बसन्त, ताल-धमार

आयौ बसन्त मदन दल साजें दुहुँ दिसि है गई भीर ।
अबीर गुलाल उड़त नैनन सौं रस बिसरि गये चीर ।।
मूलताल-खेलत हँसत हँसावत सब मिलि धरत नहीं मन धीर।
श्रीललितमोहिनी कौ सुख बाढयौ धन्य आजु दिन बीर ।।१३।।

श्रीस्वामी भगतरसिकरेवजू कौ पद-   राग-बसन्त बहार, ताल-धमार

नवल दोउ आजु बसन्त से फूले ।
गोरी किसोरी के अंस दियें भुज स्याम छिपें भुज मूले ।।

सहज सिंगार अनंग के रंगनि सोहत पीत दुकूले।
रँग में रंग बढ़ावति लाड़िली लाल हिंडोरे से झूले ।।
मुलताल-यह सुख नित्य दिखवत नागरी नाहु भये अनुकूले।
श्रीभगवतरसिक बिलोकत यह छबि नैन कुरंग से भूले ।।१४।।

श्रीरूपसखी कौ पद-   राग-असंत बहार, ताल-तिताला

ललित नव जोवन तेरौ री बाल ।
पल्लव अधर उरज जुग श्रीफल फूले नैन बिसाल ।।
मधुकर स्याम सुगन्धनि लोभी बसत हिये पर माल ।
रसिक रूप नागर नवरंगी अचवत परम रसाल।।१५।।

श्रीगुरूदेवजू कौ पद-

सहज बसन्त कामिनी कंत। नित बिहरत मिलि इनहिं न अंत ।।
फूले तमाल लता लपटंत। हँसत सुगन्ध जीवत सब जंत।।
श्रीबिचित्रबिहारिनिदासी कसंत। रस बरसति विपिन अँग सँग में मंत।।१६।।

आजु बसन्त खेलत देखि।
बिपिन बसन सुरंग भूषन बिबिध वरन विसेखि।।
नैंन पुट भरि भरि प्रिया पिय आँनि उर अवरेखि।
जै श्रीवर बिहारिनदासि इहि सुख जन्म जीवन लेखि।।७।।

नवल वृन्दावन नवल बसन्त।
नव द्रुम बेलि केलि नव कुञ्जनि नवल कामिनी कन्त।।
नव अलि अलक झलक नव कोकिल नव सुर मिलि बिलसन्त।
नव रस रसिक बिहारिनदासि कैं नव आनन्दहिं न अन्त।।१८।।

नवल बसन्त नवल वृन्दावन। नव परिमल अति लुब्ध तरूनि तन।
नव पराग अनुराग मगन मन। नव बिहार बलि दासि रसिक जन।।१६।।

श्रीस्वामी रसिकदेवजू कौ पद- ताल-चर्चरी

श्रीरसिक बिहारी प्यारी के सँग रस भीने खेलत बसंत।
रसभीनैं सब अंग बिराजत सोभा कौ नहिं अंत।।
रस सौं भीनी तनसुख सारी छबि की उठति तरंग।
रस भीनी सब सखी बिराजति सब अँग भरे रसरंग।।
रस की तान लेति नाना गति उपजत तान तरंग।
रस सौं भीनी सब द्रुम बेली सौरभ उड़त सुरंग।।
रस भीनैं सब पंछी बोलत रंग जु करत तरंग।
रस सौं भीनौं श्रीवृन्दावन रस भरे भामिनी कंत।।
श्रीरसिकबिहारी रस बस कीने सोभा कौ नहिं अंत।।२०।।

श्रीभगवतरसिकदेवजू के पद- राग-हमारी बसंत, ताल-धमार

पिय प्यारी सोहत हैं बसंत। दोऊ मदन मुदित भये सुरति अंत।
कनकलता मृदु नवल बाल। लपटी मरकत मनि पिय तमाल।।
गौरस्याम सोभा विसाल। श्रम बूँदिन अतिसै रसाल।।
नव जोवन उलहो अँग अंग। किसलय दल कर अँगुरी सुरंग।।
परसत फल विमल उरज उतंग। मदपान करत कच कुटिल भृंग।।
विविध सुमन फूले सुवास। डोलनि मंजुल मारूत बिलास।।
बोलन कल कोकिल कीर पास। मनसिज बसकरनी मन्द हास।।
ललितादिक सींचत प्रेम वारि। छबि पान करत लोचन निहारि।।
गावत भगवत जस अति उदार। यह नित नौतन रस बन बिहार।।२१।।

यह छबि निरखिये नित नैन।
नवल नागर नागरी पर वारिये रति मैन।।
अधर मधु पीवत पिवावत तृपति नहिं दिन रैन।
प्रान पोषत परस्पर कहि कहि रसीले बैन।।

सहज सरद बसंत सन्तत सहचरी उर ऐन ।
ललित बलित बिचित्र द्रुमबेली सरस सुख दैन ।।
प्रेम प्रीति प्रतीति छिन छिन बढ़त तन मन चैन ।
रसिक भगत माधुरी मुसिक्यान मन हरि लैन ।।२२।।

❑

श्रीस्वामी ललितकिशोरीदेवजू महाराज कौ प्राकट्य-महोत्सव : मार्गशीर्ष कृष्णा 8

प्रथम दिवस

श्रीस्वामीजू कौ पद-

सुनि धुनि मुली बन बजै (पृष्ठ ४२ पर देखें)

श्रीगुरूदेवजू कौ पद-

श्रीकुञ्जबिहारी हरषि बुलाई (पृष्ठ ५०पर देखें)

द्वितीय दिवस

श्रीसमीजू कौ पद-

जहाँ जहाँ चरन परत प्यारी ज (पृष्ठ ४२ पर देखें)

श्रीरवामीजू कौ पद-

तू ना करि मान मनोहर (पृष्ठ ५१ पर देखें)

तृतीय दिवस

श्रीझवामीजू कौ पद-

यह कौन बात जू अबहीं और अबहीं और (पृष्ठ ४२ पर देखें)

श्रीनागरीदेवजू कौ पद-

जय श्रीवृन्दवन बिराजैं (५२ पर देखें)

चतुर्थ दिवस

श्रीस्वामीजू कौ पद-

बनी री तेरे चारि- चारि चुरी करनि (पृष्ठ ४३ पर देखें)

श्रीगुरूदेवजू कौ पद-

मनुहारि करैं मनुहार लाल (पृष्ठ ४८ पर देखें)

❋

श्रीस्वामी ललितमोहिनीदेवजू महाराज कौ प्राकट्य- महोत्सव : माघ कृष्णा 11

प्रथम दिवस

श्रीस्वामीजू कौ पद-

कुञ्जबिहारी कौ बसन्त (पृष्ठ ५४पर देखें)

श्रीगंरूदेवजू कौ पद-

निकुञ्जबिराजिये जू (पृष्ठ ७ पर देखें)

द्वितीय दिवस

श्रीस्वामीजू कौ पद-

चलि री भीर तें न्यारेई खेलैं (पृष्ठ ५१ पर देखें)

श्रीगुरूदेवजू कौ पद-

चलौ जू कौतुक देखन जाहिं (पृष्ठ ६पर देखें)

तृतीय दिवस

श्रीस्वामीजू कौ पद-

अबकें बसन्त न्यारेई खेलैं (पृष्ठ ५२ पर देखें)

श्रीस्वामी नागरीदेवजू कौ पद-

(ए)प्यारी सहज मनै हरि लेत (पृष्ठ १३ पर देखें)

चतुर्थ दिवस

श्रीस्वामीजू कौ पद-

(ए) रहौ रहौ बिहारी जू (पुष्ठ ५३ पर देखें)

श्रीगुरूदेवजू कौ पद -

मोहन मोहिनी सुहेलरा गाऊँ (पुष्ठ ११ पर देखें)

(रात्रि में जागरण)

श्रीगुरूदेवजू के पद - राग-दरबारी कान्हरी, ताल-धमार

जे जन मन क्रम बचन चरन रज सेवत हित नित श्रीहरिदासै।
प्रेम भक्ति उपजत ताही छिन पाप ताप अवगुन गति नासै।।
कञ्चन जिमि बपु धातु परसि रस पलटि रूप मिलवत सुखरासै।
जैसे दियो है प्रसाद प्रगट करूना करि श्रीकुञ्जबिहारी बिहारिनिदासै।।१।।
जे कोउ गुरू गोविन्द नाम गुन गावत गुनत विचार विचारि।
सेवत सहज सदा वृन्दावन मन क्रम बचन चरन चित धारि।।
पाये सुख न गये आतुरता सम्पति विपति एक उनिहारि।
अहंकार ममता के औगुन छाँड़ि सकल स्वारथ दुःखदारि।।
कबहूँ काल न ख्याल करत डर भूलि न तिन तन सकत निहारि।
कहि न सकत निसंक सुदृढ़ भक्त सों माया रही लटी ह्वै हारि।
निर्भय भये गये भय तम तरि संगी सस्त्र रहे कर डारि।
श्रीबिहारिदास यामें भ्रम नाहीं बेद पुराननि कह्यौ पुकारि।।१२।।

श्रीस्वामीजू के पद- राग-कान्हरौ, ताल -धमार

माई (री) सहज जोरी प्रगट भईजू रंग की गौर-स्याम घन दामिनि जैसें।
प्रथमहु हुती अबहूँ आगे हूँ रहि हैं न टरि हैं तैसें।।
अंग अंग की उजराई सुघराई सुन्दरता ऐसें।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुञ्जबिहारी समवैस वैसें।।३।।

जोरी बिचित्र बनाई री माई काहू मन के हरन कौं।
चितवत दृष्टि टरत नहिं इत उत मन बच क्रम याही संग भरन कौं।।
ज्यौं घन दामिनि संग रहत नित बिछुरत नाहिन और बरन कौं।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुञ्जबिहारी न टरन कौं।।४।।

श्रीस्वामी सरसदेवजू कौ पद-

जोरी बिचित्र बिराजत रंगनि अंगनि में नव नव छबि छाई।
भूषन सुरंग रगमगे बागे लागे उर बिलसत सुखदाई।।
मन्द हँसनि मधुरी बातनि में मगन भये सहचरि बलि जाई।
रूप रूचिर बर बिहरत चोज मनोजनि में अति ही सरसाई।।५।।

श्रीगुरूदवजू कौ पद-

आज फूल अँग अँग न समाती।
छबि सों छोर स्याम कटि पट इत गोरे गात छूट गई गाती।।
नीबी नाभि निरखि बन्द ही बन्द मिलवत कर मानिनि मुसिक्याती।
श्रीबिहारिनिदास स्वामिनी (स्याम) सुरत रस बिबस भये बिलसत थिर थाती।।६।।

श्रीस्वामीजू के पद- राग-कान्हरौ, ताल-धुपद

रूचि के प्रकास परस्पर खेलन लागे।
राग रागिनी अलौकिक उपजत नृत्य संगीत अलग लाग लागे।।
राग ही में रँग रह्यौ रँग के समुद्र में ये दोऊ झागे।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुञ्जबिहारी पै रँग रह्यौ रस ही में पागे।।७।।

ऐसे ही देखत रहौं जनम सुफल करि मानौं।
प्यारे की भाँवती, भाँवती के (प्रान) प्यारे जुगलकिसोरहि जानौं।।
छिन न टरौं पल होहुँ न इत उत रहौं एक ही तानौं।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुञ्जबिहारी मन रानौं।।८।।

प्यारीजू जैसें तेरी आँखिन में हौं अपनपौ देखत हौं ऐसे तुम देखत हो कैधौं नाहीं। हौं तोसौं कहौं प्यारे आँखि मूँदि रहौं तौ लाल निकसि कहाँ जाहीं।। मोकौं निकसिबे कौ ठौर बतावौ साँची कहौ बलि जाऊ लागौं पाँहीं। श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा तुमहीं देख्यौ चाहत और सुख लागत काहीं।।६।।

राग-अड़ानो, ताल-ध्रुपद

इत उत काहे कों सिधारति आँखिन आगें ही तू आव।
प्रीति कौ हित हौंतो तेरौ जानौ तू ऐसोई राखि सुभाव।।
अमृत से बचन जिय की प्रकृति सों मिलि ऐसोई दै दाव।
श्रीहरिदास के स्वामीस्याम कहत री प्यारी तू प्रीति कौ मंगल गाव।।१०।।
बात तो कहत कहि गई (अब) कठिन परी (हो) बिहारी।
प्रान तो नाहिंनें तन अस्त बिस्त भये कहैं कहा हो प्यारी।।
भाँवते की प्रकृति देखत जो श्रम भयौ बहुत हियारी।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा (कुञ्जबिहारी) बाहुसों बाहु मिलाई रहे मुख निहारी।।११।।

राग-सिहानो, ताल-अद्धा तिताला

हरि कौ ऐसौई सब खेल।
मृग तृष्णा जग व्यापि रह्यौ है कहूँ बिजौरो न बेल।।
धनमद जोवनमद राजमद ज्यौं पंछिन में डेल।
कहैं श्रीहरिदास यहै जिय जानौ तीरथ को सो मेल।।१२।।

श्रीगुरूदेवजू के पद-

हरि बिन कौन सुखन कौ दाता।
सबै स्वारथी सहाइ न कोऊ बन्धु पिता सुत माता।।
तुम निरपेच्छ निबाहत सब दिन पूरन त्रिभुवन त्राता।
तुमसे प्रभु तजि अनत करत रति ते पसु प्राननि घाता।।

तुम उदार सुकुमार सहज सुन्दरवर मुरि मुसिक्याता।
श्रीबिहारिनिदास छबि निरखि मनोहर गौरस्याम रँग राता।।१३।।

स्याम तन मन गोरे गात में गसत री।

यद्यपि हुती न न्यारी कहत हा हा री प्यारी बिचित्र बिहारी बंद बाहु सौं कसत री। प्राननि सों प्रान सीर बाँटत होत अधीर एक ही सुर स्वास विस्वास है हँसत री।। श्रीबिहारिनिदास रोम रोमनि कहाँ लौं ब्यौरो ताफता की मौज अति ताहू सौं लसत री। चोली सी अमोली प्रीति ऐसे सुख में समीत स्याम तन मन गोरे गात में गसत री।।१४।।

श्रीस्वामी बीठलविपुलदेवजू कौ पद-   राग-विहाग, तल-अद्धा तिताला

लालन तेरेई आधीन।
सुनि री सखी हौं साँचि कहति हौं तुम जल ये हैं मीन।।
तेरे रस बस स्याम सुन्दरवर जावत हैं ज्यौं दीन।
श्रीबीठलविपुल विनोद बिहारी होत मनावत लीन।।१५।।

श्रीस्वामीजू कौ पद-   राग-विहाग, ताल-धुमार

स्यामा प्यारी आगें चलि आगें चलि गहवर बन भीतर (मेरी आली) जहाँ बोलै कोयल री। अति ही बिचित्र फूल पत्रनि की सिज्या रची रूचिर सँवरी तहाँ तुव सोयल री।। छिन छिन पल पल तेरीयै कहानी तुव मग जोयल री। श्रीहरिदास के स्वामी स्याम कहत छबीलो कामरस (मेरी आली) भोयल री।।१६।।

श्रीस्वामी बीठलवि पुलदेवजू कौ पद-

(सुख) सेज पौढ़ी भामिनी रसिक लाल के अंग संग।
सुरत रंग वर चपल अंग अंग लज्जित नव घन दामिनी।।
सुन्दरता की रासि किसोरी नहिं उपमा कौ कामिनी।
श्रीबीठलबिपुल विनोद बिहारी सौं मिलि यहि रस बिलसत जामिनी।।१७।।

श्रीस्वामी सरसदेवजू कौ पद -

अलबेली अलक झलक आनन (अति) अलकलड़ी सुख देत। अलबेली अँखियन पल नहीं लागत अलबेली बतियन मुसिकति मन हरि लेत।। अलबेली चाल चलत अलबेली अलबेली तानन मान समेत। श्रीसरसदास अलबेले लाल वारत मन छिन छिन कहि न परत छबि जेत।।१८।।

श्रीस्वामी ललितमोहिनीदेवजू कौ पद -

पिय पियरी सेज बनाई आज।
पियरी झलक चमक सब पियरी पियरे बसन बनै सब काज।।
पियरे फूल बनैं सब तन में पियरी सोभा सहज समाज।
श्रीललितमोहनी यह सुख देखत स्याम तनै पियरे सब साज।।१६।।

श्रीस्वामी नरहरिदेवजू कौ पद- राग-बिहाग, ताल-धमार

एक बात कहौं श्रवन लगि चित दै सुनहु पियारी।
सुभग फूल फूले श्रीवृन्दावन तैसीये सरद उजियारी।।
चलि राधे अन्तर सुख लूटैं सखी रहैं सब न्यारी।
मोहि तोहि जहाँ अपनपौ भूलैं रहि है न सुरति सँभारी।।
जहाँ न खरकौ होय पंछी कौ यों दुरि कहत बिहारी।
श्रीनरहरिदासि पिय मन की जानी आगे सेज सँवारी।।२०।।

श्रीस्वामी रसिकदेवजू कौ पद -

प्यारी मान न कीजे ऐसे रसीले स्याम सौं।
तुम तौ हो लालन की अँखियाँ बँधें हैं तिहारे दाम सौं।।
बिन आगस जिस दोष धरति हो निरखि आपुसी बाम सौं।
श्रीरसिकबिहारिनि जानि अपनपौ बिहँसि मिलीं पिय धाम सौं।।२१।।

तिहारौ ता पस्यौ है मान कौ सुभाव।
तुम्हारी खोट कै इनकी कहियत कौन करै यह न्याव।।
ये तो तिहारे रूप रस लोभी मुख जोवत दिन जाव।
छिन में रस बेरस करि डारत को पकरै कर बाव।।
समझि देखि राधे मन माहीं बिन पानी की नाव।
श्रीरसिकबिहारी रस बस कीने अपने अपने दाव।।२२।।

श्रीस्वामरजू कौ पद- राग-विहाग, ताल-अद्धा तिताला

जो कछु कहत लाड़लौ लाड़िली जू सुनिये कान दै।
जो जिय उपजत सो तिहारेई हित की कहति हौं आन दै।।
मोहि न पत्याहु तौ छाती टकटोरि देखै पान दै।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुञ्जबिहारी जाचक कौं दान दै।।२३।।

श्रीगुरूदेवजू के पद-

स्यामा मेरी आँखिन कौ गहनौं।
अंजन मंजन कै मनि कुन्दन फुन्दन है नियरे रहनौं।
कबहुँ कर कण्ठ धरौं कबहूँ उर संपुट में न कहूँ कहनौं।।
श्रीबिहारिनिदासि जराव जस्यौ जुग प्रेम पुहाइ लियौ लहनौं।
पहिरौं कि धरौं न डरौं दिन देखत आँखिन कौ गहनौं।।२४।।

मनावत लाल री मानिनी मान किये न बनै।
तूही तुही करै तोहि हृदै धरै तेरे गुननि गनै।।
तन सौं तन मन सौं मन मिलि प्रान सौं प्रान सनै।
श्रीबिहारिनिदासि कौमानकह्यो सो लह्यौ सुख अपने सींच स्याम सजनै।।२५।।

सोई तो बचन मोसौं मानि तैं मेरौ लाल मोह्यौ री साँवरौ।
नव निकुञ्ज सुखपुञ्ज महल में सुबस बसौ यह गाँवरौ।।
नव नव लाड़ लड़ाइ लाड़िली नहिं यह ब्रज जाँवरौ।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुञ्जबिहारी पै वारौंगी मालती भाँवरौ।।२६।।

चलि सखि कुञ्जबिहारी सौं मिलि चित दै देखैं उनकी भाँवती।
सुन्दर सौं सुन्दरि मिल खेलत कैसे (हैं) धौं गावती।।
औचक आइ परी सखी तहाँ पिय पै पाँई चँपावती।
श्रीहरिदास केस्वामी स्यामा कुञ्जबिहारी सौमिलि पौढ़ी तनमन रावती।।२७।।

श्रीगुरूदेवजू के पद- राग-सरोठ, ताल-अद्धा तिताला

विहरत (वन) नव नव रंग राजत कुञ्ज वरन रवनी।
कंठ लाड़ति लालन के मानिनि मन भवनी।।
कबहुँक झुकि झाँपति अञ्चल मुख चञ्चल उर अवनी।
नाहु बाहु गहि बदन बिलोकत बिहँसि वचन चवनी।।
लाल प्रसंसि लगत छिन छिन पग छाँड़िये हठ ठवनी।
श्रीबिहारिनिदासि हिलमिल खेलौ सुखदानि कुँवरि कवनी।।२८।।

रसिकवर बन बोली चलि आली।
नव निकुञ्ज नायक मनमोहन तू नवजोवन वाली।।
सुनहु सुघर सुर ज्ञान सिरौमनि बात कहत कित ठाली।
इत आसक्त अधीर उतै वे आतुर करत उताली।।
श्रीबिहारिनिदासि सहचरि संग लै चली आली प्रीति प्रतिपाली।
राख्यौ पन उनकौ मन दोऊ बीच मिले बनमाली।।२६।।

श्रीस्वामीजू कौ पद-

प्यारी अब सोय गई।

ज्यौं ज्यौं जगावत त्यौं त्यौं नहिं जागति प्रेम रस पान करि भोय गई।। जागत होइ तौ जगाऊँ प्यारी तातेव परम सचु रस ही रसिक रस बोइ गई। श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा उठिके गरे लगाई नवल प्रीति सौं नोइ गई।।३०।।

श्रीस्वामी ललितकिसोरीदेवजू कौ पद-

प्यारे दोऊ परम सुख में परे।

चाहत यही हम रहि हैं ऐसें प्रान सों प्रान अरे।।
मन में हरषि सिहाते हँसि हँसि उमगि उमगि अंकौं भरे।
श्रीहरिदास रसिक की जीवन सहज हिय में ढरे।।३१।।

श्रीस्वामी रसिकदेवजू के पद-

कुञ्जनि पधारौ प्यारी रंग भरी रैन।

रंगभरी दुलहिन रंगभरे पिया स्यामसुन्दर सुख दैन।।
रंगभरी सेज रची फूलन की रंग भर्‌यौ उलहत मैन।
श्रीरसिकबिहारी पिय प्यारी दोऊ करहु सेज सुख सैन।।३२।।

सखी री पौढ़न कौ समयो भयौ।।

इत आई द्रुम की परिछांहीं उत ढुरि चन्द गयौ।।
उमगि ढुरे दोऊ सुरंग सेज पर बाढ़्यौ रंग नयौ।
रसिकबिहारिबिहारिन पौढ़े यह सुख दृगन लाह्यौ।।३३।।,

श्रीस्वामी नरहरिदेवजू कौ पद-

दोऊ सुरति सेज सुख सोये।

करत पान मकरन्द प्रिया पिय अधर (पाँन) रस भोये।।
तन सौं तन मन सौं मन मिलवत मदन मान सब खोये।
श्रीनरहरिदासी सुखनिधि बिलसत नैन कमल मुख जोये।।३४।।

श्रीस्वामी भगवतरसिकदेवज् के पद-

पौढ़े दोऊ ललित लतान तरे।
सुमन सेज सुखरासि सनेही अधरनि अधर धरे।।
उरजनि उरज जोर कटि सों कटि लपटि भुजान भरे।
यहि रस मत मगन मन सोये भगवत व्यजन करे।।३५।।

सुरति सुख सोये स्यामास्याम।
गल भुज दियें परस्पर दोऊ अँग अँग अभिराम।।
तन मन अरूझि रहे सुरझत नहिं जामिनि तीजे जाम।
श्रीभगवतरसिक पलोटत पाँयन सहचरि सब सुख धाम।।३६।।

श्रीगुरूदेवजू कौ पद-

राग-परज, तान-धीमा तिताला

राजत रंगभरे रति नैना उनींदे री सोभा देत।
सकुचि सकुचि विगसत सखि अरून असित सेत।।
मानहु अम्बुज पर जुग पुतरी अटके अति संकेत।
अति रसलुब्ध तजि न सकत हँसत सुरत हेत।।
सब सुख सूचत अति अनुरागे जागे स्याम समेत।
श्रीबिहारिनिदासि अँग अँग मनोहर मोहन मन हरि लेत।।३७।।

श्रीस्वामी रसिकदेवजू कौ पद -

लेत परस्पर अंग सुवास।
मनहिं तरंग उठत मनमथ की और न कछू प्रकास।।
रोम रोम तन यह सुख बिलसत भोजन भूख न प्यास।
श्रीरसिकबिहारी (जू) मगन रहत नित सहत न खटक उसास।।३८।।

श्रीगुरूदेवजू के पद- राग-खम्माच, ताल-चौताल

श्रीवृन्दावन बीथिन में जमुना पुलिन बीच नित्य कौ बिहार श्रीबिहारिनिदासि पायौ है । लाल अलबेलौ अलबेली संग बनी बधु करन काम की केलि कुञ्ज में बसायौ है।। बोलनि हँसनि मिलि खेलत रसीली प्रिया ललित रसीलौ लाल कंठ लै लगायौ है। निकट खवासी निजु दासी लियें बीरी कर जुगल लड़ैती रीझि रंग बरसायौ।।३६।।

सोनौ सो स्याम गढ़ावत हौ मन प्रान दियें दृग दृष्टि उहाँई।
चम्पे की माल गरे पियरी पहुँची कर पियरेइ पाट पुहाई।।
पियरे पट केसर खैर खुली पियरी झलकैं अँग अंग सुहाई।
प्रानप्रियाजू की प्रेम की बात श्रीबिहारिनिदासि कही मुँह आई।।४०।।

श्रीस्वामीजू कौ पद- राग-जैजैवन्ती, ताल-धमार

रोम रोम रसना जो होती तऊ तेरे गुन न बखाने(री)जात।
कहा कहौं एक जीभ सखी री बात की बात बात ।।
भानु श्रमित और ससि हू श्रमित भये और जुवति जात ।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामास्याम कहत री प्यारी तू राखति प्रान जात।।४१।।

श्रीस्वामी ललित किसोरी देव जू कौ पद-

मेरी गति तुहि है लड़ैती प्रानप्यारी जू।

भई है प्रसन्न राधे हित हू को हित जानै सकल गुन निधान परम उदारी जू।। सहज सनेह दोऊ रूप ही कौ रस पीवें उमँगि उमँगि अंसनि भुज धारी जू। ललित रसिक वर सदा ही समीप रहें मिलत मिल्यौई चाहैं जीवन हमारी जू ।।४२।।

श्रीगुरूदेवजू को पद- सहेली ताल कहरबा

सहेली मेरो लाल बिहारी ऐसोरगमग्यौ (जै) श्रीवृन्दावन कौ री चन्द।
जाके दरस परस सुख माइये मन उपजत अति आनन्द ।।१।।
नखसिख रसिक सु रस भर्‌यौ मो प्रानप्रिया के रंग ।
मो बिन नैकु न रही सके विहात अनुराग अभंग ।।२।।
अवधि प्रेम की साँवरो मिलि करत नई नित केलि।
या रस ते नेकु न टरैं हम दोऊ नवलनवेलि ।।३।।
तातें कछु न दुराइहौं सखि तू मेरे हित प्रान ।
तैं मेरे रस बस कियौ बर सुन्दर सुघर सुजान ।।४।।
तोहिं सुन्यौ भावत भटू रूचि आछे मन की दौर ।
तोसौं छिन छिन मन मिलैं हौं बहुत कहौंगी और ।।५।।
श्रीवृन्दावन सहज सुहावनों राजत जमुना के फेर ।
कुञ्ज कुञ्ज अलि गुञ्जहीं मानौं सदन मदन के मेर ।।६।।
इक दिन अति आतुर मिल्यौ नव चम्पक कुञ्ज किसोर।
तन मन मोसौं सब कही सखि याकी प्रीति न थीर ।।७।।
जित जित ह्वौं तितही चलै तित आपुन हू चलि जाइ ।
तितहीं मीहूँ लै चलै कछु आनँद कह्यौ न जाइ ।।८।।
कुञ्ज कुञ्ज कौतिक घनौं लै तहीं तहीं बिरमाइ ।
ता छिन तें ता ठौर तें सखि आगे चल्यौ न जाइ ।।९।।
जल थल कुञ्ज पुलिन बन घन रंग रह्यौ भरि कह्यौ न जाइ।
सब पंछी द्रुम तृन जलनि अलि कमलनि चलत डुलाइ ।।१०।।
मेरे मन के आगे ही फिरै अति सम्पति सहित सुहाइ।
जब चाहौं ताही समै रति तैसियै ह्वै मिलि जाइ ।।११।।

श्रीवृन्दावन जो सु कृपा करैं तौ निज सुख मनहि समाइ।
हम इनहीं की आस अनत सुख सपनें हू न सुहाइ ।।१२।।
लालरतन मनि मुक्तामय तरू ललितै लता उदार ।
स्यामै सेवत नित नये फल फूल प्रेम के भार ।।१३।।
नारिकेलि नव नारंगी सत अम्ब मौर बहु ठौर ।
देखत सोभा बन घनौं रस रीझि रह्यौ सिरमौर ।।१४।।
श्रीवन्दावन जब देखौ तबहीं नयौ नित लेत प्रेम उपजाइ।
या रंग रस में मन झूमही तौ भूलि पाछिलौ जाइ ।।१५।।
जा दिन तूँ पाछे रही मोहिं मिल्यौ सामुहौं आइ ।
मोहिं अकेली देखि कें कछु सुख ही में सुख पाइ।।१६।।
तब पूछी संग की कहाँ मैं उत्तर दियौ बनाइ ।
नवकुन्दन की कुञ्ज कौ तैं पतो मिलायौ आइ ।।१७।।
तब सुनि सखि दुनौ भयौ मन फूल्यौ अंग न समाइ ।
तो तन चितै चितै हँसि मेरे पाँइन पस्यौ लड़ाइ ।।१८।।
तब मेरौ मुख चूम्यौ माथौ चूम्यौ और चूमे नैन कपोल।
तेरे देखत सब भयो यों कह्यौ लियो बिन मोल ।।१६।।
इक दिन नवल निकुञ्ज में नटु रह्यौ लता सौं लागि।
हौं फूलन के ख्याल ही मोहिं मिल्यौ मदन मद जागि।।२०।।
ताकी बातनि और न पाइये अति गावत सुघर सुदेस।
खेलत छिन छिन ख्याल में मोहिं मिल्यौ मनोहर बेस।।२१।।
गुनगुन रूप अचागरौ अति चञ्चल अँग अंग।
कोक मनौं मुख ही पढ़्यौ तन उपजत अनंत अनंग।।२२।।
तब मेरौ हाथ छियौ हियौ छियौ पुनि कर परसि कपोल।
चितवत ही चितवित हस्यौ मेरे सुनत मधुर मृदु बोल।।२३।।

इक दिन कालिन्दी के कूल ही ठाढ़ौ ललिता के संग।
तैं मोसौं तबहीं कह्यौ यह तेरेई रस रंग।।२४।।
तूँ कछु उनहीं मिलाबती मोसौं करत सैन ही बात।
मेरी सी मोसौं कहै उनकी पुजवति सब घात।।२५।।
प्यारीजू तुम हम सौं ऐसी कहौ तेरे पिय के प्रेम अवेस।
तेरे मन कौ भामतौ मिलि करि रमत सुदेस।।२६।।
प्यारीजू हम साँझ समै साँझै कहैं (और) कहैं भोर सौं भोर।
बात कहौ सो समझिये पै मन कौ ओर न छोर।।२७।।
सखि तू जानत सब दिन की सबै घट नटनागर की बात।
कौतिक नित नये करै बहु निपुन कला सत सात।।२८।।
अजु तुम मिले सयाने चतुरई चित भोरी हूँ दै दै जात।
मेरौ यहै सहज सदा सुख देखत सुनत न अघात।।२९।।
मोह्न सौं सुख की कछु कहि आवै पै जिय ते निकसि न जाइ।
सब दिन यह सुख जीजिये नेंकु तुम सौं कहत लड़ाई।।३०।।
भावत सबहीं भाँवतौ सुनि तेरे सुख संतोष।
तेरे सुखतेई सुखी अरू है समरथ सब घोष।।३१।।
(सखि) इकदिन हौं जमुना जल न्हातही मैं देख्यौ बनमें जात।
ना जानौं कित है मिल्यौ हौं चौकि परी सब गात।।३२।।
केस कुसुम बैनी सिथिल गई जलजमनि माना टूटि।
करनफूल खुटिला खुले कंचुकि नीबी बन्द छूटि।।३३।।
सादौ भेष उताइलौ फिर सच्यौ आपने हाथ।
बैनी गुहत कछू कह्यौ मोहिं राखि आपने साथ ।।३४।।
सखि तोहू सों न जनावहीं मोसों हरूवे हाहा खात।
नेंक निकट ही ओट होत तब तोही सों बिललात।।३५।।

प्यारीजू तुम इनहीं कौ कह्यौ करौ कछु हौं नहीं अनखात।
भीर परै जो साँकरें कछु हौं सँग ते नहिं जात।।३६।।
तुम्हारी इनकी अटपटी एकौ जानी नहिं जाइ।
अनजानत हूँ जानिये पै प्रेम न बरन्यौ जाइ।।३७।।
प्रेमै आहि कहै कोऊ यह सुख दुख लाभ कि हानि।
रिसही में हाँसी आवै हौं कहत नहीं कछु बानि।।३८।।
सखि तोते अधिक न जानिहौं कोउ कहै तो लागौं पाँइ।
मेरे मन संसै रहै मोसौं तू कहि दाव उपाइ।।३६।।
प्यारीजू तुम मेरौ कह्यौ करौ ये कहैं सो कीजे बेगि।
सखि तेरौ कह्यौ कहा करौं यह लावनि भर्‍यौ अनेगि।।४०।।
मोहन करिहो कहा सु कीजिये यों सुनत भयौ चित चाव।
जगत बिदित हमहूँ सुन्यौ तू रसिक रँगीलौ राव।।४१।।
प्यारीजू तेरे बरन बसन करौं तन तेरेई उनिहार।
तेरी सी बातें लगैं कहि जीवत बदन निहार।।४२।।
तौलों चलौं मिलौं तोही लौं तौ पहिचानिहै न कोइ।
मिले मिलाये रंग रहै तौ खेल चौगुनौ होइ।।४३।।
मोहन आहि भली जो है आवै तौ मिलौ सखिन सों जाइ।
बहुर्‍यौ मिलिहैं कुञ्ज में लियो जलहू कौ सुख पाइ।।४४।।
तब निकट सुनत ही सहचरी फिर चितयो नैन बिसाल।
मनिचूरा चौकी चुरी दै राती बैंदी भाल।।४५।।
सखि देखत है याकौं मतौ यह याकी टेब न जाइ।
बरजत ही बरजत हठि आयो फोंदा फूली बनाइ।।४६।।
तब लाल सकुचि ठाढ़ौ भयौ कछु रूप न बरन्यौ जाइ।
चितै चितै मुख साँवरौ तन उपजत अगनित भाइ।।४७।।

तन मन प्रान पलटि परे लीनें उर सों उर लाइ।
रस बस भये न जानहीं निसि बासर गयो बिहाइ।।४८।।
सखि तेरे सँग सुख पाइये सब तेरौ कियौ सहाइ।
सुरति रंग में रँग रह्यौ रस रीझि रह्यौ गहि पाइ।।४६।।
सुन्दरि तेरी कृपा कहा कहौं यह रस जस प्रेम प्रकासि।
बलि बलि श्रीहरिदास की जिन करी (है) बिहारिनिदासि।।५०।।४३।।

श्रीगुरूदेवजू कौ पद- राग-ललित, ताल-धीमा तिताला

जागे री जाने क्यौं मन मानै।
झगरत जुरत किसोरकिसोरी बड़े भोर में बतबतात उनमानै।।
ओढ़े उलटि बसन सम्भ्रम निसि पलटि लेत पहिचानै।
श्रीबिहारिनिदासि दम्पति कौ सुख निरखत
हरषत सखी वारत तन मन प्रानै।।४४।।

श्रीस्वामी ललितमोहनीदेवजू कौ पद-

जागौ जी जागौ भोर भयौ।
आलस खोलौ श्रीमुख बोलौ अब जिन करौ ऐसो हियौ।।
मान कियें न बनै मम जीवन या रस बस हौं जियौ।
श्रीललितमोहिनी यों समुझावत करि ये जू इनकौ कह्यौ।।४५।।

श्रीगुरूदेवजू कौ पद -

यों हँसि कहत हैं बात सुन तिन बातनि हूँ न पत्यात।
कोमल करन सों मुख मूँदि राखत श्रवननि तन न जात।।
बचन रचन बनत नाहिन पुलकित (है) सब गात।
श्रीबिहारिनिदास के नैननि में सुख सैननि लटपटात।।४६।।

श्रीस्वामी भगवतरसिकदेवजू कौ पद -

नैना घूमत हैं मद छाके।
जगे जम्हात सिथिल पट भूषन सुख सन्तोष न थाके।।
पलकनि पीक अधर अञ्जन रद छद कपोल ललना के।
श्रीभगवतरसिक पौंछि अञ्चल मुख प्यावत अधर सुधा के।।४७।।

श्रीस्वामीजू के पद- राग, भैरौं, ताल ध्रुपद

प्रियापिय के उठिबै की छबि बरनी न जाइ सब ते न्यारे। मानौं द्यौस रैन इकठौर सोये ना भये न्यारे।। बार लटपटे मानौं भँवर जूथ लरत परस्पर कमलदलनि पर खञ्जरीट सोभा न्यारे। श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुञ्जबिहारीबिहारिन उपर कोटि कोटि अनंग कोटि ब्रह्माण्ड वारि किये न्यारे।।४८।।

प्यारीजू बोलत नाहीं कै तू सोवत उनींदी कैधौं काहू कछु कह्यौ कै तैरौ ऐसौई सुभाव। मोहिं तेरे देखे बिन कल न परै (री) कै तू छाँड़ि कुभाव। काहू की झुक हमें देत (है) री उपजत दुभाव। श्रीहरिदास के स्वामी स्याम कहत ताके बस परे प्रगटत जु भाव।।४९।।

आलसभीजे री नैन जँभाति आछी भाँति सुदेस। कर सौं कर टेक अँगुरिन पेच मानौं ससिमंडल बैठ्यौ अति भाँति सुदेस।। मन के हरिबे कौं और सुख नाहिनें कोऊ प्यारी नख सिख भाँति सुदेस। श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुञ्जबिहारी छाती सों छाती लगायें अँग अंग सुदेस।।५०।।

श्रीस्वामी बीठलविपुलदेवजू कौ पद -

आवनि कुञ्ज तें पहपीरी।
प्रिया जँभाति कर जोरि रसमसी ललन खवावत बीरी।।
सुरत श्रमित अंग अंग सिथिल अति भुज भरि स्याम रसीरी।
श्रीबीठलबिपुल विनोद करत मिलि नहिं ललितादिक नीरी।।५१।।

श्रीगुरूदेवजू कौ पद -

मुख पट ओट न कर री प्यारी।
काहे को झूठिये झुक झुकति रसिकनी कहत हैं रसिक बिहारी।।
तू जो इतौ उठ करति चतुर प्रिया रति के चिह्न देखियत निहारी।
नवकिसोरै मिलि किसोरी मान तजि श्रीबिहारिनिदास बलिहारी।।५२।।

श्रीस्वामीजू कौ पद -

स्यामा स्याम आवत कुञ्जमहल तें रगमगे रगमगे। मरगजी बनमाल सिथिल कटि किंकिनी अरून नैंन चारौ जाम जगे।। सब सखी सुघराई गावत बीन बजावत सब सुख मिलि संगीत पगे। श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुञ्जबिहारी की कटाक्षि सों कोटि काम दगें।।५३।।

श्रीस्वामी नागरीदेवजू कौ पद - राग-चर्चरी, ताल चौताल

रगमगे अंग अंग संग राजै रसिक सुरति रंग जागे निसि नवल नेह सुन्दर सुखदाई। कबरी कुसुम सिथिल अलक अञ्जन अधर पीक पलक बदन झलक ललित ललक ललना लाल लड़ाई।। हँसि हँसि मृदु कहत बैन नैन सैननि मुदित मैन मोहत मन रीझि लै सखि आरसी दिखाई। दासि श्रीनागरि नवेलि बिहरत भुजकंठमेलि नव निकुञ्ज सुखद केलि करत हैं मनभाई।।५४।।

लटपटात गात गलित लाड़िलीलाल हँसत लसत भुजनि कसत काम नैननि नेह निहारैं। एक ही सुर स्वास सैन विहरत वर विचित्र बैन अधर सुधा सहज सुन्दर पियत मधुर धारैं।। छाके रसमत मगन अँग अंग अनुराग सघन वरबिहारिनिदासि लै उर सेवत श्रम निवारैं। बलि बलि (नव) नागरीदास श्रीकुञ्जबिहारी सुख की रास रीझि ललित श्रीहरिदास तन मन धन वारैं।।५५।।

श्रीस्वामी बीठलविपुलदेवजू कौ पद -

प्रातही किसोर जोरि कुञ्ज केलिनी।

अँग अंग गुन तरंग गौर स्याम रूपरासि मदन केलि सुरत सिन्धु पुलकि झेलिनी।। तरनिनन्दिनी सुतीर गावत पिक भृंग कीर तृगुन मरूत माधुरी श्रमम्बु पेलिनी। वर बिहार राजनी सुनूपुरादि बाजिनी श्रीबीठलविपुल वारनें भुज कण्ठमेलिनी।।५६।।

श्रीस्वामी नागरीदेवजू कौ पद -

करत केलि कुञ्ज कुञ्ज कुँवरि कामिनी।

अद्भुत बन रूप राज सहचरि अति सुख समाज गौरस्याम मौजनि घन बरष दामिनी।। पुलिन नलिन विविध फूल जल थल कालिन्दी कूल लेत सुखन देत प्यारी रवन रामिनी। दास श्रीनागरि नवेलि नागर नवरंग झेलि बिहरत अँग संग श्रीहरिदास स्वामिनी।।५७।।

श्रीस्वामी भगवतरसिकदेवजू के पद -

सुन्दर रज तिलक भाल बाँकी भृकुटी विसाल रतनारे नैन नेह भरे दरस पाऊँ। वारौं छबि चन्द बदन सोभा सुख सिन्धु सदन नासा वर कीर कोटि काम कौ लजाऊँ।। अधर अरून दसन

पाँति कुन्द कलिका बिसाँति कमल कोस आनन दृग मधुप लै बसाऊँ।। मधुर वचन मन्द हास होत चाँदनी प्रकास जै जै श्रीहरिदास रसिक भगवत गुन गाऊँ।।५८।।

कम्बु कण्ठ मंजु दाम गौर अंग छबि सुधाम कुन्दन तें सरस मृदुल मोहन मन भायौ। नाल सहित कञ्ज पान देत सदा अभय दान तजिकैं अभिमान साह अकबर सिर नायौ।। चरन कमल कामधेनु सकल कामना सुदैन दरसैं दृग होत चैन आपदा भगायौ।। करूवा गूदरा पास वृन्दावन करहिं वास जै जै श्रीहरिदास रसिक भगवत अपनायौ।।५६।।

कुञ्जबिहारी एक आस और सकल तजि दुरास असन वसन तें उदास बाँके ब्रतधारी। गान कला गुन निधान रसिक मुकुट मनि प्रधान रागभोग बखत जानि तोषत पिय प्यारी।। तिमिर हरन कौं दिनेस ताप हरन कौं निसेस पाप दहन पावकेस गुरूता मुखचारी। निधिवन आसीन नित्त वरबिहार सरस बित्त जै जै श्रीहरिदास रसिक भगवत बलिहारी।।६०।।

राधा गुन गान कारैं जमुना अस्नान करैं जमुना जल पान करैं वास श्रीवृन्दावन कौ।। रसिकन को संग करैं कर करूवा गूदर गरैं प्रंम अँग अंग भरैं नेम यही पन कौ।। वासी निर्दोष रहैं मधुकर की वृत्ति गहैं काम क्रोध लोभ दहैं मोहादिक तन कौ। भगवत यही भाँति बसैं इन्द्रीगन जुगत कसैं नैनन जुग रूप लसैं बिलसैं सुखधन कौ।।६१।।

श्रीगुरूदेवजू कौ पद-　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　राग-खट, ताल-अद्धा तिताला

प्रात:समय नव कुञ्ज द्वार है ललिताजू ललित बजाई बीना। पौढ़े सुनत स्याम श्रीस्यामा दम्पति चतुर प्रवीन प्रवीना।। अति अनुराग सुहाग परस्पर कोककला निपुन नवीन नवीना। श्रीबिहारिदासि बलि बलि बन्दसि पर मुदित प्रान न्यौछावर कीना।।६२।।

श्रीस्वामी बीठलविपुलदेवजू कौ पद-

प्रात समय आवत जु आलस भरे जुगलकिसोर देखे कुञ्जनि की खोरी। लटपटी पाग छुटे बन्द पिय के प्रियाजू की बैनी बिथुरी छुटी कच डोरी।। ललितादिक देखति जु नैन भरि अति अद्‌भुत सुन्दरवर जोरी। श्रीबीठलविपुल पुहुप बरसत नभ तृन टूटत अब हो हो होरी।।६३।।

आजु बनी लाड़िली प्रीतम सँग आवति ।
सौंधे भीजी लट छूटी पिय के अंस भुज पाछैं सखि सुघर विभासहिं गावति ।। श्रमजल विन्दु निसि के सुख सूचति मोहन बदन सौं बदन मिलावति । श्रीबीठलबिपुल कल रसिकबिहारीलाल आनन्द समुद्र मथि मदन झिलावति ।।६४।।

श्रीस्वामी नागरीदेवजू कौ पद-

प्रात समै दोऊ उठे (हैं) प्रजंक पर सौरभ सरस स्वाद लपटाते। लोचन ललित अरून निसि जागे सुरत अंत पुनि पुनि ललचाते।। अति रसमत्त सुरत सुखसागर वचन रचन कहि मृदु मुसिक्याते। श्रीनागरीदास दम्पत्ति रति विलसि विलसि सुख ये न अघाते।।६५।।

श्रीगुरूदेवजू कौ पद-

जगाइ री (ललिता) भई बेर बड़ी री ।

अलबेली खेली पिय के सँग अलकलड़े की लाड़ लड़ी (री)। तरनि किरन रन्ध्रनि ह्वै आइ लगी निवाई जान सुकर पर तब हों ही ह्वै रही अड़ी (री)।। श्रीबिहारनिदासि रति बरने को कवि जो छबि मो मन मांझि गड़ी (री)।।६६।।

श्रीस्वामी नरहरिदेवजू कौ पद-

सोवत निसि नहिं जानी जात ।

अलसानैं जमुहात प्रियापिय उठि बैठे सज्या परभात ।।
पसरी किरन अरून अति राजत कुञ्ज फूल फल कोमल पात।
कोमल भान उदित तन सोभा स्याम तनै दौऊ लपटात।।
भई (है) प्रकासि सकल द्रुम वेली वन सोभा सोभित सब गात।
चौंकि चक्रित अति होत परस्पर फूले तन मन अंग न समात।।
गावति सखी मधुर सुर मीठे रति जागे की जो है बात ।
श्रीनरहरिदासि गोरीकी छबि पर कोटि मयंक भानु दुरि जात।।६७।।

श्रीस्वामी नवलदासजू कौ पद-

श्रीनागरिदासि सिरोमनि जू मोकों वन वास कृपा करि दीजै।
मँागत हूँ करूना करिकैं तुमहीं दिन देखि सदा सुख जीजै।।
रजधानी भली रज सेये बनैं अजू मोकों रजायसु तौ कछु की जै।
द्वार परे की अब लाज करौ किन दीन दुखी छिन ही छिन छीजै।।६८।।

श्रीस्वामी नरहरिदेवजू कौ पद-

प्रियापिय सुरति सेज उठि जागे ।

घूमत नैन अरून अलसाने मनहु समर सर नागे ।।
सिथिल अंग छूटी सिर अलकैं बदन स्वेद कन लागे।

मानहु बिधु कुसुमनि करि पूज्यो अंग अंग अनुरागे ।।
चितै परस्पर ब्रीड़त दोऊ कामकेलि रस पागे ।
श्रीनहररिदासि अंग छबि निरखत गंड पीक सौं दागे ।।६६।।

श्रीस्वामी रसिकदेवजू कौ पद-

सोभित नैनकमल रतनारै ।
रूप भरे मटकत खंजन से मनौं बान अनियारे ।।
माथे मुकुट लटक ग्रीवा की चित तें टरत न टारे ।
अलिगन मनु झुकि रहे री बदन पर केस तें घुँघरवारे।।
छूटे बन्द झीनौं तन बागौ मुकररूप तन कारे।
ढरकि रही माला मोतिन छकिन छैल मतवारे।।
अंग अंग की सोभा निरखत हरषत प्रान हमारे।
श्रीरसिकबिहारी की छबि बरनत कोटिक कविजन हारे।।७०।।

श्रीगुरूदेवजू के पद-

मन मेरे भजि लै श्रीकुञ्जबिहारी।
सब सुखसागर रूप उजागर अंग संग प्रीतम प्यारी।
वृन्दावन निज कुञ्जमहल के केलि करत भुज चारी।
श्रीबिहारीबिहारिनिदासि लड़ावत जीवन प्रान हमारी।।७१।।

बसिवौ श्रीवृन्दान कौ नीकौ।
छिन छिन प्रति अनुराग बढ़त दिन दरस बिहारीजी कौ।।
नैन श्रवन रसना रस अचवत अंग संग प्यारी पीकौ।
श्रीबिहारीबिहारिनदासि लड़ावत बिछुरत नाहिं रती कौ।७२।।

मैं संग पायौ ओर निबाहू।
रसिक अनन्यनि सौं मन मान्यो अब न बूझि हौं काहूं।।

छाँड़े कूर कृपन कर्मठ सठ जिनके मन न उमाहूं।
मारग विविध बहत बहकावत उपजावत दुख दाहू।
श्रीवृन्दावन धन धर्म राधिका लीने गहि बलबाहू।
श्रीबिहारिदास कौ सुलभ भयौ सुख दुर्लभ अगम अगाहू।।७३।।

अखियाँ लाल की ललचौंही।
इत उत चितै हंसत सकुचत से पुनि बात कहत गहि गौंही।।
नैन श्रवन नासा अवलोकत भाल तिलक दरसौंही।
श्रीबिहारिनिदासस्वामिनी मुख निरखत यह सुख समुझत हौंही।।७४।।

पंचम दिवस

झूमका (पृष्ठ २७ पर देखें)

※

श्रीबिहारीबिहारिनीजू कौ होली महोत्सव
(फाल्गुन शु0 8 से फाल्गुन शु0 15 तक)

प्रथम दिवस

श्रीस्वामीजू कौ पद- राग धनाश्री, ताल-चौताल

दिन डफताल बजावत गावत भरत परस्पर छिन छिन होरी।
अति सुकुमार बदन श्रम बरषत भले मिले रसिक किसोर किसोरी।।
बातनि बतबतात राग रंग रमि रह्यौ इत उत चाह चलत तकि खोरी।
सुनि श्रीहरिदास तमाल स्याम सों लता लपटि कंचन की थोरी।।

श्रीगुरूदेवजू कौ पद- राग, विहाग, होरी ताल-धमार

होरी रसरंगा री खेलत स्याम प्रिया गौरा री।।
प्रेम सहित सखि श्रीवृन्दावन सेवत जल जमुना री।
ढिग ढिग कुञ्जनि कुञ्जनि कूलनि फूल रही फूलवारी।।१।।

सकल सुगंधनि रधंनि लै लै बहत मलय सुखकारी।
छिरकत छुवत सुधाधर पुहुप पराग उड़ावत डारी।।२।।
गावत चैत सुनावति चाँचरि सहचरि अति चतुरा री।
सुनत श्रवन मन मोद भयौ खेलन कौं हरषे श्रीकुञ्जबिहारी।।३।।
कहैं प्रिया मेरे कौ खेलै लाल करैं मनुहारी।
अति सुख में सुख देखि सखी री देत परस्पर गारी।।४।।
खेलत झेलत अति रंग में रंग रहसि बहसि हँसि डारी।
अरून बरन नव कुमकुम के रंग पीक कपोलनि पारी।।५।।
मूलताल-सब अंगचित्र बिचित्र बिहारी बिहारिनि सुरति सिंगारी।
तन मन बारि देति छबि पर तृन तोरति कौतिकहारी।।६।।
निसिदिन यह सुख जीजत पीजत न्याय सुधा पियप्यारी।
मत्त भये युगराज बिराजत मिलत मुदित भुजचारी।।७।।
अति श्रम सिथिल भये दोऊजन तिहि छिन सखी सम्हारी।
श्रीबिहारिनदासि दरसि मुख सुख दिन धन्य पहर पल घारी।।८।।

श्रीस्वामी नागरीदेवजू कौ पद- राग, धनाश्री, होरी, ताल धमार

मेरी सहत रँगीली नागरी यों राजैं स्याम सँग गोरी हो।
दिन दूलह दुलहिन लाड़िली अति बिचित्र बनी यह जोरी हो।।१।।
नव निकुञ्ज सुखपुञ्ज में प्यारी उबटि बदन सिर खोरी हो।
सारी सुरंग स्याम कंचुकी गुही कबरी कुसुम कच डोरी हो।।२।।
तब चित्र चतुर नख सिख कियें दै अञ्जन मृगमद रोरी हो।
खुभी पोति चारि चारि चूरी पग नूपुर की धुनि थोरी हो।।३।।
सुन्दर बर कर दर्पन लियें मुख निरखत कुँवरि किसोरी हो।
जाँचत रति चित चौंपसों नवनागरि नाहु निहारी हो।।४।।

प्यारी नखसिख सुन्दरि मोहिनी मृदु मुसकति हैं मुख मोरी हो।
श्रवत सुधा रसि माधुरी पिय प्रीतम दृष्टि चकोरी हो।।५।।
अंग अंग अनंग उदित भये दै परिरम्भन रस रोरी हो।
सुरति रंग तन मन रंगे गुन गूढ़ ग्रन्थि हँसि छोरी हो।।६।।
मूलताल-दोऊ उमँगि उमँगि रस बिलसहीं घन दामिनि भामिनि भोरी हो।
सब सम्पति कौ सुख सूचहीं यों खेलत है रस होरी हो।।७।।
श्रीबिहारिबिहारिनिदासि कौ सुख बरनै कौ मति थोरी हो।
बलि नागरीदासि दरस सुखै रीझि वारति मन तृन तोरी हो।।८।।

द्वितीय दिवस

श्रीस्वामीजू कौ पद- राग, धनाश्री, ताल ध्रुपद

श्रीराधा रसिक (नव) कुञ्जबिहारी खेलत फाग सब जुवतीजन कहत हो हो होरी। भरत परस्पर कहू की, काहू न सुधि हँसि कें मन हरत मोहन गोरी।। कर सौं करव जोरि कटि सों कटिव मोरि करत नृत्य काहू न रूचि थोरी। श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा फिरत न्यारेई न्यारे सब सखियन की दृष्टि बचावत तकि तव खोरी।

श्रीगुरूदेवजू कौ पद- राग, धनाश्री होरी, ताल-धमार

हमारौ माई लालबिहारी मन हर्यौ जै जै श्रीवृन्दाविपिन बिलास।
नव निकुञ्ज सुखपुञ्ज में फूले बहु भाँतिन सुमन सुबास।।१।।
अलिकुल संकुल गूँजहीं रस लोभी तजि नैकु न जात।
मुदित सिखीकुल नृत्यहीं कूजित कल कोकिल सुरसात।।२।।
त्रिविधि समीर बहै तहाँ सीतल री अति मन्द सुगन्द।
जल कमलनि बन परसि कैं सुखदायक रोचिक रतिबन्ध।।३।।

तरू फल फूल मधुर झिलैं छै रितु बसन्त रहत हित स्याम।
नित नौतन सम्पति सबै सेवत श्रीस्यामा अभिराम।।४।।
और कहौं सुख सुनि सखी संजोगी रस परस बिहार।
प्रेम मगन सन्तत सदा सावधान अंग अंग न सँभार।।५।।
सब गुन रूप अचागरी सेवति अपने अपने भाइ।
दम्पति मुख सुख निरखहीं निसिदिन जात न जानत जाइ।।६।।
कोऊ कर किन्नर साजहीं कोउव कर लीनें कठतार।
कोऊ आवझनि बजावहीं सब मिले है संच गति भेद अपार।।७।।
झाँझ मुरज डफ बाँसुरी बीना मुखचंग उपंग रसाल।
अरू बाजे बहु को गनै जे लिये हैं सुघर सुंदरि नव बाल।।८।।
श्रीललितादिक सखी मिलि चलीं देखन पिय प्यारी कौ अनुराग।
जमुना कूल कदम्बतरू राजत बर-भामिनी सुभग सुहाग।।६।।
पूरन आनँदकन्दिनी करूनानिधि सुखसिन्धु उदार।
रसिक कुँवर पर बरषहीं जब बोलति बचन कुसुम सुकुमार।।१०।।
प्यारी मोहन सौं हँसि कह्यौ आवौ (आवौ) जू मिलि खेलैं फाग।
सुनि मन मुदित उदित भये कौ बरनै कबि तिनकौ भाग।।११।।
मनिकञ्चन की पिचकारी लई है कुँवरि भरि अपने हाथ।
तिनहीं कौं तकि तकि छिरकीं जे अपने प्राननि के नाथ।।१२।।
मोहन दृष्टि दुराइ कैं चले (हैं) अनत तकि औरें घात।
दाव न पावत भरन कौ बहुस्यौ प्यारी छिरकि हँसि जात।।१३।।
छबीले छद्म कछू कियौ और (और) सखी दै आगे ओट।
नख सिख लों सुन्दरि भरी मानौं सचे (हैं) मदन के लूटे कोट।।१४।।
कामिनी कर कटि पट गह्यौ अलक नैननि भयौ मेल।
पान करत मुख माधुरी बाढ़्यौ प्रेम परस्पर खेल।।१५।।

भूषन बषन सबै सनें सौंधे बिबिध बरन बहु मोल।
अरगजा रंग रूचि कीच में पानि परसि हँसि करत किलोल।।१६।।
सखी मंडल मध्य बिराजहीं मानौं नव कमलनि बिच उज्जल हंस।
ठुमकि ठुमकि गति मति हरैं जब धुकि धरत बिमल भुज अंस।।१७।।
सुघर सिरोमनि गावहीं तान तरंग अनंग नचाइ।
हाव भाव उपजत घने उमँग्यौ उर आनँद न समाइ।।१८।।
मृदुमालति कल नवलता नवतमाल अंग अंग अरूझात।
पुलकि पुलकि अंकौं भरैं परिरम्भन चुम्बन न अघात।।१६।।
मूलताल - गौरस्याम तन अति बनें दोउव रँगे हैं प्रेम के पाग।
नील अरून छबि पीत में कौन करि सकै अंग बिभाग।।२०।।
तब निरखि श्रमित मुख सहचरी दोउव धरि राखे उर माँहि।
और निकट निज कुञ्ज में बैठारे करि कुसुमनि की छाँहि।।२१।।
कोउ कर चरन पलोटिहीं कोउव अञ्चल पोंछत मुख वारि।
कोउ छबि पर तृन तोरहीं कोउ प्रेम पीवति जल वारि।।२२।।
कोउ कर स्रक चन्दन लियें कोउव कर लीनें उपहार।
याही सुख सचु खेलिये बहुर्‌यौ बलि कीजै बिसद बिहार।।२३।।
जै जै श्रीहरिदास कृपा करी यथासक्ति गाई रस रीति।
जिनकें यह रस सेइये श्रीबिहारीदास करि तिनसौं प्रीति।।२४।।

तृतीय दिवस

श्रीस्वामीजी कौ पद-

राग, सारंग, होरी ताल-धमार

डोल झूलत बिहारीबिहारिनि रागु रमि रह्यौ।
काहू के हाथ अधौटी काहू के बीन काहू के मृदंग कोउ गहैं तार काहू के अरगजा छिरकत रंग रह्यौ।। डाँड़ी छाँड़े खेल बढ्यौ

जू परस्पर नहिं जनियत पग क्यौं रह्यौ।। श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुञ्जबिहारी को खेल खेलत काहू ना लह्यौ।।

श्रीस्वामी नागरीदेवजू कौ पद-

श्रीगुरू कृपा जथामति बरनौं श्रीवृन्दावन अति राजैं री।
आसपास जमुना रस झूमी सुखद रमित अति भ्राजैं री।।१।।
सखि मृदुल सुबास पुलिन कल झलकत बिमल कमल अति फूलेरी।
नील अरून सित पीत अधिक छबि सौरभ मनमथ मूले री।।२।।
सारस हंस चकोर कुलाहल कूजित कल सुर भारी री।
अति रसमत चलत मधुरी गति लटकनि की छबि न्यारी री।।३।।
कुञ्ज सघन घन नव नाना रँग फूली हित रति सूचैं री।
सम्पति सुख सब सौंज सजैं यों दम्पति अति मन रूचैं री।।४।।
अद्भुत सहत बिबिध निर्मित धर मनिमय मृदु अति सोहै री।
नव कर्पूर रमित रज राजत बरनैं ऐसो कवि को है री।।५।।
सुन्दर सुभग सरोवर नाना सहज रमी सुखदाई री।
मनसिज रंग समूहनि कौतिक रहि जित तित छबि छाई री।।६।।
नृत्तत मत्त मयूरनि झुंडनि बोलत मधुरी बानी री।
कोकिल कल सुर कीर भीर अति कूजित काम कहानी री।।७।।
ललित लता नाना रंग फूली माधुरी कुन्द चमेली री।
चम्पकलता अरू बकुल केवरौं केतुकी कदम्ब सहेली री।।८।।
स्वर्ण जूथिका रूपमञ्जरी कुंजैं बेलि निवारी री।
दौना चम्पौ गुलाब जुही अति फूली सखी फुलवारी री।।९।।
पारिजात केसर जु कल्पद्रुम फलित लालमनि सोहै री।
सौरभ सरस गुच्छ मुक्तनि के झलकत छबि मन मोहै री।।१०।।

अति रसमत्त सुजस अलि गुंजैं स्याम अरून सित पीरैं री।
नव पराग अनुराग त्रिबिध बहै सीतल मन्द समीरैं री।।११।।
छै रितु बसन्त सदा वृन्दावन सेवत सुख मन लीने री।
अपने अपने भाइ भजत सब सावधान चित दीने री।।१२।।
नारिकेलि नव नूत सदा फल नीबू फलित सुपारी री।
ललित लवंग-लता जु इलायची दास्यौ दाख छुहारी री।।१३।।
द्वै द्वै रूप कियें सेवत सखी नाना रति सुख साजें री।
मन्दिर नवलनि मनिमय मण्डल अनंग रंग रति काजें री।।१४।।
सौरभ मृदु सेज्या बहु रंगनि रचि रचि सहज बनाई री।
बिहरत नित्य नवल दोउ प्रीतम कुँवरि कुँवर सुखदाई री।।१५।।
नव नव रंग नये नित साजैं खेलत छिन छिन भारी री।
जो इच्छा मन करत सोई अब जाचैं श्रीकुञ्जबिहारी री।।१६।।
कबहुँक रंग हिंडोरें झूलत गौरस्याम तन राजैं री।
बर किन्नर कठतार बीन डफ रहत सबै सुख साजैं री।।१७।।
गावत चैत परस्पर झुंडनि रंग अनंग बढ़ावैं री।
झूलत फूलत बिपुल बिनोदनि रीझि दुहुन पै पावैं री।।१८।।
कबहुँक कुञ्ज कुञ्ज प्रति डोलैं बोलैं हँसि मधुरी बानी री।
अरून पीत पट लसत सुभग तन देत सकल सुखदानी री।।१६।।
कबहुँक दृष्टि बचाइ सबनि तें रंगमहल दोउ खेलैं री।
दरस परस सुख केलि कलोलनि राग रंग रस झेलैं री।।२०।।
मूलताल-बीरी परस्पर खात खवाबत मधुर मधुर मृदु बोलैं री।
नैन सों नैन मिलाइ छन्दबन्द कर कंचुकि बन्द खोलैं री।।२१।।
परिरम्भन चुम्बन जु अधरमधु पीवत त्रिपित न मानैं री।
प्रमुदित मत्त रहत जु निरन्तर निसिदिन जात न जानैं री।।२२।।

अंगराग अनुराग रँगे दोउ सुरति बिवस जब जानैं री।
श्रीहरिदासी बिपुलबिहारिनिदासि दोऊ उर आनैं री।।२३।।
फेरि सिंगार हार रति साजैं यौं नित नेह बढ़ावैं री।
बलि बलि नागरिदास दरसि सुख प्रमुदित प्रेम लड़ावैं री।।२४।।

चतुर्थ दिवस

श्रीस्वामीजू कौ पद - राग-धनाश्री, ताल-धुपद

श्रीवृन्दावन सहत सुहावनों बना (पृष्ठ १६ पर देखें)

झूलत डोल दोऊ जन ठाढ़े।
हाँकत जोर सहित जैसो जाके डाँडीव गहैं गाढ़े।।
बिच बिच प्रीति रहसि रस रीति की राग रागनीन के जूथ बाढ़े।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुञ्जबिहारी राग ही के रंग रँगि काढ़े।।

पंचम दिवस

श्रीस्वामीजू कौ पद- राग-धनाश्री, ताल-धुपद

झूलत डोल श्रीकुञ्जबिहारी।
दूसरी ओर रसिक राधावर नागरि नवल दुलारी।।
राखे न रहत हँसत कहि कहि प्रिया बिलबिलात पिय भारी।
श्रीहरिदास के स्वामी स्याम कहत री प्यारी अब कैं राखि हा हा री।।

श्रीस्वामी नागरीदेवजू कौ पद- राग, काफी, होरी-धमार

सब सखी मिलि झूमक दैहिं, मेरौ लालबिहारी मन हर्यौ।।
श्रीहरिदास सहज रति बरनौं श्रीवृन्दावन अति रम्य।
श्रीविपुलबिहारिनिदास कृपा बिनु सबके मननि अगम्य।।१।।
कमल कुमुद फूले जल थल सखि सुखद तरनिजा कूल।
सारस हंस चकोर ललित गति लटकि चलत मन फूल।।२।।
नव निकुञ्ज सुखपुञ्ज मनोहर उदित कमल की काँति।
नृत्य करत सिखीकुल फूले कौतिक नाना भाँति।।३।।

द्रुमबेली फूली लता नितही रितु सरद बसन्त।
अद्भुत भूमि रंग राजैं अति सोभा सुखहिं न अन्त ।।४।।
रत कर्पूर सुगन्ध त्रिबिध बहै सीतल मन्द समीर।
अति रसमत्त मुदित कल कूंजित सुक पिक भृंगनि भीर।।५।।
सेवत काम अनन्त कला नित कुञ्जमहल आगार।
लाल रतनमनि मुक्ता झूमत रचित बितान अपार।।६।।
कनक खचित मनि मण्डल पर राजैं कुँवरि संग सुकुँवार।
मृदुमनि श्याम तमाल लता मानौं कनक कुसुम उर हार।।७।।
श्रीललितादिक सखी आई झूमि सब आवझ साजि मृदंग।
एक लियें करताल झाँझ डफ बर बाँसुरी मुखचंग।।८।।
एकनि कर कठतार अधौटी मुरज रबाब उपंग।
एक लियें किन्नर कर बीन बजावत गावत तान तरंग।।९।।
एक अरगजा कनक कलश भरि सौंधैं सरस रसाल।
एकनि करि पिचकारी एकनि कर बुकाबन्दन अरून गुलाल।।१०।।
एक लियैं बीरी कर कन्दुक अरू कुसुमनि के हार ।
झूमत सुघर सुनावत चाँचरि सप्त संच सुरतार ।।११।।
प्यारी हँसि मोहन सौं बोली आवौं जू मिलि खेलैं फाग।
सुखद बचन सुनि स्याम सहेलिन बाढ्यौ अति अनुराग।।१२।।
ललिता लै पिचाकारी दीनी श्रीस्यामाजू कौं आइ ।
छिरकति भरत भाँवते पिय कौं रहसि बहसि हसि जसइ।।१३।।
मोहन भरि पिचकारी लै कर छलबल तकत उपाव ।
नागरि नवल प्रबीन प्रिया ये क्योंहूँ न पावत दाव ।।१४।।
दृष्टि बचाइ अलि आगे लै बूकाबन्दन अरून गुलाल।
आइ अचानक भरि प्यारी हँसि होरी(है)बोलत लाल।।१५।।

कामिनि कटि पीताम्बर कर गहि कहति बचन मुसकाइ।
बहुरि भरौ चपल नटनागर नख सिख छबि रहि दाइ।।१६।।
भूषन बसन सबै सनें (और) कुमकुम सौंधे गुलाल ।
निरखि हरखि सुख प्रेम उमँगि गुन गावत सखि नव बाल।।१७।।
मूलताल-गौरस्याम तन रूचिर मनोहर चितवत बिबि मुख ओर।
करत सुधारस पान परस्पर लोचन त्रिषत चकोर ।।१८।।
दरस परस रसमत्त भये दोउ बिलसत हँसत अनंग ।
अँग अँग हरषत सुख बरषत खेलत भरि रस रंग ।।१६।।
राग रंग रस सुख बाढ़्यौ अति सोभासिन्धु अपार।
बिपुल प्रेम अनुराग नवल दोउ करत बिहार अहार ।।२०।।
श्रीवृन्दाविपिन बिनोद करत नित छिन छिन प्रति सुखरासि।
कामकेलि माधुर्य प्रेम पर बलि बलि नागरिदासि।।२१।।

षष्ठ दिवस

श्रीस्वीमीजू कौ पद- राग-धनाश्री, ताल -धुपद

एक समय एकान्त बन में डोल झूलत श्रीकुञ्जबिहारी।
झोटा देत परस्पर सब मिलि अबीर उड़ावत डारी ।।
कबहूँक वे उनके वे उनके हौं दुहँन की एक सारी ।
श्रीहरिदास के स्वामी समा कुंजबिहारी बाढ्यौ रंग भारी ।।

श्रीस्वामी नागदेवजू कौ पद- राग-काफी, धनाश्री हारी, ताल-धमार

रूपअनुपम मोहनी मोहै कुँवर किसोर ।
लाड़ गहेलरी रंग राचे लाल ।।
बदन सुधा ससि श्रवत री पीवत नैन चकोर।।१।।

नैन कमल मुख कमल के चरन कमल कर लाल ।
तन मन फूले कमल री मोहन मुदित मराल ।।२।।
हासि कसुम जोवन लता अलि आसक्त तमाल ।
बचन रचन सुर सब्द के मृग मन मोहे रसाल ।।३।।
ये घन तुम दुति दामिनी मिलि बरषहु प्रेम सुहाग ।
आलस क्यों बलि कीजिये हिलमिल खेलौ फाग ।।४।।
सुनत भयो चितचाव री सुघर सिरोयनि जान ।
सहचरि संच सुरन लियें करत मधुर कल गान ।।५।।
श्रीकुञ्जबिहारी खेलहीं प्रेम भरे रस रंग ।
बूकाबन्दन मेलहीं कुमकुम कुसुम सुरंग ।।६।।
मदन मुदित अँग अंग री करत सुखतद कल केलि ।
उर कर बर परसें हँसें जुगल नवल रस झेलि ।।७।।
पियत सुधाधर माधुरी चित्रित पीक कपोल ।
अंग अंग अनुराग री कहत मधुर मृदु बोल ।।८।।
मूलताल-राग रंग अति रँग रह्यौ श्रीहरिदास बिनोद।
श्रीबिचित्रबिहारिदास री बिपुल बढ़ावत मोद ।।९।।
छिन छिन प्रति रति साजहीं कुञ्जसदन सुखरासि ।
मधुर प्रेम रस बिलसहीं बलि बलि नागरीदासि ।।१०।।

श्रीस्वमी नागरीदेवजू को पद- राग-धनाश्री होरी, ताल-धमार

मेरी रसिक रँगीली नागरी मिलि खेलत पिय सँग होरी हो।
सखि नव निकुञ्ज सुखपुञ्ज में अति राजत अद्भुत जोरी हो।।१।।
अरून पीत पट कचुकी तन निर्तत अति रँग साजैं हो।
सखि भूषन रव सुर संच सौं मानौं मृदंग ताल ढफ बाजैं हो।।२।।
अलि आनन्द विराजहीं नव कोकिल कल सुर गावैं हो ।
सखि द्रुम बेली फूली लता नव पुहुप पराग उड़ावैं हो।।३।।

सौरभ सरस पवन बहै नव रितु बसन्त सुखकारी हो।
सखि अति आनन्द उमँगि ढरैं रस बरषत कुञ्जबिहारी हो।।४।।
अँग अंग अरगजा रँग छिरकहीं नव नेह नयौ अनुरागौ हो।
सखि मुदित परस्पर खेलहीं अति सुरत रसीली फागौ हो।।५।।
हावभाव भूभंगनी अति चौंप बढ़ी चित चारौ हो ।
बदन विलोकत माधुरी मची मौज मनोजनि मारौ हो ।।६।।
कर कमलनि परसैं हँसैं उर आनन अलक सँभारौ हो ।
जुगल नवल रसपान के भये विवस बसन न सँवारौ हो ।।७।।
सुरति रंग अँग रगमगे अति भ्राजत कुँवरि किसोरी हो ।
सँग सुखदायक सहचरी रीझि रीझि कहत हो हो होरी हो।।८।।
मूलताल-इति रसमत्त मगन रहैं नित नौतन नित्त बिहारौ हो।
छिन छिन प्रति रस बिलसहीं मृदु रस जस करत अहारौ हो।।६।।
जै जै श्रीहरिदास प्रताप तें बलि बिपुलबिहारिनिदासी हो।
बलि नागरीदास दरस सुखै सेवै सन्तत प्रेम प्रकासी हो ।।१०।।

सप्तम दिवस

राग-धनाश्री, ताल-चौताल

श्रीस्वामीजू कौ पद-

झूलत डोल दुलहिनी दूलहू ।
उड़त अबीर कुमकुमा छिरकत खेल परस्पर सूलहु ।।
बाजत ताल रबाब और बहु तरनि तनैया कूलहु ।
श्रीहरिदास के स्वामी श्यामा कुञ्जबिहारी कौ अनतव नाहिनै फूलहु।।

श्रीस्वामीनागरीदेवजू कौ पद-

चल सखि देखन जाहिं (पृष्ठ १५ पर देखें)

अष्टम दिवस

श्रीस्वाजू को पद- राग सारंग, होली ताल-धमार

(सोई) डोल झूलत श्रीविहारीविहारिनि पुहुपबृष्टि होति।
सुरपुर पुर गन्धर्व और पुर तिनकी नारि देखति वारति लर मोति।।
घेरा करत परस्पर सब मिलि कहूँ न देखी ऐसी जुवती जोति।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुञ्जविहारिनि सादा चुरी खुमी पोति।।

श्रीस्वामी नागरीदेवजू को पद-

श्रीस्यामाप्यारी कुञ्जबिहारी राजत अद्भूत जोरी हो।
अति रसमत्त परस्पर बिहरत राजत अद्भुत जोरी हो।
अति रसमत्त परस्पर बिहरत खेलते हैं रस होरी हो।।१।।
सोंधे सरस अबीर अरगजा छिरकति कुँवरि बिसोरी हो।
हावभाव चितचाव बढ़्यौ अति बूकाबन्दन रोरी हो।।२।।
रतन खचित पिचकारी हाथनि भरि लई मृगमद रोरी हो।
वे उनके वे उनके ताकत मुसकति हैं मुख मोरी हो।।३।।
कोउ करतार कोऊ कर किन्नारि संच सुरति गति थोरी हो।
बीना मुरज पखावज बाजत बिबिध डफन की जोरी हो।।४।।
कोकिल कीर अलापनि में सुरताल देत गुन गोरी हो।
लेत अतीत अनागत नागरि नृत्य करति मुखमोरी हो।।५।।
मूलताल-राग रंग सबकौ मन करषत भई अबिचल मति भोरी हो।
तन मन प्रान करौं न्यौछावर या छबि पर तृन तोरी हो।।६।।
श्रीहरिदासी इष्ट उपासी या सुख में मति मोरी हो।
श्रीनागरिदासि की दासि परम रूचि जैसें चन्द चकोरी हो।।७।।२।।

श्रीस्वामीरसिकदेवजू कौ पद- राग-काफी होरी, ताल धमार

हो हो होरी खेलैं साँवरौ अपनी कुँवरि लड़ैती साथ।
ललिता चोंप लगाय दुहूँ दिसि गहि पकराये हाथ।।
प्रेम भरे जू फाग दोऊ खेलैं भई है दुहूँ दिसि भीर।
आनँद उमगि लई करजेरी धरत निमिष नहिं धीर।।
भरि पिचकें मानौ सुरति की सजनी छुटत दृगन की कोर।
उड़त अबीर गुलाल फूल सतभाइ अतर के बोर।।
मन्द मधुर बाजे बजैं (और) बाढ़्यौ अति उत्साह।
छाइ रह्यौ अनुराग परस्पर देत नेक नहिं चाह।।
मूलताल-इहि बिधि खेल मच्यौ कुञ्जनि में रँगे प्रेम के रंग।
यह सुख निरखत सखी सबै दुरि रसिक बिहारिन संग।।३।।

श्रीस्वामी ललितकिसोरीदेवजू को पद- राग-धनाश्री होरी, ताल-तिताला

एरी सखी नित्यबिहारनि बाल बरषत रूप रसाल री। (रंगहोरी)
एरी सखी चंचल नैन बिसाल निरखत लाल निहाल री।।
एरी सखी अद्‌भुत सुख की रासि मधुर मधुर मृदु हास री।
एरी सखी हुलसि हुलसि लड़कात आनँद उर न समात री।।
ऐसी सखी अंस अंस भुज देत अंकौ भरि भरि लेत री।
एरी सखी मिलत मिलत न अघात रोम रोम फूले गात री।
एरी सखी बाढ़्यौ है रंग अपार उपजत कोटिक मार री।
एरी सखी परे हैं प्रेम रस जाल प्रान प्रिया उर माल री।।
ऐरी सखी इन से येही आहि पटतर दीजै काहि री।
ऐरी सखी ललित सु केलि अभंग श्रीरसिकसखी अंग संग री।।४।।

ताल-तिताला-

अतिरंग बिहारिनि बाल बरषति लाल पै।
इकटक निरखत सहज लाड़िली भाग्य लिख्यौ है भाल पै।।

चूमि चूमि तरूवा हिये लाये माथे धरे है बिसाल पै।
ललित प्रिये या छबि पर बारी रीझि रसिक सु ख्याल पै।।५।।

प्यारी सहजहिं मृदु मुसिक्याय मोहन बस करे।
जब अनुराग भरी ढरि हित सौं बिबस भये अंकौ भरे।।
मानत भाग्य धन्य धन्य हमहीं आजु प्रिया अपने करे।
ललित केलि निसिबासर बिहरत रसिकसखी के हिये अरे।।६।।

नित कुञ्जबिहारनिबाल खेलत लाल सौं।
महा प्रेम भरि भरि पिचकारी छिरकत दृगन बिसाल सौं।।
सहज सनेह सोंधे में सोंधी रंगरँगीले हाल सौं।
ललितप्रिये अँग सँग सुख बिलसत अद्‌भुत चाह रसाल सौं।।७।।

रसमत्त बिहारिनिबाल मो हिय में रहौ।
हुलसि हुलसि आनन्द महा है लपटि लपटि मो तन चहौ।।
रोम रोम सुख पाइ छबीले हँसि हँसि कैं बातें कहौ।
श्रीहरिदासीजू रसिककिरोमनि तन मन मिलि यह सुख लहौ।।८।।

श्रीस्वामी ललितमोहिनीदेवजू कौ पद- राग-काफी, ताल धमार

होरी आई रंग भरी खेलत तन सुकुमार।
अबीर गुलाल के बादर छाये बरषत धार फुहार।।
उमँगि उमँगि बरषत रँग भारी छुटत कर पिचकार।
श्रीललितमोहिनी के हित बिहरैं वे उनके वे उनके हार।।९।।

श्रीस्वामी ललितकिसोरीदेवजू कौ पद-

रँग होरी रँग होरी खेलत स्यामा गोरी।
अति लड़काइ धरी भुज पिय पर रस बरषत घनघोरी।।
प्रान प्रान मिलि तन मन फूले दृष्टि दृष्टि सौं जोरी।
श्रीललितकिसोरी के हित बिहरत प्रीति बढ़ी दुहुँ ओरी।।१०।।

श्रीस्वामी सरसदेवजू कौ पद-

मतवारे री तेरे छेल छबीले नैना।
घूमि रहे अलबेले अलौकिक करत कटाक्षनि सैना।
चपलारे अनियारे भारे कजरारे सुख दैना।
श्रीसरस प्रिया बस भये हैं बिहारी कहि कहि साधू बैना।।११।।

श्रीस्वामी भगवतरसिकदेवजू कौ पद -

नवकुञ्ज सदन में आजु रँगीली होरी।
इत स्यामा उत स्याम मनोहर खेलत उमँगि न थोरी।
छल बल घात लगावत मोहन अंग बचावत गोरी।
सावधान दोउ सुघर सिरोमनि अपनी अपनी ओरी।।
कोककला कलकेलि परस्पर जोवन जोर किसोरी।
चतुर खिलार लाड़िली लालन तुम जिनि जानौं भोरी।।
मूलताल-हा हा करौ परौ पायन अब ना चलि हैं बरजोरी।
भगवतरसिक उदार स्वामिनी दै हैं सर्वसु छोरी।।१२।।

श्रीस्वामीरसिकदेवजू कौ पद- ताल-तिताला

होरी खेलन स्याम हुलसि छबीली आई।
अबीर गुलाल लिये नैननि में आजु करत मन भाई।।
बाजे बजत दुहुँ दिसि नीके मनमथ मोद बढ़ाई।
छबि तरंग छूटत पिचकारी भृकुटिन मार मचाई।।
गावत गीत रस रीति जीति कें पुलकि किलकि सुखदाई।
श्रीरसिकबिहारनि की छबि निरखत ज्यों दामिनि घन छाई।।१३।।

श्रीस्वामी पीताम्बरदेवजू कौ पद-

पिया अब कैं तौ बिपुन निरन्तर हो हो हो हो होरी है।
श्रीललिता हम तुमकौं दीनी रसिक हमारी ओरी है।।

कौंधौ जीतै कौधौं हारै पैज बदी ना थोरी है।
पीताम्बर तुम धरौ दाव पै जीती कुँवरि किसोरी है।।१४।।

श्रीस्वामी राधाशरणदेवजू कौ पद-

होरी रंग महल में खेलत हैं पियप्यारी।
ललिता भरि भरि देत उमगि सों केसरि रंग पिचकारी।।
कमल करनि भरि बूकाबन्दन घालत जब सुकुमारी।
मूठि बचावत नवल छबीलौ श्रीराधारसिक बिहारी।।१५।।

नयौ होरी कौ खिलार आजु घात में आयौ।
झपटि फैंट कर गह्यौ लाड़िली गाल गुलाल लगायौ।।
मन्द मन्द मुसिकात छबीली नैननि सैन जनायौ।
छीन लियौ पट पीत मुरलिका दै दै ताल नचायौ।।
संग सखी ललिताहरिदासी हँसि हँसि मोद बढ़ायौ।
श्रीराधारसिक नव कुञ्जबिहारिनि ऐसौ फाग मचायौ।।१६।।

राग-काफी होरी, ताल-चौपाल

सुन्दरबर नवकिसोर खेलत रंग होरी।
प्यारी संग नवलबाल झोरिन लीनें गुलाल कञ्चन पिचकरी हाथ केसरि रंग घोरी।। रोरी मुख मलत धाइ पीताम्बर लियौ छुड़ाइ ताल दै नचाइ मुदित बिहँस मुख मोरी। हँस-तलसत चन्द्रबदन बारौं छबि कोटि मदन श्रीराधिका प्रसाद सखी निरखत तृन तोरी।।१७।।

श्रीस्वामी नागरीदेवजू कौ पद-

अद्धा-तिताला

हो हो होरी खेलै री मोहन अपनी प्रानपिया सँग सोहन।
गावत तान तरंग परस्पर हँसत भेद भरि भौंहन।।
भरि सौंधे सुरंग अबीर अरगजा छिरकत रीझि रिझौहन।
श्रीनागरीदास रसमत बिहारी बिहारनि मुख छबि जौहन।।१८।।

श्रीस्वामीराधाप्रसाददजू कौ पद — होरी तताला

ललित नवकुञ्ज में होरी पिया सँग खेलती गोरी।
सप्त सुर साज सब साजैं बाँसुरी बीन डफ बाजैं।।
मान भरि तान सौं गावैं रँगीले दोऊ फाग सरसावैं।
झमकि पिचकारियाँ घालैं धाइ रोरी सौं मुख मालैं।।
करत जब लाल बरजोरी झपटि गहि पीतपट गोरी।
बिहँसि हँसि रंग सौं बोरी परस्पर करत झकझोरी।।
भीजि रस रंग सुखरासी रसिकवर संग हरिदासी।
श्रीराधाप्रसाद बलिहारी बसौ इन नैन पियप्यारी।।१६।।

श्रीस्वामी रसिकदेवजू कौ पद- — राग-परज, धीमा-तिताला

रंग महल में आजु रंग होरी हो।
फाग खेलन में बनी है बना की है रही पट झकझोरी।।
प्रमुदित नारि गुलाल उड़ावति गारी गावति चहुँओरी।
दूलह श्रीरसिकबिहारीजू सुन्दर दुलहिन कँवरि किसोरी।।२०।।

श्रीस्वामी रूपसखीजू कौ पद- — राग-बहार, होरी-धमार

होरी खेलैं श्रीराधाजू प्यारी लियें कर रंगभरी पिचकारी।
अञ्जन दै दृग कञ्जन ले खञ्जन लजत बिचारी।।
लहँगा सुरँग कंचुकी अद्‌भुत तनसुख सोहत सारी।
अंग अंग आभूषन राजत मोतिन माँग सँवारी।
मूलताल-सहचरि जंत्र बजावति गावति गति उपजावति न्यारी।
ललित रूप निरखत निसिबासर तन मन अति हितकारी।।२१।।

श्रीस्वामी ललितकिसोरीदेवजू के पद - — ताल-धमार

तन मन मौज मनोज भरी प्यारी पिय संग खेलति होरी।
चोवा चन्दन अरगजा के रँग भरत ढुरत दुहुँ ओरी।।
गज्जन करत मीन मृग नैनी लखी बस होत बिहारी।

अँग अँग सुख रूख लै परसत हँसत लसत मुख मोरी।
श्रीहरिदास ललित अद्भुत छबि निरखि हरषि तृन तोरी।।२२।।

राग-विहाग, ताल-तिताला

श्रीबिहारीबिहारिन की री मोपै यह छबि बरनी न जाइ।
कुञ्ज महल में होरी खेलैं जाके अँग अँग रंग चुचाइ।।
तन मन मिलैं झिलैं मृदु रस में आनँद उर न समाइ।
श्रीहरिदास ललित छबि निरखत सेवत नव नव भाइ।।२३।।

श्रीस्वामी पीताम्बरदेवजू कौ पद- राग-पीलू, ताल-धमार

अबकैं फाग रसिक सुख दीनौं।
तन सुगन्ध की मूक झूक भरि दृग गुलाल कर लीनौ।।
बाजे अंग संग सब बाजत राग बारनै कीनौ।
मुसिकनि रंग सुरंग भरे अति पीताम्बर रँग भीनौ।।२४।।

श्रीस्वामी रूपसखीजू कौ पद- राग-धनाश्री, होरी-तिताला

प्यारी पिय खेलैं होरियाँ।
हित सौं सरस दुति अरस परस मिलि नैन सैन चित चोरियाँ।।१।।
छबि तरंग छूटै पिचकारी और उर अनुरागी झोरियाँ।
अधर पान नव रंग गुलाली अँचवत प्रीतम गोरियाँ।।२।।
ललित लाल ललना दोऊ परसैं कर कटि जोरियाँ।
श्रमकन बदन मदन रन माते कल किसोर वर जोरियाँ।।३।।
बजत किंकिनी कंकन नूपुर छुटी अलक अरू डोरियाँ।
केसरि प्रीति नेह सौंधौ सुठि बन्द कुचुंकी छोरियाँ।।४।।
अति सुकुमार सनैं सिज्या पर छिन-छिन रति निसि भोरियाँ।
कुञ्जमहल मनिमय धरनी सौं अलि सुगन्ध कै डेरियाँ।।५।।

दम्पति श्रीवृन्दावन राजै अति उदार सु किसोरियाँ।
अति मिलि अपने अपने पन चलत तकत बन खोरियाँ।।६।।
अनिमिषि इकटक निरखि बिहारैं बारति है त्रन तोरियाँ।
झलकत रूप अमित सोभा के प्रतिबिंबित चहुँ ओरियाँ।।७।।
रंग हो हो हो हो होरियाँ।।२५।।

श्रीस्वामी भगवतरसिकदेवजू के पद -

एरी हेली अलक लड़ैती के सँग अलक लड़ैतो खेलहीं । रंग होरी
एरी हेली पिय पिचकारी प्रेम उमगि रँग रेलहीं।।
एरी हेली प्यारी (जू) के अति अनुराग बूकाबन्दन मेलहीं।
एरी हेली डफ किंकिनी कठतार बलया बाजत केलहीं।।
एरी हेली कुटिल कटाक्षनि मार करत दुहूँ दिसि झेलहीं।
एरी हेली भगवत रसिक रसाल सुरति सुधानिधि हेलहीं ।।२६।।

बिहारिनि रंग सौं आई । बिहारी उमगि उर लाई ।
भई रस रीति मन भाई । मनौ निधि रंक ने पाई ।।१।।
करैं दोऊ प्रेम की बतियाँ। हरैं मन नैंन बहु भातियाँ।
न जानैं जात दिन रतियाँ । हँसैं बिलसैं सुभग थतियाँ।।२।।
अनंगनि रंग बरसावैं । कुसल रस कोक सरसावैं।
कपोलनि करनि परसावैं । नयौ नित नेह दरसावैं ।।३।।
छके रहैं रुप रस माहीं । पलक पलहुँ लगतनाहीं ।
विवस अंसेनि दियैं बाहीं। लसैं नव कुञ्ज परछाहीं ।।४।।
कनकबेली मनौ फूली । लपटि तरू स्याम सौं झूली।
किधौं घन दामिनी भुली। कि भगवत सुकृत अनुकूली।।५।।२७।।

अक्षय तृतीया : चन्दन- बन्दन महोत्सव

श्रीगुरूदेवजू के पद- राग-ललित, ताल-धीमा तिताला

चन्दन बन्दन की तन सोभा ।
मानहुँ निसि नक्षत्र प्रगटे घन बिमल बसन बिच ओभा ।।
करि सिंगार सहचरि लै आई सुख देखन के लोभा ।
श्रीबिहारिदासि स्वामिनि मुख निरखत काम विवस चित चोभा।।१।।

पिय प्यारी जू चन्दन चित्र कियें ।
मानहुँ काम प्रेम के अंकुर सींचत दृष्टि दियें ।।
अति अभिलाष लाल ललना मिलि सीतल होत हियें।
श्रीबिहारिनिदासि दंपति दुलरावत यह सुख सखी जियें।।२।।

श्रीस्वामी किसोरदासजू के पद-

चन्दन चौंप तें घिस लाई ।
परसत बिबस भये भरि लोचन निरखि न सकत अघाई।।
कहत भलें जू भलें बर भामिनि भुज भरि भवन बसाई।
श्रीदासकिसोर प्रकास परस्पर फूली अंग न माई ।।३।।

चन्दन चित्र बनायें सोभित भामिनि पति प्यारे ।
अति बिचित्र दोउ मित्र मनोहर सुन्दर नवल दुलारे।।
तैसिये प्रेम सखी अनुरागिनि नख सिख सुखद सँवारे।
श्रीदासकिसोर परस्पर प्रीतम टरत नेकु नहिं टारे ।।४।।

श्रीस्वामी पीताम्बरदेवजू कौ पद-

री हौं रीझि चित्र कियें चन्दन के ।
सारी सिर सँवारी प्रीतम अँगिया पर बन्दन के ।।
बागौ पाग श्री रसिक प्रिया तन सांवल सहचरि गीत कुन्दन के।
श्री रसिक प्रिया पीताम्बर दोऊ रंग रँगे छन्दन के ।।५।।

श्रीस्वामीजू कौ पद- राग-विलावत, ताल-चौताल

हरि के अंग कौ चन्दन लपटानौं तन तेरे देखियत जैसें चोली।
मरगजे अभरन बदन छिपावत छिपै न छिपायें मानो कृष्ण बोली।।
कहुँ अञ्जन कहुँ अलक रही खसि सुरति रंग की पोटैं खोली।
श्रीहरिदास के स्वामी स्याम मिलत बिहारिनिहार न रह्मौकंठ बिच ओली।।६।।

श्रीस्वामी किसोरदासजू के पद -

चन्दन सिंगार करि मृगमद बिन्दु भाल केसरि की खौर गौर साँवल ललाट पर। कमल महल मधि तलप मृदुल तन बहत पवन मन्द सौरभ सनेह भरि। उदित उसीर अति अतर सुगन्ध नीर छूटत फुहारे तीर बाहुन सों बाहु अरि। अमृत पिवात प्यात राग रागिनी मिलात श्रीकिसोरी किसोरदास नेकु न सकत टरि।।७।।

ग्रीषम रितु हित जानि प्रानपति छिरकत छींट लगावत चन्दन।
चन्दन पावस वारि खौर कर कमल माल पहिराइ सुगन्धन।।
अरगजा अतर घोरि करतूरी चित्रित चोली रचित सुछन्दन।
अति उदार रिझावर कहत अब दासकिसोर निरखि सुछन्दन।।८।।

श्रीस्वामी पीताम्बरदेवजू कौ पद- राग'भैरवी, ताल-अद्धा तिताला

एरी कहुँ देख्यौ री चन्दन चोलना।
गौरांगी के उर बर राजत नीलमनिन कौ ढोलना।।
सकल सिंगार करौं न्यौछावर नैन निरखि मुख बोलना।
रसिक प्रिया पीताम्बर दोऊ राजत सहचरि ओलना।।६।।

श्रीगुरूदेवजू के पद- राग-पीलू, ताल-धमार

फूल फब्यौ सिरमौर सिंगार कौ।
सेवत कोटिक काम कला अँचला चल चौंर मनौं छत्र ढार कौ।
नासिका नैन सुबैन श्रवन सभा कुच उच्च सुभाव उदार कौ।

उरगे हरि यों ढरि आपुही आइ रहे गहि पाँइ अहार बिहार कौ।
श्रीकुञ्जबिहारिनि राज बिराजत फूल फब्यौ सिरमौर सिंगार कौ।।१०।।

राग, खम्माच, ताल-चौताल

श्रवननि फूल फूले फूल सौं धरति हैं।

अलबेली ये बातैं अलबेली ये लाल की घातैं गनी न परति मोपै मननि हरति हैं।। यह मैं जिस में जानी रसिक सुराजरानी लालहिं विवस भये अंक में भरति हैं। देखि श्रीबिहारिनिदासि अपने सुकृत हास सखिन के नैननि कौं सुफल करति हैं।। री फूल फबि रह्यौ अवतंसनि सोहत सुठि श्रवननि फूल फूले फूलसों धरति हैं।।११।।

फूलनि की सारी प्यारी पहिरें तन।

फूलन की कंचुकी फूलन की ओढ़नी अंग अंग फूले फूल ललना के मन।। फूलन के हार उर फूलन की माला फूलन के आभरन केस गूँथे फूल घन। फूलन के हाव भाव फूलन के चोज चाव बिबिध बरन फूल फूले श्रीवृन्दावन।। फूली फूली सखी आई बीनि बीनि फूल लाई पञ्चम सुर सुहाई रचित वितान गन। फूल सों लाड़िली पाई फूल सों लाल लड़ाई श्रीबिहारिनि दासि गाई फूले फूले प्रेम पन।।१२।।

फूलन की सारी चोली फूलन कौ लँहगा।

फूलन की पाग बाँधे फूल कर बान साधे फूलन कौ उपरैना मोल माई मँहगा।। फूलन की सेज सोहै फूल बैठे मन मोहै फूलसौं जामिनी जाम हौं न जानौं कहँगा। श्रीबिहारिनिदास फूली गावति रस में झूली और फूल इहि फूल सब छबि छँहगा।।१३।।

राग-विहागरी, ताल-अद्धा तिताला

फूले री फूल बसीले तन में सब इनहीं के मन की फूल।
नैन कमल मुख कमल सखी कुच कमलनि ऊपर मनहु अलक अलि भूल।। चरन कमल कर कमलनि पूजत फूल सिथिल दुकूल। श्रीबिहारिनिदासि नव कुञ्ज पुञ्ज में झूलत गहि भुज मूल।।१४।।

नव निकुञ्ज मन्दिर में ए फूल फूले री श्रीवृन्दावन।
जुगल नवल मुख कमल बिराजत गौर बरन सँावल तन।।
सरस पुलिन सेवत सिज्या सखी उपजत कोटि मदन मन।
झूलत फूलत प्रेम परस्पर सौरभ स्वास मलश पवन।।
महामाधुरी पीवत नैनन अलि सहज सनेह सुख सदन।
श्रीबिहारिनिदास रसिकन की जीवन सन्तत सुखद धनी धन।।१५।।

श्रीस्वामी सरसदेवजू कौ पद-

गोरे तन में प्रतिबिंबित फूल बीनत लालबिहारी।
जब जब हाथ परत न तबहीं (यौं) हँसि जात हैं प्यारी।।
अरबराइ अंकौ भरति हैं छिन छिन कर मनुहारी।
सुरति बिबस बिहरत दोउ प्रीतम श्री सरसदास बलिहारी।।१६।।

श्रीस्वामी नागरीदेवजू कौ पद-

राग, खम्माच, ताल-तिताला

फूल सों सोहति अति स्यामा सुकुमारी।
फूलन कौ साज समाज आजु बन्यौ फूल सौं लड़ावत रसिकबिहारी। फूली जहाँ तहाँ कुञ्ज मधुप करत गुञ्ज फूले जस गावत कोकिल सुक सारी। श्रीनागरिदास बारी फूले फिरत बिहारी फूली सब सखी देखि जाति बलिहारी।।१७।।

फूलनि के हार डोर फूलनि की माला। फूल सौ रसिक नव रचित रसाला। फूलन के अभारन फूल गूँथे केस घन। फूलन की सारी चोली फूली नवबाला।। फूलनि की सेज बनी फूल बैठे धन धनी। फूलनि के महल बिचित्र विसाला।। फूल सों बिलास हास फूली श्रीनागरीदासि, फूलनि की छबि देखि भई हौं निहाला।।१८।।

श्रीस्वामी ललितकिसोरीदेवजू कौ पद- राग-जोबिया आसावरी, ताल-धमार

फूल महल फूले पिय प्यारी।
फूली सेज फूल पुनि बरसत फूले फूल भये हितकारी।।
फूलकी मुसिकनि चितवनि फूल की फूलि-फूलि अंसनिभुजधारी।
फूली ललित फूल लखि फूलनि फूलि फूलि फूलनि पर वारी।।१६।।

श्रीगुरूदेवजू कौ पद- राग-खम्माच ताल-तिताला

देखि री देखि सखी कौतिक कुञ्ज खिरकी।

कुसुम अनेक रंग रूचिर सेज्य सुरंग सीतल बहत मन्द सुगन्ध समीर की।। खेलत सुन्दरी स्याम अंग अंग अभिराम ग्रीषम समयो जानि जमुना नीर छिरकी। श्रीबिहारिनदासि वारी जय श्रीस्यामा सुकुमारी सीत भीत भई प्यारी, पिय हिय हिरकी।।२०।।

श्रीस्वामी नागरीदेवजू कौ पद- राग-स्याम कल्यान, ताल-तिताला

एरी नवल नव रंग सों बैठे भाव यों बनि बैठे फूलनि की नाव। अद्‌भुत छबि फबि रही परस्पर संग सहचरि यों जगमगै जटित जराव।। बिमल जमुना जुगराज बिराजत मानो फूले फूल चित चाव। यह कौतिक जल बिहार देखि दासिनागरी गुन निधान, नव नागर उपजत नव नव भाव।।२१।।

गुरू-पूर्णिमा : पावस महोत्सव

श्रीगुरूदेवजू के पद- राग-ललित, ताल-धीमा तिताला

श्रीगुरू सेवत सबै सहाइ।
ज्यों जल मूल दियें फल फूलनि उमगि चलत अरूनाइ।।
साधन सिद्ध होत ताही छिन भ्रम तम श्रम नसि जाइ।
तिनसों प्रीति प्रतीति बढ़त छिन ही छिन सहज सवाइ।।
वृन्दवन घन नवनिकुञ्ज दम्पति सम्पति (ये) सुखदाइ ।
बिहारिदासि (श्री) हरिदास कृपा तें हस्तामल बिमलाइ ।।१।।

सतगुरू गोबिंद वैद बिहारी ।
दीनों मधु मथि प्रेम सु औषधि हर उपाधि उपचारी।।
नेंकु बदन दरसैं दुख जानत बिनु परसें कर नारी ।
काम कुरोग ग्रसित संसृत मन तृषना हरी हमारी ।।
अति निरपेक्ष उदार कहावत सन्तत सब सुखकारी ।
श्रीबिहारीदास से हुते मृतक की प्रगट प्रतिज्ञा पारी ।।२।।

राग- विलावल, ताल-चौताल

गुरून कौ गुरू श्रीहरिदास आसुधीर कौ ।
सन्मुख भयें अभय कीनें निजु जन जानि जिन जिनके मन सन्देह भ्रम भीर कौ।। साघन सिद्धान्त सब कहत कवि महन्त भजन एकान्त रस हंस नीर क्षीर को। निपट नित्यविहार रसरीति कौ सिंगार ऐसौ को उदार उपकारी पर पीर कौ।। रसिक अनन्यनि भावे श्रीमुख साँवरौ गावै गुरून कौ गुरू श्रीहरिदास आसुधीर कौ।।३।।

श्रीस्वामीजू कौ पद-   राग-मल्हार, ताल-चौताल

ऐसी रितु सदा सर्वदा जो रहे बोलत मोरनि ।
नीके बादर नीके धनुष चहुँदिसि नीकौ श्रीवृन्दावन आछी नीकी मेघनि की घोरनी।। आछी नीकी भूमि हरी हरी आछी बूढ़नि की रेंगनि काम किरोरनि। श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कैं मिलि गावत राग मल्हार जम्यौ री किसोर किसोरनि।।४।।

श्रीगुरूदेवजू को पद-

हरी हरी भूमि अरून बूढ़ैं अरू नाचत मुदित बन मोर ।
सारी सुही जुही सिर गूँदें बूँद बचन मृदु स्याम गगन घन घोर।।
हरषि हरषि बरसत मन ही मन प्रेम परस्पर आनन्द हिये हिलोर।
श्रीबिहारिनिदासि दंपति सुख दरसत छिन हीं रंग बढ्यौ दुहुँओर।।५।।

धूमरे गगन गरजत घन मन्द मन्द बरसत वर वृन्दावन सघन सरस पावस रितु जु सुहाई। चात्रिक पिक मोर मुदित नाचत गावत भरे रंग निरखि निरखि दम्पति सब सम्पति सुखदाई।। तैसीय सरस सरद निसि आई तैसीय निकुँज कुसुमनि छाई तैसीये ललना लाल लड़ाई कंठ लपटाई।। श्रीबिहारिदासि गाइ गूढ़ ओढ़नी उढ़ाई रीझि रहे अंग भीजि मिलि मल्हार गाई।। तैसीय सरस सरद निसि आई तैसीय निकुँज कुसुमनि छाई।।६।।

श्रीस्वामीजू कौ पद-

नदित मन मृदंगी रासभूमि सुकान्ति (अभिनै) सुनव गति त्रिभंगी।
घापि राधा नटति ललिता रसवती नागरी गाईतेग्रिनाभि तुंगी।।
रसद बिहारी बन्दे बल्लभा राधिका निसदिन रंग रंगी।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुञ्जबिहारी संगीत संगी ।।७।।

श्रीगुरूदेवजू कौ पद-

धूमरे गगन गरजि गरजि ओल्हरि आये री बरसन कौं । तैसोई करि सिंगार स्यामा सुभग अंग अंग उमिगि इत अवनी रवनी पिय मुख दरसन कौं।। नान्हीं नान्हीं बूँद बचन चनक मूँद अरून हरित प्रेम भरित पियरे पट परसन कौं।। श्रीबिहारिनिदासि स्वामिनी स्याम सब रितु राजत रहे लटपटाइ उर सौं उर सरसन कौं।।८।।

श्रीस्वामीजू के पद- राग-मल्हार, ताल-धीमा तिताला

ये अचरज देख्यौ न सुन्यौ कहूँ नवीन मेघ सँग बीजुरी एक रस।
तामें मौज उठत अधिक बहु भाँति लस ।।
मनके देखिबे को और सुख नाही प्यारी तूँ चितवत चितहिं जू करत बस।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुञ्जबिहारीबिहारिनिजू कौ पवित्र जस।।९।।

दामिनी कहत मेघ सौं हमारी उपमा देहिं ते झूठे एई मेघ एई बीजुरी साँची। जिन जिन हमारी उपमा दीनी तिन तिन की मति काँची।। ऐसी कहूँ सुनी जू बूँद ते कन न्यारौ ता पटतर क्यौं दीजै समुद्र राँची।। श्रीहरिदास के स्वामी स्सामा कुञ्जबिहारी की अटल अटल प्रीति माँची।।१०।।

श्रीस्वामी बीठलविपुलदेवजू कौ पद -

नीके द्रुम फूले फूल सुभग कालिन्दी कूल इन्द्रधनुष राजैं स्याम घटिन में। नीकी ग्रह लता कुञ्ज नीकी आली आलि गुञ्ज नीकौ राग रमि रह्यौ पिकनि की रटनि में।। नीकी गति मन्द मन्द बिहारी आनन्दकन्द नीकौ भेद बन्यौ अरून पीत पटनि में। श्रीबीठलबिपुल रंग ललिता के फूले अंग मिलि ते देखौगी नैननि की आछी बिधि छटनि में।।११।।

श्रीस्वामी नागरीदेवजू कौ पद -

पावस रितु आई सबनि के मनभाई तैसोई श्रीवृन्दावन राजैं सुखदाई। तैसिय घन की घोर धनुष चहुँ ओर तैसाई नाचत मोर तैसिये चातृक पिक बोलनि सुहाई। तैसी भूमि हरी हरी डोलैं बूँढ़े रंग भरी लता अनुराग ढरि रही छबि छाई। निरखि नागरीदासि प्रियापिय सुखरासि विलसत मन हुलासि गावत मल्हार लाल ललना लड़ाई।।१२।।

श्रीस्वामीजू के पद -

बूँदे सुहावनी (री) लागत मति भीजै तेरी चूनरी। मोहिं दै उतारि धरि राखौं बगल में सो तूँ न री।। लागि लपटाइ रहे छाती सौं छाती लगाइ ज्यौं न आवे तोहि बौछार की फूनरी। श्रीहरिदास के स्वामी स्याम कहत बीजुरी कौंधैं करि हाँ हूँ न री।।१३।।

राग-गौड़ मल्हार, ताल-धमार

नाचत मोरनि संग स्याम मुदित स्यामाहिं रिझावत। तैसिये कोकिला अलापत पपीहा देत सुर तैसोई मेघ गरजि मृदंग बजावत।। तैसिये स्याम घटा निसि सी कारी तैसिये दामिनी कौंधि दीप दिखावत। श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुञ्जबिहारी रीझि राधे हँसि कंठ लगावत।।१४।।

श्रीस्वामी बीठलविपुलदेवजू के पद-

राग-मल्हार, ताल-धमार

हमारे माई स्यामाजू कौ राज

जाके अधीन सदाई साँवरौ या ब्रज कौ सिरताज।।
यह जोरी अविचल श्रीवृन्दावन नाहिं आन सौं काज।
श्रीबीठलविपुल बिहारिनि के बल दिन जलघर ज्यौं गाज।।१५।।

जमुनातट स्याम घटनि की पाँति।
हरित भूमि बन हरित सिखंडी बोलत अति रस माँति।।
सुरंग चूनरी की छबि दुलहिन अभरन नाना भाँति।
श्रीबीठलबिपुल विनोद बिहारी सौं मिलि बिलसति किलकाँति।।१६।।

श्रीस्वामी ललितकिसोरीदेवजू कौ पद -

आजु सखी आये मेह सुहाये।
गौरघटा उमड़ी आनँद में महाप्रेम झरि लाये।।
राजत धनुष चहुँदिसि नीके छिन छिन रंग सवाये।
श्रीललितकिसोरी के हित बिहरत करत लाल मन भाये।।१७।।

श्रीस्वामीजू के पद- राग, मल्हार, ताल-तिताला

आये दिन वापस के सचु के सुबोल बोलिये जू मान न करिहौं।
घरी घरी के रूसने क्यौं बनै ते बोल बोलिये जू मन क्रम बच के।
भयो है बन्धान बहुत जतननि करि बिसरे गुन गस के।।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुञ्जबिहारी ए प्यारी बस के।।१८।।

भीजन लागे री दोऊ जन।
अँचरा की ओट करत री दोऊ जन।।
अति उनमत्त रहत निसिवासर राग ही के रंग रँगे री दोऊ जन।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा प्रेम परस्पर नृत्य करन लागेरी दोऊजन।।१६।।

श्रीस्वामी रूपसखी कौ पद -

ऐरी सखी गगन सघन घन गरजै।
चपला चमकनि बूँदें झमकनि छबि पर मोहन लरजै।।
अञ्चल ओट चोट नागर सों नेही नेह न बरजै।
कुञ्जमहल श्रीबिहारिन प्यारी प्रीतम की निजु अरजै।।२०।।

श्रीस्वामी सरसदेवजू कौ पद -

पावस रस बस बिहरें री दोऊ, बिहरें बिहारी देखि देखि मुख सुखकारी।
रतिपति अति गति उपजत अँग अँग अनंग रंग सुकुमारी।।
सारी सुही फुही फबि छबि पिय पीत बसन तन मन हारी।
बर विनोद मन मोद दुहुँकोद श्रीसरसदास अति बलिहारी।।२१।।

रसिक शिरोमणि श्रीस्वामीजू महाराज की

मंगल - बधाई

ललितप्रिये हरिदास जू, नित्यकेलि सुखदानि।
कुञ्जबिहारिनिलाड़िली, प्रगटी रस की खानि।।

श्रीस्वामी ललितकिसोरीदेवजू के पद- राग, ललित, ताल-धीमा तिताला

प्रगटी श्रीललित ललित ललिते।
महाप्रेम अद्भुत रस छाकी गुननिधि सुख सलिते।।
प्रिया-लाल कौं लाड़ लड़ावत उमगि उमगि मिलिते।
श्रीहरिदासी (जू) रसिक सिरोमनि कुञ्जकेलि कलिते।।१।।

रसिकवर प्रगटे ललित उदार।
बरषत घन ज्यौं अति आनन्दहिं महोप्रेम सुखसार।।
जो साँचौं सनमुख भयौ कोऊ दीनौ नित्यनिहार।
दासबिहारिनि अंग-संग राजत छिन छिन प्रीति अपार।।२।।

भूपर प्रगटी ललितकिसोरी।
लोक लोक अति आनन्द बाढ्यौ भई रंगीली जोरी।।
लियें सुभाव रहित नित पिय कौ तैसीये रहै गोरी।
कुञ्जमहल रस दुर्लभ सब तें रसिक बिना कहै को री।।३।।

ललित रसभीनी हो स्यामाप्यारी जू रूप नवीनी।
लखि लालन आनंद अति बाढ़्यौ फूलि अंक भरि लीली।।
याही के सुख में सुख पावत परम सु रसिक प्रवीनी।
श्रीहरिदासी ललित केलि हित हँसनि बधाई दीनी।।४।।

ताल-धीमा तितताला

हमारे स्वामी सिरोमनि आये।
अति आनन्दभरे सुखरासी महाप्रेम झरि लाये।।
श्रीरसिकसिरोमनि परम प्रीति सौं हँसि हँसि कैं बतराए।
श्रीललितकिसोरी की निजु जीवनि कुञ्जकेलि दरसाए।।५।।

राग-बिलावत, ताल-चौताला

कुञ्जमल में मंगलचार।
गौरस्याम तन मन लपटाने वे उनके वे उनके हार।।
महापरम रस लेत लाड़िले उमगि उमगि आनन्द सुखसार।
श्रीहरिदासी रसिकसिरोमनि इनहीं के ये प्रान अधार।।६।।

श्रीस्वामी नरहरिदेवजू कौ पद -

कुञ्जमहल के आँगन बाजत सुखद बधाई।
बीना नाद मृदंग मधुर सुर लागत परम सुहाई।।
फूली सखी सब मंगल गावत आनन्द उर न समाई।
करि सिंगार दूलह दुलहिन बैठे उमगि बढ़ी अधिकाई।।
श्रीनरहरिदासि निरखि तृन तोरत यह छबि बरनी न जाई।
नैननि भरि सोभा रस पीवत पीवत मन न अघाई।।७।।

श्रीस्वामी ललितकिसोरीदेवजू कौ पद -

आजु की कृपा मोपै कही न जाई।
श्रीहरिदास रसिकवर प्रगटे मेरे हित अतिही सुखदाई।।

छिन छिन प्रति आनन्द बढ़ावत पोषत मन के भाई।
श्रीललितकिसोरी नित्य केलि में रीझि हँसि कंठ लगाई।।८।।

ताल-दादरा

प्रगट भई ललितप्रिये रंगभीनी।
श्रीकुञ्जबिहारिनि अपु बपु धार्‍यौ छिन छिन प्रीति नवीनी।।
महाभाग्य बड़भाग सिरोमनि तिनहीं इनकौं चीनी।
श्रीहरिदासी रसिकसिरोमनि सदा केलि लवलीनी।।६।।

प्रगट भई ललितप्रिये हरिदासी।
रसिकन के आनन्द भयो अति पाई सुख की रासी।।
छिन छिन गावत प्रति दुलरावत हियें सु प्रेम हुलासी।
श्रीबिपुलबिहारिनिदास की जीवनि नित्यबिपुन की बासी।।१०।।

सुखरासि नवेली प्रगट भई।
अति आनन्द बढ़्यौ सन्तनि कैं छिन छिन प्रीति नई।।
सहज लाड़िली नित्य विपुन की जीवन प्रान मई।
परम उदार ललित हरदिासी रसिकनि केलि दई।।११।।

महल में बजत बधाई नीकी।
प्रियालाल अतिही आनन्दे उमँगि बढ़ी निजु ही की।।
गुप्त रीति प्रगट भइ सुख निधि सहज सु बनाबनी की।
श्रीकुञ्जबिहारिनि ललित लाड़िली करी रसिक के जी की।।१२।।

राग-खम्माच, ताल-तिताला

श्रीहरिदास महल ते प्रगटे बिपुन निसान बजाये जू।
अद्‌भुत प्रेम दियौ तिनहिंन कौं जे जे सरने आये जू।।
श्रीबिपुलबिहारिनिदास सरस के भये मनोरथ भाये जू।
नागरि नरहरिदास रसिकवर सबके हियेसिराये जू।।१३।।

अति भली भई नित ललिते जू प्रंगटीं भाग्य हमारे जागे री।
अब मिलि हैं पिय कुञ्जबिहारी रोम रोम अनुरागे री।।
चितवानि हँसनि लसनि सुखरासी कामकेलि रस पागे री।
श्रीहरिदास रसिक की जीवनि हँसि हँसि कंठनि लागे री।।१४।।

राग- भैरवी, ताल-तिताला

भादों सुकल अष्टमी भू पर प्रगटे श्रीहरिदास ।
घर घर प्रति अति होत कुलाहल नर नारीन हुलास।।
उदित मुदित दुति भानु किरन ज्यौं पूरन प्रेम प्रकास।
बिपुल विनोद भयौ सबहिन कैं संग बिहारिनिदास ।।१५।।

रसनिधि स्वामी अष्टमी आई ।
भादौं सुकल पच्छ रसिकन हित ललित केलि संग लाई।
साधुन कैं अनुराग भयौ अति प्रेम बढ़्यौ अधिकाई ।
श्रीहरिदास रसिकवर प्रगटे गौरस्याम सुखदाइ ।।१६।।

महल तें प्रगटे श्रीहरिदास ।
सुखसागर नागर रसभीनें अद्‌भुत प्रेम विलास ।।
सहज सनेह प्रीतम आनन्दनिधि गौरस्याम लियें पास।
ललित केलि रसिकन कौं दीनी निजु वृन्दावन वास ।।१७।।

प्रगटे श्रीहरि श्रीहरिदास ।
गुप्त रीति ससिकन दरसाई अद्‌भूत प्रेम विलास।।
छिन छिन प्रति दुलरावत गावत तन मन लियें हुलास।
अति आनन्द भयौ सबहिन कें ललितकिसोरी पास ।।१८।।

प्रगट भये श्रीस्वामी हरिदास ।
गौरस्याम अंग संग दरसावत बरसत केलि विलास।।

छिन छिन प्रति अति मोद बढ़ावत महामधुर मृदु हास।
श्रीविपुलबिहारिनिदास रसिकवर हिये सु प्रेम हुलास ।।१६।।

प्रगट भई प्यारी ललित उदार ।
गुप्तरीति प्रगट करी सुखनिधि निरवधि नित्यबिहारी।।
अति आनन्द भयो सन्तनि कैं बाढ़्यौ प्रेम अपार ।
रसिकसिरोमनि की निजु जीवन पाई (है)प्रान अधार ।।२०।।

महल तें प्रगट भई सुखदाई ।
गुप्त केलि दरसाय रसिकवर प्रेम प्रीति उर लाई ।।
इनहीं के हित श्रीकुञ्जबिहारिनि लाल अधीन सदाई।
श्रीहरिदास ललित लखि रसिकनि कीनी परम बधाई ।।२१।।

राग-बरवा, ताल-धमार

आजु बधाई कुञ्जमहल में बाजत परम सुहाई जू ।
ललित प्रिये रसरासि उदौ करि नित्यकेलि दरसाई जू।।
श्रीबिपुलबिहारिनिदास सरस मिलि महाप्रेम झरि लाई जू।
श्रीनागरि नरहरिदास रसिक कैं आनन्द उर न समाई जू।।२२।।
आजु बधाई रंगमहल में बाजत परम सुहाई जू ।
गौरस्याम कौ आनंद प्रगट्यौ सब सखियन मिलि गुन गाई जू।
देत असीस सदा चिरजीवौ इह आनन्द लेहु लड़ाई जू।
श्रीहरिदासी की निजु जोरी करत केलि मन भाई जू ।।२३।।

राग-मल्हार, ताल-चौताल

श्रीहरिदास सदा सुख मेरे ।
बरसत घन सम अति आनन्दहिं जुग रूप सुधा रस घेरें।।
रसिकन के हिय पोषत तोषत गौरस्याम लियें नेरें ।
श्रीललितकिसोरी की निजु जीवनि महाप्रेम के फेरें ।।२४।।

धन्य धन्य दिन घरी धन्य धन्य छिन पल धन्य धन्य श्रीहरिदासी अवतरी। धन्य धन्य जुगल रस बरसत इन्द्र सम धन्य धन्य रसिकनि हिय अवनि भरी।। धन्य धन्य विपुलबिहारिनदासी धन्य धन्य यह जननि बरी। धन्य धन्य नर नारी मंगल गावत नाचत धन्य धन्य कहि कहि अनुसरी।। धन्य धन्य दसों दिसा भई प्रगट नई रस रीति, धन्य धन्य नित्यबिहार लै उच्चरी। धन्य धन्य रसिक ललित की जीवन धन्य धन्य निरखि निरखि नैंन सुफल करी ।।२५।।

श्रीहरि श्रीहरिदास नित्य यह धाम ।
भादव सुकल अष्टमी के दिन भयो मनोरथ पूरन काम।।
कुञ्जबिहारीबिहारिनि के संग राग रंग रस बस अभिराम।
विपुल प्रेम अनुराग भाग सुख दरस परस पद स्यामा स्याम।।२६।।

राग-जोगिया आसावरी, ताल-धमार

कुञ्जनि मंगल मंगलचार ।
प्रगटी रसिक अन्नय मुकुटमनि ललिता रूप उदार ।
श्रीहरिदासी निजु नाम धाम नित्य रसकनि प्रान अधार ।
पीताम्बर लखि मौज रसिकनी पहिरायौ उर हार ।।२७।।

बधाई बाजति है सुखदानी ।
प्रगटी श्रीहरिदासि स्वामिनी नित्यबिहारिनिरानी ।।
रसिक अनन्य सिरोमनि जीवनि सोभा सहज सुहानी।
श्रीवृन्दाविपुन बिहार प्रकास्यो विपुल विनोद रिझानी ।।२८।।

प्रगटे श्रीस्वामी हरिदास।
आनन्द को घन इच्छा वपु धरि बरसत जुगल विलास।।

कुहुकि उठे बन मोर रसिक जन सींचे हृदै निवास।
श्रीबिपुल प्रेम रसराज रासि रस बाढ़्यौ सिन्धु हुलास।।२६।।

मंगल कुञ्जमहल में गावति।
प्रगटी श्रीहरिदासदुलारी फूली अंग न मावति।।
श्रीकुञ्जबिहारीबिहारिनि दोऊ उमगि उमगि दुलरावति।
भादों सुकल अष्टमी सुभ दिन सोभा कहत न आवति।।
श्रीवृन्दावन रसभूमि प्रकास्यौ रसिकन हिय सरसावति।
श्रीबिपुल चरन परताप बिहारिनिदासी नैंन सिरावति।।३०।।

श्रीस्वामी प्रगटे रसिकमनि भूप।
श्रीहरिदास नाम निजु रसनिधि कुञ्जबिहारिनि रूप।
भादों सुकल अष्टमी मंगल नित्यबिहार अनूप।
उमड़े घन रसिकन हिय माहीं बरषनि सरस सरूप।।३१।।

राग-मल्हार, ताल-तिताला

प्रगटी श्रीहरिदासि दुलारी।
भादों सुकल अष्टमी मंगल अंग अंग उजियारी।।
बाजत सुखद बधाई कुञ्जनि निरतत कुञ्जबिहारी।
कुञ्जबिहारिनि रूप अनूपम महाकेलि विस्तारी।
श्रीबिपुलबिहारिनि सरस नागरी सोभ नैन निहारी।।३२।।

महल में बाजति सुखद बधाई।
प्रगटी श्रीहरिदासिस्वामिनी रसिक जननि सुखदाई।।
भादों सुकल अष्टमी अद्‌भुत सोभा कही न जाई।
कमलबदन लखि कुंजबिहारिनि फूली अंग न माई।।
श्रीविपुलबिहारिनिदासि सरस को सुख नैंननि दरसाई।
श्रीनगरि रूप उजागरि छबि पर माधुरीदासि बलिजाई।।३३।।

राग-मारू

सुखद बधाई बाजै श्रीवृन्दावनधाम।
प्रगट्यौ कुल कोटि अनन्यनि की मनि रसिक जननि विश्राम।। श्रीस्वामीहरिदास नाम निज अद्भुत पूरन काम। राख्यो बंस बिहार कौ जस छयौ बिमल अभिराम।। नित्य-बिहार अहार सुखद सुख दाता स्यामा स्याम। श्रीविपुलबिहारिनिदासि लड़ावति सरस जामिनी जाम।।३४।।

रसिककवर श्रीहरिरामजी व्यासजू कौ पद -

अनन्य नृपति श्रीस्वामी हरिदास।
श्रीकुंजबिहारी सेये बिन छिन न करी काहू की आस।।
सेवा सावधान अति जानि सुधर गावत (दिन) रस रास।
ऐसौ रसिक भयौ नहिं है है भूमंडल आकास।।
देह विदेह भये जीवत ही बिसरे बिस्व बिलास।
श्रीवृन्दावन रेनु तन मन भति तजि लोक वेद की त्रास।।
प्रीति रीति कीनी सबहिन सों किये न खास खवास।
अपनो व्रत यह और निभायो जौलौं कंठ उसास।।
सुरपति भूपति कञ्चन कामिनि जिनके भाये घास।
अबके साधु व्यास हमहूँ से जगत करत उपहास।।३५।।

श्रीस्वामी अग्रदासजू कौ कवित -

नमोनमो श्रीहरिदास वृन्दाविपिन बास वर प्रान सर्वस बाँकेबिहारी।
स्यामा-स्याम जुगल रूप माधुर्य के रसिक रिझावर प्रेमावतारी।।
परम बैरागनिधि बसत निधिबन सदा भावना लीन सुप्रबीन भारी।
कामना कल्पतरू सकल संतापहरू अग्रदास अलि कल्यानकारी।।३६।।

श्रीनाभादासजू कौ छप्पय -

जुगल नाम सौं नेम जपत नित कुंजबिहारी।
अवलोकत रहैं केलि सखी सुख के अधिकारी।।
गान कला गंधर्ब स्याम - स्यामा को तोषैं।
उत्तम भोग लगाय मोर मरकट तिमि पोषैं।।
नृपति द्वार ठाड़ें रहैं दरसन आसा जास की।
आसुधीर उद्योत करि रसिक छाप हरिदास की।।३७।।

श्रीगोविन्द स्वामीजू कौ सवैया -

जा पथ कौ पथ लेत महामुनि मूँदत नैंन गहैं नित नाँकौ।
जा पथ को पछितात हैं वेद लहैं नहिं भेद रहै जकि जाकौ।।
सो पथ श्रीहरिदास लह्यौ रसरीति की प्रति चलाय निसाँकौ।
निसाननि बाजत गाजत गोबिन्द रसिक अनन्यनि कौ पथ बाँकौ।।३८।।

प्रगट्यौ कुल कोटि अनन्यनि की मनि धन्य कहैं जग जानि नम्यो।
परमारथ सिद्ध महन्त इतै उत स्वारथ साहिन दुःख दम्यो।।
श्रीबिहारी बिहारिनिदास लै संग अनंग के रंग रिझाय रम्यो।
ऐसो निरुस्प्रेही को उपकार करै श्रीहरिदास की राति न और जम्यो।।३९।।

हम बेपरवाह बिहारिनि के।

श्रीहरिदास के गर्व भरे अमनेक अनन्य निहारिन के।
महामधुरे रसपान करें अवसान खता सिलहारिन के।।
दियो नहिं लेहि ते माँगहि क्यों बरने गुन कौन बिहारिन के।
किये रहे ऐंड बिहारी हू सों (हम) बेपरवाह बिहारिन के।।४०।।
राख्यो बंश बिहार को, भू प्रगटे श्रीहरिदास।
इन बिन को उपदेसतो, इष्ट अनन्य उपास।।

इष्ट अनन्य उपास त्रास, सुनि होत सबनि मन।
साधन विविध किये दुःख दिये कहा तन।।
श्रीबिहारिनदास प्रबोध सोध श्रुति सुमृति भाख्यो।
अति दुल्लभ में दुल्लभ सुल्लभ हस्तामल राख्यौ।।४१।।

श्रीहरिदास कृपानिधि सागर हैं।
निसदिन नैनन के डोरनि सों, झुलवति नागरि नागर हैं।।
सरस गान करि रिझवति दम्पति, सब रसिकन तें आगर हैं।
श्रीललितकिसोरी बिजै रूप धरि, निधिवन वास उजागर हैं।।४२।।

श्रीहरिदास किधौं हरि आप बिहारी।
एक ही रूप अनूप विराजत एक हिये रस वैस तिहारी।
एक ही प्रान समान सखी वपु खेलत द्वै दृग दृष्टि निहारी।।
स्वामिनी स्याम अनन्य भजें भ्रम दूर कियो तिनकी बलिहारी।
श्रीबिहारिनदास के भेद नहीं श्रीहरिदास किधौं हरि आप बिहारी।।४३।।

सरि श्रीहरिदास की को करि हैं।
कर्म धर्म भक्ति मुक्ति इति मरजादहिं को टरि हैं।
अंस कला अवतार नखे ब्रज के रस सिंधुहि को तरि हैं।।
रस रीति सौं प्रीति प्रतीति यहै श्रीबिहारिनदासहिं जो बरि हैं।
जिनकैं सुख सार बिहार सही सरि श्रीहरिदास की को करि हैं।।४४।।

श्रीहरिदास रसिकवर प्रगटे नित्य सुकेलि उदारा हो।
जोई जोई सन्मुख भये कुँवरि के देत महासुख सारा हो।।
गौर स्याम को है निज आनन्द करि राखी उर हारा हो।
सखी शिरोमणि परम लाडिली ललित प्रानतें प्यारा हो।।४५।।

अनन्य जनन को न्यारोई तोरा।

फबी अति ऐंड सबै मन मैंड सदा संग क्रीडत कुञ्ज किसोरा।
रसरीति सों प्रीति प्रतीति निरन्तर चौंप बढ़ी जैसे चन्द चकोरा।।
अति आनन्द में अमनेक विराजत गाजत भाजत लोग लटोरा।
सरस शिरोमणि श्रीहरिदासी अनन्य जनन्य को न्यारोई तोरा।।४६।।

तो सी तू ही हरिदास दुलारी।

तेरी सरि दूजो नहिं कौई तेरेई रस बस कुञ्जबिहारी।।
तेरो रूप कहत नहिं आवे तैसीये तेरी प्रीति महारी।
तैसीये ललित केलि सुखरासी रसिक सिरोमणि प्रान अधारी।।४७।।

श्रीहरिदास रसिक अनन्य बिनु कापै परत बिहार बखान्यौ।
कर्म ज्ञान और भक्ति ब्रज विभै बाकस छांड़ि मधुर रस छान्यौ।।
साधक सिद्ध प्रसिद्ध प्रसंसित जहाँ तहाँ जब जग जस जान्यौ।
ललिता रूप पलटि प्रगटे श्रीबिहारिनिदासि कृपा पहिचान्यौ।।४८।।

हौं तो श्रीहरिदासी जू की दासी।

राखी अंग संग नित्य केलि में कीनी अद्‌भुत प्रेम विलासी।।
रीझि रीझि मेरी मेरी कहि छिन छिन हिये हुलासी।
श्रीकुञ्जबिहारिन ललितकिसोरी सदा निरन्तर पासी।।४६।।

हमारे श्रीहरिदास महा सुखदाई।

जोई जोई रूचै करै हित सोई पोषत मन के भाई।।
हरषि हरषि अनुराग बढ़ावत चितवन रस बरसाई।
श्रीललितकिसोरी कुञ्जबिहारन मिलत मिलत न अघाई।।५०।।
बारक श्रीहरिदास बिलोकत तेल की बूँद समुद्र तरी।
बादि करें श्रम साधन कोटिक पंक में ढारि भरी गगरी।

न तूलै करूणालय लाड़िली को बल लालहिं लै अनुराग ढरी।
श्रीबिहारिनदासि है सेय तिन्हें जिन दपंति संपति सांचि धरी।।५१।।
हम अनन्य श्रीस्वामी हरिदास वंशी। नित्य सर्वोपर बिहार वृन्दाविपिन सकल संदेह गत ग्रन्थ नँसी। जै श्रीवर बिहारनदास हरषि गावत सुजस सेष श्रुति थकित श्रीमुख प्रसंसी।। और स्थूल सूक्ष्म घनें को गनें सबै जाने कला अंग अंसी। जै श्रीबिपुल बरराज रस रीति के रसिक धनि हम अनन्य श्रीस्वामी हरिदास वंशी।।५२।।

रस-सागर श्रीस्वामी बीठलबिपुलदेवजू की बधाई

दोहा

अगहन शुक्ला गौरस्याम वपु श्रीविहारिदास दरसाय।
विपुल पञ्चमी गाइहौं मन वच सीस नवाय।।

राग-ललित, ताल-धीमा तिताला

श्रीकुञ्जबिहारी जा दिन प्रगटे बिपुल पञ्चमी सोई।
अगहन पच्छ उज्यारी सहचरी भई रजनी तम भोई।।
श्रीगुरू बन जोरी की जीवन रसिकराज रस-राज समोई।
श्रीबिहारीबिहारिनिदास की आसा और न जानै कोई।।१।।

अगहन सुकल पञ्चमी के दिन बीठलविपुल प्रकासे।
श्रीहरिदास कृपा की मूरति दरस ताप त्रय नासे।।
श्रीवृन्दावन स्याम स्वामिनी सहचरि के सुख भासे।
श्रीसरसदास अनयास सकल सुख दरसे परसि उपासे।।२।।

प्रगट्यौ बिपलु रसन कौ सागर।
श्रीहरिदास प्रेम की मूरति बीठल नाम उजागर।।
फूले रसिक नरेस भ्रमरजन गावत रस जस गुन के आगर।
अगहन सुकल पञ्चमी को सुख दियो है नागरी नागर।।३।।

राग-बिलावल, ताल-चोताल

नरवर जय जय करत अहो अब अगहन सुकल पंचमी आई।
स्वामी समुद्र जुगल रस घन है बरसे विपुल रसिक सुखदाई।।
नवधा खेत बीज निजु प्रेमा सुफल फले ऊसर सरसाई।
प्रगट्यौ धर्म अवनि परिपूरन पीताम्बर उर तृषा बुझाई।।४।।

अगहन सुकला आई माई साज समाज करो री पाँचैं।
पोथी खोलि पुरानी बानी बर्ष गाँठ दिन बाँचै।।
आदि आनादि बिपुल वृन्दावन सहचरि वपु सुख साँचैं।
श्रीरसिक प्रिया पीताम्बर दोऊ उदित मुदित मन नाँचैं।।५।।

दिव्य रूप रस गन्ध सपरसरी पंच पंचमी जानैं।
अगहन सुकला श्रीस्वामीजू बिपुल बिनोदहिं बानैं।।
श्रीबिहारीबिहारनिदिास मनोरथ सरस करत गुन गानैं।
श्रीनरहरि रूप रसिकवर सुन्दर पीताम्बर पहिचानैं।।६।।

राग-ईमन, ताल-तिताला

मंगल कुञ्जभवन मधि आज।
श्रीहरिदास बंस की सोभा श्रीमुख गावत करत समाज।।
बीठलबिपुल विनोद पंचमी सहचरि कुल कौ दीनौ राज।
रसिक रसिकनी रसिक सहेली प्रगट भई सिरताज।।७।।

श्रीस्वामी पीताम्बरदेवजू कौ पद-   राग,भैरवी, ताल-अद्धा-तिताला

आज हमारे महल पंचमी।
श्रीहरिदास बिपुल परकासी बरषी विपिन अमी।।
श्रीबिहारीबिहारिनिदास सरस रस कहा कहौं उपमी।
श्रीनरहरि रसिक निरखि सुख पायौ पीताम्बर पिय संग रमी।।८।।

राग-भैरवी, ताल-तिताला

जै स्वामी जै स्वामी स्वामी जै स्वामी धुनि छाई।
प्रगट्यौ बिपलु विनोद हमारे अगहन सुकल पंचमी आई।।
धाम स्यामस्यामा सहचरि कौ करि सिंगार अभिषेक बधाई।
अछत तिलक छिरकि दधि गावत पीताम्बर पिय लाड़ लड़ाई।।६।।

अगहन सुकल पंचमी आई, आजु बधाई देखौ री माई।
नित्य बिहार विपुन सुख भुव पर श्रीहरिदासि बनाई।।
प्रगटे विपुल विनोद बिहारी श्रीबिहानिरिदासि दिखाई।
श्रीसरस नरहरी रूप रसिक लखि पीताम्बर बलि जाई।।१०।।

अगहन सुकल पंचमी आई।
श्रीबीठलबिपुल महल तें प्रगटे रसिकनि के सुखदाई।।
श्रीराधासरन सखियनि मिलि गावति अति आनंद अधाई।
श्रीहरिदास के बंस उजागर रस सागर नहिं थाई।।११।।

श्रीबाँकेबिहारीजू महाराज के प्राकट्य महोत्सव की

मंगल-बधाई

श्रीगुरूदेवजू कौ पद-   राग,जोगिया आसावरी, ताल-धमार

बाँके बिरदनि विदित बिहारी।
इछ्या विग्रह धरि लीला वपु सब अवतारनि पर अवतारी।
लक्ष्मीपति व्रजपति कौं दुर्लभ इनतें कौन बड़ौ अधिकारी।।
नित्यकिसोर निरंतर विहरत सेवत श्रीहरिदास दुलारी।
ऐंडिल ऐंडाइल अरून कमल बाँके बिरदनि विदित बिहारी।।१।।

श्रीस्वामी ललितकिसोरीदेवजू कौ पद-   राग-सारंग, ताल-धमार

हमारे बिहारी उत्सव आज।
अति प्रसन्न भई नित्यलाड़िली सुधर्‍यौ सबही काज।।
महाप्रेम अनुराग बढ़्यौ है बनि गयौ सबही साज।
श्रीहरिदासी रसिक सिरोमनि दियौ कुञ्ज कौ राज।।२।।

प्रगट भये श्रीकुञ्जबिहारी।
रूप अनूप सकल गुन सीवाँ सब अवतारिन के अवतारी।।
नित्यकिसोर निरन्तर विहरत अपनी प्रानप्रिया उर धारी।
जनम करम जिनके परिपूरन चहूँ ओर जगमग सहचारी।।
एकहि रूप अनूप रूप धरि भक्तनि हित लीला विस्तारी।
श्रीवृन्दाबिपुन विहार सार रस रसिकन जीवनि जीवन जिवारी।।
श्रीहरिदास कलपतरू जोरी रसना बरनें सु कहा विचारी।
ललित विनोद मोद रस छाके श्रीरसिकसखी छिनु बलिहारी।।३।।

श्रीस्वामी रूपसखीजू कौ पद- ताल-दादरा

रसिक हरिदास के बाँकेबिहारी।
लछिमीपति व्रजपति अति दुर्गम रास रसिकवर सरन तिहारी।।
अद्‌भुत धाम नित्य वृन्दावन नित्यकिसोर किसोरी प्यारी।
महल निकुञ्ज बिहार सार सुख इच्छ्या विग्रह धरि अवतारी।।
बाँके विरद बुलावत साँचे महाप्रेम अद्‌भुत छबि (सुख) भारी।
रसिक रूप अवलोकित सोभा श्रीस्वामी जू के अधिकारी।।४।।

राग, रासबिहार, ताल-तिताला

घन तैं लसति नीलमनि तन दुति अति अद्‌भुत कल सोभा छबी।
झलमलात मुख दृग श्रुति कुण्डल ललित पाग पर कलँगी फबी।।
मनमथ रति दम्पति पर वारौं कमल चन्द सुन्दरता रबी।
स्वामी हरिदास जू कौ डंका बाज्यौ औरनि की डुगडुगी दबी।।५।।

श्रीस्वामी राधासरनदेवजू कौ पद- राग, खम्माच, ताल-तिताला

ललिता श्रीहरिदासी के आँगन सुखद बधाई बाजैं हो।
महल ते प्रगटे श्रीबाँकेबिहारी रसिकनि के सुख काजैं हो।।
सखी सहेली सहचरि गावति अति आनन्द समाजैं हो।
श्रीराधासरन छबि निरखत बीठलबिपुल प्रेम सुख साजैं हो।।६।।

राग-सारंग

आजु हमारे मंगल माई।
मंगसिर सुदि सुकल पञ्चमी आनन्द की निधि आई।।
भवन भवन प्रति बन्दन माला तोरन धुजा सुहाई।
बाँकेरसिकबिहारी कौ सुभ प्रगट दिवस सुखदाई।।
श्रीहरिदासी रंगमहल में बाँटत सुखद बधाई।
श्रीबिपुलबिहारिनि नागरि फूली नवल प्रेम सरसाई।।

बाजे बिबिध बजावैं गावैं महामधुर धुनि छाई।
करत कुलाहत सुखद सहचरी कुञ्ज-कुञ्ज उठि धाई।।
प्रानपियारे अधिक सिंगारे छिन-छिन छबि हुलसाई।
सरबसु प्रान करत न्यौछावरि मनु नैन सजीवनि पाई।।
श्रीनरहरिदासि रासि रस सुख की अति बरषा बरषाई।
लाल लड़ैती की छबि ऊपर श्रीहरिदासि बलि जाई।।७।।

अनन्य मुकुटमनि श्रीस्वामी बिहारिनदेवजू की

मंगल -बधाई

रसिकवर श्रीस्वामी व्यासजी कौ पद-

ताल-दादरा

साँची प्रीति बिहारिनिदासै।
कै करूवा कै कुञ्ज कामरी कै थर श्रीस्वामी हरिदासै।।
प्रतिबाधक सहि सकल न तिनकौं जानत नहीं कहा कहि त्रासै।
महामाधुरी मत्त मुदित है गावत रस जस जगत उदासै।।
छिन ही छिन परतीति बढ़त रसरीति निरखि बिबि बदन बिलासै।
अँग संग नित्यबिहार बिलोकत यहै आस निज बन बसि व्यासै।।१।।

श्रीस्वामी नवलदासजू कौ पद-

राग-रासबहार, ताल-तिताला

एक ही सिंगार तन एक प्रान एक मन एक ही स्वरूप कापै परत बखानी है। एक ही बरन अंग भूषन बसन सुरंग एक ही सुभाव प्रेम रंग रससानी है।। एक ही सुदृष्टि सखी नैनन सों नैन जोरैं एक ही समाज राग रंग सुखदानी है। नवल निहार दोऊ पटतर कौं न कोऊ श्रीबिहारिनिदासि किधौं बिहारिनि रानी है।।२।।

श्रीस्वामी पीताम्बरदेवजू के पद- राग-मल्हार, ताल-तिताला

आज बधाई आई री माई।
नव वन नव निकुञ्ज नव पल्लच लखि सोभा अधिकाई।
रितु पावस सावन तिथि तृतिया कौतिक सहचरी आई।
मन्द मन्द पग धरति अवनि पै नूपुर गरजि सुहाई।।
अलकावलि घन स्यामगौर तन दामिनि कोटि निकाई।
दृग कटाच्छि करि पवन रवन हिय रूप लहरि झरलाई।।
तैसेई वसन सुरंग अंग में निरखि काम सिर नाई।
लखी अभूत सहेली भू पर प्रिया पीव हिय लाई।।
श्रीहरिदासी बंस जानिकें बिपुल सरस सुखदाई।
श्रीनरहरि रसिक सखी सुख पायौ पीताम्बर पहिराई।।३।।

सावन तीज रूप धरि आई।
कच घनघोर दामिनी दमकनि राग मलारनि धुनि गरजाई।।
रूप लहरि सों धनुष चहूँ दिस जल श्रमकन बूँदन झरिलाई।
अरून वसन आभूषन की छबि प्रिया प्रान हिंडोर झुलाई।।
नाम बिहारिनिदासि सखी कौ सरस मनोरथ की मन भाई।
निरखत बलि पीताम्बर दीनों श्रीहरिदासि बिपुल बनाई।।४।।
स्यामा धाम बाम रितु पावस सावन तीज हिंडोरे झूली।
श्रीहरिदासी संग विपुल कुल बिहारिनिदासि सखी समतूली।।
श्रीनागरी नवल माधुरी अँग संग सरस सहचरी गुननिधि फूली।
श्रीनरहरि रूप रसिक रस बरषत पीताम्बर निरखत मति भूली।।५।।

महल में मंगल आज बधाई।
प्रगटी श्रीबिहारिनिदासि स्वामिनी सोभा सहज सुहाई।।
सावन तीज सरस रस भीजी रीझे रसिकनि राई।
श्रीहरिदासी बिपुल बिहारिनि सरस महानिधि पाई।।६।।

सावन तीज मन भावन आई ।
प्रागटी(श्री)बिहारिनिदासि बिहारनि कैं सरस प्रेम झरलाई।।
विपुल नवल अनुराग सुहायो सोभा बरनी न जाई ।
गावत मंगल गीत बधाई (श्री) नरहरिदासि लड़ाई ।।७।।
कुञ्जन में बरषत सुख मेह ।
प्रगटी श्रीबिहारिनिदासि स्वामिनी बाढ्यौ सरस सनेह।।
सावन तीज महारस भीनी मंगल निधिवन गेह ।
श्रीहरिदास रसिक को सरबस नागरि उर धरि लेहु ।।८।।

❑

श्रीस्वामी सरसदेवजू की

मंगल-बधाई

राग-ललित, ताल-धीमा तिताला

प्रगटे श्रीसरसदेव रसभीनें ।
निधिवन नित्यबिहार बिलोकत प्रियालाल उर लीनें।।
श्रीहरिदासी बिपुलबिहारिनि सरस प्रिया रस दीनें ।
श्रीललित रूप रस बिबस बिहारी बिहारिनि के बल कीनें ।।१।।
बजत बधाई परम पुहाई ।
रास रसिक श्रीसहचरि प्रगटीं सरस प्रिया सुखदाई।।
दासिबिहारिनि अँग संग राजत बिपुल प्रेम सरसाई ।
श्रीरसिक प्रिया पीताम्बर लै लै सबको आनि पहराई ।।२।।

श्रीस्वामी पीताम्बरदेवजू कौ पद-

प्रगटे सुखनिधि रसिक प्रवीन ।
श्रीसरसदासि रस रूप उदौ करि रसिकनि हिय सुख कीन।।

श्रीबिहारिनदासि की दासि प्रकासी अँग अंग सरस नवीन।
सरद समै मिलि मंगल गावैं पीताम्बर रस भीन ।।३।।

प्रगटी सरस सरस रँगभीनी।
गुप्तकेलि रस रास प्रकासी अद्भुत प्रीति नवीनी।।
छिन छिन प्रति आनन्द बढ़ावत महाप्रेम रस लीनी।
श्रीहरिदासि ललित वपु धार्‍यौ रसिक सु अति परबीनी।।४।।

प्रगटी श्रीसरस सरस सुख दैंन ।
श्रीबिहारिनिदासि लाड़िली के सुख सोभा कहत बनैंन।।
सरद निसा सहचरि मन मोहत सोहत सुन्दर ऐंन।
श्रीललितकिसोरी की निजु जीवन सुनत रसभरे बैंन ।।५।।

राग-विलावल, ताल-चौताल

माई आजु रमससे रस बनि बैठनि अंग अंग रोम रोम सुख भरे।
कहाँ लौं कहौं री और सहसि बहसि रस,
हँसि ही के मिस मिलि जे जे रंग करैं।
बार बार बदन निहारि मन वारि वारि,
अंक भरत पुनि आतुर ह्वै इत उत न टरैं।
श्रीसरसदास वारी बिबस बिहारी प्यारी,
इहि विधि तन मन मोद भरैं ।।६।।

कुञ्जमहल मधि मंगलचार ।
श्रीहरिदासि रसरासि विलास सरस प्रिया सुख सार ।।
श्रीबिपुलबिहारिनिदासि नागरी इनहीं के ये प्रान अधार ।
श्रीकिसोरी किसोरदासि मिलवत सुखरासि नृत्यत रास विहार।।७।।

श्रीस्वामी पीताम्बरदेवजू कौ पद- राग-भैरवी, ताल-अद्धा तिताला

सब मिलि गावत आज बधाई ।
प्रगटी सहचारि सरस प्रिया की सरद महा सुखदाई।।
श्रीहरिदासी बिपुल बिहारिनि नागरि नवल लड़ाई ।
श्रीरसिक उदारहिं दियौ कृपा करि पीताम्बर पहिराई।।८।।

❋

श्रीस्वामी नरहरिदेवजू की

मंगल-बधाई

श्रीस्वामी ललितकिसोरीदेवजू के पद- राग-ललित, ताल-धीमा तिताला

प्रगटे श्रीनरहरिदेव उदार ।
श्रीहरिदास ललित वपु धार्‍यौ महाप्रेम सुख सारं।।
श्रीवृन्दावन सनमुख जिनने कीने जीव अपार।
रसिक सिरोमनि की निजु जीवनि निरखत नित्यविहार।।१।।

प्रगटे श्रीनरहरिदेव रँगीले।
परम कृपाल उदार सिरोमनि प्रिया प्रेम गरबीले।।
श्रीवृन्दावन की निधि एई अद्भुत रूप छबीले।
श्रीरसिकसखी अँग संग सहज ही ललितकेलि मन मीले।।२।।

राग-बिलावल,ताल-चौताल

श्रीनरहरिदेव रसिकवर प्यारे।
परम प्रेम सुखरासि छबीले प्रगट भये सन्तन हितकारे।।
दासबिहारिनि सरस नागरी इनकी जीवनि प्रान अधारे।
श्रीललितकिसोरी तन मन मिलि कैं लाड़ लड़ावत नित्यबिहारे।।३।।

श्रीनरहरिदेव रसिकवर आये।
अति आनन्द भयो सबहिन कें किये मनोरथ मन के भाये।।
छिन छिन प्रीति नई नई उपजत कहा कहौं गुन परम न गाये।
श्रीहरिदासि ललित रस भीनैं गौर स्याम मिलि रस बरसाये।।४।।

श्रीस्वामी पीताम्बरदेवजू के पद -

जेठी दुतिया आई री माई।
आगें ते हरिदासि बिपुल सुख वर बिनोद दरसाई।।
सरस मनोरथ किये सबनि के नरहरि रूप धराई।
रसिक प्रिया पीताम्बर लै लै सहचरि सब पहिराई।।५।।

जेठी दुतिया भई (है) महल में।
श्रीहरिदासी बिपुलबिहारिनि सरस नरहरी लई टहल में।।
स्यामास्याम धाम धन पायो निरखत वपु रस परी चहल में।
प्रगट्यौ धर्म रसिक सहचरि कौ पीताम्बर कौ मिल्यौ सहल में।।६।।

गावो री बधाई (माई) मगल गीत।
जेठी दुतिया ज्यौं ठकुराइनि प्रगट भई मोहन की मीत।।
दरस दिखावो सहचरि लावो बरष गाँठ की करिये रीति।
पीताम्बर पहिरावो सबकों रसिक प्रियाहि समीति।।७।।

आजु हमारे मंगल भये।
अबलौं भू भ्रम श्रम सब जन ले सूर उदै भ्रम तम श्रम हये।।
श्रीनरहरि स्वामी प्रगट होत ही पापी पाप ताप पसि गये।
जेठी जठर अँध्यारी दुतिया रसिकदास सीतल करि लये।।८।।

श्रीस्वामी रसिकदेवजू की

मंगल-बधाई

श्रीमत रसिकदेव प्रगटे।
गौरस्याम कौं अति सुखदाई इनहीं के रंग जटे ।।
रोम रोम अति आनन्द बरषत नित्य सुकेलि रटे ।
श्रीहरिदासि ललित वपु धार्‌यौ अवधि प्रेम अघटे ।।१।।
प्रगटे श्रीरसिकदेव सुखसार ।
मंगल बसन्त पञ्चमी भू पर छायो नित्यबिहार ।।
श्रीहरिदासी विपुल बिहारिन सरस महा रिझवार ।
श्रीनरहरि रसिक कृपा पहिरायौ पीताम्बर उर हार ।।२।।
प्रगटे रसिक सिरोमनि राई ।
आनन्द की निधि रसिक स्वामिनी अद्‌भुत रूप अनूप बनाई।।
मंगल बसन्त पञ्चमी सुभ दिन नित्याबिहार दयो दरसाई ।
श्रीहरिदासि कृपा की मूरति दासि नागरि लाड़ लड़ाई ।।३।।

राग-विभास

प्रगटे श्रीरसिकदेव सिरमौर ।
मंगल बसन्त पञ्चमी सुभ दिन आनन्द भयो न थोर।।
श्रीहरिदासी बिपुलबिहारिनि सरस नरहरि के चितचोर।
सरस बधाई लै पीताम्बर पहिरायो नागरि तन गौर ।।४।।

राग-रामकली

प्रगटे श्रीरसिकदेव सिरमौर ।
बसन्त पञ्चमी सुभ दिन मंगल नित्य बिपुन सुखदानी।।
श्रीहरिदासी बिपुलबिहारिनि सरस सुखन सौं सानी।
श्रीनरहरि कृपा रसिक वपु धार्‌यौ नागरि रूप लुभानी।।५।।

राग-बसन्त, ताल-धमार

अबकैं बसन्त अतिसै सुखदाई ।
श्रीहरिदासी की सर्बस धन रसिक महल में आई।।
श्रीबिपुलबिहारिनिदासि सरस मिलि नरहरि प्रान लड़ाई।
श्रीरसिबल्लभा प्रानप्रिया पिय पीताम्बर पहिराई ।।६।।

अबकैं बसन्त सुख हो हो होरी ।
प्रगटी रसिक सजीवनि मेरी नव नव नेह सनेह झकोरी।।
श्रीहरिदासी दई कृपा करि बिपुल बिहार सु सरस करो री।
श्रीनरहरि प्रान रसिक मम जीवनि पीताम्बर के चित की चोरी।।७।।

अबकैं बसन्त हम भागनि पायौ ।
श्रीहरिदासि कृपा सुख प्रगट्यौ बिपुल बिहार बढ़यौ।।
श्रीसरस नरहरि ने सुख अपनों सो हम ऊपर छायौ ।
श्रीरसिक स्वामिनी निरखि रीझि के पीताम्बर पहिरायौ।।८।।

अबकैं बसन्त अति अद्भुत होरी ।
श्रीहरिदासि प्रगट करि दीनी बिपुल बिहार सुसरस करोरी।।
श्रीनरहरिदासि रसिक मुकुटमनि जै जै शब्द कहोरी।
पीताम्बरदासी कौं दीजैं नव नव नेह नयौ निबहोरी ।।६।।

राग-बसन्त

रसिक बसन्त कुञ्ज में आये ।
श्रीललिता हरिदासि सखी के विपुल विनोद फूल बरसाये।।
दासबिहारिनि करत पाँवड़े सरस आरती थार सजाये ।
नरहरिदासि बसन सुविंजन अमृत जल दै पान खवाये।।

अतर गुलाल अबीर अरगजा छिरकि गुलाब परस्पर धाये।
बाजत तार मृदंग झाझ डफ अति ऊँचे सुर धुनि लै गाये।।
रीझि प्रियाजू रसिक सखी कौं भूषन बसन सकल पहिराये।
पीताम्बर दासी कौं दीनों सैंन कुञ्ज लखि अति सुख पाये।।१०।।

खेलि बसन्त कुञ्ज में आये ।
आगे स्याम स्वामिनी पाछैं सहचरिगन चहुँदिसि उमड़ाये।।
पिसरे बसन प्रियाजू पहिरैं पियरे ही पिय कौं पहिराये ।
पियरे ही भूषन सब अंगनि प्रीति सहचरी रंग रँगाये ।।
केसरि अगर कपूर कुमकुमा बसन सरीर कछू लपटाये ।
अतर सुगंध बहुत विधि छिरक्यौ अति सुवास मन भ्रमर लुभाये।।
सनमुख चली सहचरी पिय कें कलस पाँवड़े सुवन सुहाये।
मंगल गीत रीति आवनि की सुखद समाज नृत्य करि गाये ।।
रतन जटित सिंघासन आसन सुखद फूल स्वेत छबि छाये।
जय-जय धुनि इह कहत सखीगन प्रानप्रिया पिय कों बैठाये।।
देत असीस अचल सिंहासन इहीं कुञ्ज मधि रहो सदा ये।
सामिग्री भोजन जो चाहत सोई परसि रसिकवर पाये।।
रूप सुधारस भरि जमुना कों नीर पीव कों लै अँचवाये।
रूचिर सिंगार सेज सुख कीन्हों दरसि परम सुख नैन सिराये।।
भये मनोरथ रसिक सखी के नव-निकुञ्ज में सुख दरसाये।
रीझि कह्यौ पीताम्बर मेरौ ले सहचरि हम अति सुख पाये।।११।।

स्वामी ललितकिसोरीदेवजू की

मंगल बधाई

राग-जोगिया आसावरी, ताल-धमार

लोक वेद नवधा प्रसिद्ध सुख कौन तरै लीला अवतार।
कर्म धर्म की आस त्रास नित अति भैभीत बहत संसारं।।
लोभी लोग भोग के लालच पचि मरते विद्या आचार।
जो न प्रगटी ललितकिसोरी तौ न प्रगटतो नित्यबिहार।।१।।

श्रीस्वामी सीलसखीजू के पद - राग-विलावत, ताल-चौताला

प्रिय हित अैंन हौ जू लाल सुख दैंन हौ जू दुहुँन चित चैन हौ जू महा सुख सार हौ। रसिक सिरताज हौ जू प्रेम के जहाज हौ जू नेह के समाज हौ जू रस निरधार हौ।। अति रिझवार हौ जू सारन को सार हौ जू दुख निरवान हौ जू परम उदार हौ। श्रीललितकिसोरी हौ जू ललित हरिदासी हौ जू अैंड गरबीली हौ जू ललित बिहार हौ।।२।।

लाड़िली कौ लाड़ किधौं प्रीतम कौ प्रेम किधौं महा माधुरी तरंग आनंद निकेत री। सोभा कौ सिंगार किधौं अवधि रिझावारता की रसिक दुलारी प्यारी पिय सुख देत री। करूनानिधान गुन कहाँ लौं बखान करौं सुरति सुहाग फूल रसखेत री। श्रीललितकिसोरी कृपा अनूप राख्यौ रस बंस निज रसिकन सुहेत री।।३।।

राग-रासबहार, ताल-तिताला

अगम ते अगम अति दुल्लर्भ निकुञ्ज रस सुल्लभ दिखाय रूप रसिकन दृढ़ायौ है। घुरत निसान गुन बिसद बखानै कौन साधक अरू सिद्धन प्रसंसि सिरनायौ है। सुभग सिंहासन निधिवन (श्री) निकुञ्ज धाम

ललितकिसोरी नाम बिरदवर पायौ है। रसिक नृपति वर बंस रसराज रानी रसिक तिलक दै राज कौ पठायौ है।।४।।
श्रीहरिदास के गर्व भर्‍यौ हँसि दीनौं लड़ैती ने पत्र निसाँकौ।
केलि कलोलनि क्रीड़त हैं नित रंग बढावत हैं दुहुँ घाँकौ।।
औरनि कौ मन और पर्‍यौ इन प्रेम समुद्र कौ बाँध्यौ है नाँकौ।
बाँके की बाँकी चितौनि में बीध्यौ सुदासकिसोरी कौ पैंडो है बाँकौ।।५।।
श्रीगुरूदेव की साहिबी में अमनेक अनन्य भयौ अलबेला।
एकही रीतिकी प्रीति प्रतीत है बाँकी लड़ैती सौं कीनौं है मेला।।
नेह के पुञ्ज निकुञ्ज मढ़्यौ हरिदास कौ पूत सपूत अकेला।
दासि किसोरी जू प्रेम समुद्र में कूदि पर्‍यौ निसंक दै हेला।।६।।
लाड़िली कौ बिनोद किधौं प्रीतम कौ प्रेम नित्य सरस गुन गर्व रस चाड़न समेत हैं। सेज कौ सुबास किधौं रंग कौ बिलास आली सुख कौ निवास मन आनन्द निकेत है।। रूप की निकुञ्ज सोभा फूली हाव भावन सौं चाव चित चातुरी कौ आतुर अचेत हैं। ललितकिसोरी रूप प्रगटी कुपा अनूप रसिक अनन्यनि के आनन्द के हेत हैं।।७।।

श्रीस्वामी सहचरीदेवजू कौ पद -

प्रेम की पताका दिन रात फहरात जाकी बाजत निसान मुद वृन्दावन धाम हैं। स्यामास्याम आँखिन में नाम जस लाखन में भाषन में जात बलिहारी जन ग्राम हैं।। परम प्रचण्ड तेज मारतण्ड हूँ ते अति सीतल सभी के सम सोभा अभिराम हैं। स्वामी हरिदासजू के दुतिय अनूप रूप ललितकिसोरी कैधौं ललित ललाम हैं।।८।।

श्रीस्वामी ललितमोहनीदेवजू की

मंगल-बधाई

राग-बिलावत, स्याम कल्याण, ताल-चौताल, अद्धा तिताला

मोहिनी सी गोरी अति मोहिनी सी भोरी छबि मोहनी रँगीली रंग भरि रंग होरी है। मोहनी बिचित्र सोभा मोहनी आनन्द गोभा मोहनी छबीली संग रसिक बोरी है।। मोहनी परम पास मोहनी हिये हुलास मोहनी मधुर हास मोहनी की ओरी है। मोहनी उजारी रूप मोहनी रसिक भूप मोहनी सरूप किधौं मोहनी किसोरी है।।१।।

मोहनी नवेली अलबेली संग लसै सखी मोहनी निरखि सोभा सरस सँवारी जू। मोहनी रसिक रासि मोहनी हिये हुलास मोहनी सहज प्यारी पीय हीय धारी जू।। मोहनी रँगीली गोरी मोहनी बिचित्र भोरी मोहनी रसाल केलि परम उदारी जू। मोहनी बिसाल नैन मोहनी मधुर बैन मोहनी सुहाग भरी मोहनी निहारी जू।।२।।

राग-बसन्त बहार, ताल-तिताला

रूप के जाल पर्‌यौ मन मेरौ।
जोवन रस पीवत न अघातौ मुसकिन हूँ अरूझेरौ।
कुञ्जमहल रतिपति दल छायौ बिबस भयौ बिबि नेरौ।
श्रीललितमोहनी सब दुख दीनो दुहुँन नेह घनेरौ।।३।।

खेलत आजु प्रिया नवरंगी।
चमकत रमकत लागि स्याम उर ललितमोहिनी संगी।।
जोवन झलक ललक सुन्दरि की बाढ़्यौ रंग अनंगी।
यह सुख पीवत जीवत हम सब देखत केलि तरंगी।।४।।

मोहनी मोहनलाल प्रिया की रहै निसिबासर में पागी।
किये बह जीव सनमुख जानि दियो बनवास सबै भय भागी।।
सदा सब पोष रहैं निरसोक महामधुरे कहैं बैन अनुरागी।
रहैं बन गाज निसानन बाजत प्रगट हरिदास महा बन रागी।।५।।

श्रीस्वामी राधाप्रसादजू के पद - राग, ललित, ताल-धीमा-तिताला

प्रगटे श्रीललितमोहनीदेव उदार।
रसिकन के आनन्द अति बढ़्यौ महाप्रेम सुखसार।।
श्रीवृन्दावन सुखसागर नागर ललित रूप अपार।
श्रीराधाप्रसाद सखी निरषि हरिष कें पहिरायो उर हार।।६।।

माघ एकादसी आई जू कृष्णा।
श्रीहरिदास कृपा की मूरत जनम जनम की गई तृष्णा।।
श्रीगुरू सेवा रसनिधि सिज्या करि परिहारी सब पृष्णा।
श्रीराधाप्रसाद इनहीं की सेवा और करै सो (सब) धृष्णा।।७।।

बजत बधाई परम सुखदाई।
प्रगटे परम उदार सिरोमनि श्रीललितमोहनी (अति) सुखदाई।।
प्रगटे कियो रसरीति गान कौ ललित रूप रस अधिकाई।
सन्तन सेवा रस अमृत जान्यौ श्रीराधाप्रसाद बनि आई।।८।।

राग-भैरवी, ताल-अद्धा तिताला

आजु बधाई श्रीवृन्दावन।
कुञ्जमहल श्रीबिहारीबिहारिन केलि करत छिन ही छिन।।
श्रीहरिदासीजू लाड़ लड़ावत इनही कौ ये हैं धन।
श्रीललितमोहिनी की निजु जीवन ये वे वे एकै मन।।६।।

आजु बधाई श्रीवृन्दावन सुखसिंधु हिलोर।
प्रियालाल तन मन हुलसाने मनसिज सौं मेघन की घोर।।
सब सखी उमगि उमगि गुन गावैं नाचत मोर चकोर।
ललितमोहिनी के उर बिहरैं नैंन चमकि चितचोर।।१०।।

विशिष्ट-पद

श्रीगुरूदेवजू के पद- राग-धनाश्री (पटदीप) होरी, ताल-धमार

मृदुरस रंग रंगीली नागरि रस रँगे हैं रसिक सुकुँवार।
दोऊ इकरस वैस बिराजहीं सुख साजत बिसद बिहार।।
जै श्रीवृन्दाविपिन विलोकहीं सब द्रुम दल बेलि विकास।
निज आनन्दहिं सूचहीं मिलि करत परस्पर हास।।
कुञ्जावलि कुसुमावलि अलि अवलिन के वृन्द।
कौतिक भूले कौतिकी मिलि पान करत मकरन्द।।
सुमननि सेज सहज सजैं बनि बैठे अंक निसंक।
अंगराग अँग मरगजे मानौं उपजे हैं मदन मयंक।।
कज्जल मंजुल अरूनई मिलि कलित कपोल तँबोल।
यो हिलि मिलि रस बस भये हँसि मृदु मुख मीठे बोल।।
माँग पाग धसि खसि रही सनि मृगमद सिंदूर।
अति श्रमजलिन सिथिल भये बलि राते बदन गरूर।।
दसन बसन रसना रसैं बस पान करत मन धीर।
उरज करज परसैं हँसैं रस विवस बिसरि गये चीर।।
इहि रसमत्त मगन भये मनमोहन मिथुन किसोर।
विपुल विनोदनि वारषहिं यहै रहनि निसि भोंर।।

इहि सुवास रस परसहिं दिन दरसैं केलि कलोल।
सुनि दीन बचन आधीन के यों लीन भई बिनु मोल।।
इनके अँग संग कौ सुख को कहै अभिकृत अभिसार सिंगार।
श्रीविचित्रबिहारिनिदास कें निरवधि नित्यबिहार।।

राग-सुहो विलावत, ताल-धमार

नूपुर रव श्रवन परी। सुनि स्यामहिं सुधि बिसरी।।
बिसरी सबै सुधि सुनत स्यामहिं पीत बसन कहूँ खसे।
कहूँ मुरली मुकुट कहूँ हरि प्रान प्यारी में बसे।।
जकि थकि रहे तिहि ठौर। श्रोता सुघर सिरमौर।।
श्रोता सुघर सिरमौर सुन्दर विम्वमोहन मोहिये।
सखी कछु आसक्त सूचत विवस है हरि सौं हिये।।
नित करत कुंज कौतूह। मिलि सुखद समर समूह।।
मिलि सुखद समर समूह सुर सर स्याम यों मरमनि हये।
देखि मुरलीधरनि की गति गर्व मुरली के गये।।
मोहन मुख मौन धरी। पुनि सुनिबे की साध करी।।
करी साध सुनाइ प्यारी बहुरि चरन चपल किये।
सप्त सुर संगीत वारत रीझि पिय पद उर लिये।।
प्यारी पिय अंक भरैं आनन्द आँसु उमगि ढरैं।।
ढरैं आनन्द अश्रु पिय के पलक सौं पल ना लगैं ।
पाइ सोभासिंधु तन मन मत्त सब जामिन जगै ।।
माधुरी धर बर ब्योम। रसधार बर्षत रोम।।
रोम रोम बसीकरन गुन प्रिय तन सेवत सदा।
नव निकुंज बिहार राजत महामत्त मदन मदा।।

ये नित्य कौतुकी कुँवरि किसोर। जानत नहिं निसि गत भोर।।
भोर जानत नाहिं निसि गत नबल नव रूचि क्रीड़हीं।
अनन्य श्रीहरिदास अंग अंग बिपुल प्रेमनि ब्रीड़हीं।।
ये बन बिहरत प्रेम प्रबीन। नागरी नेह नवीन।।
नागरी नेह नवीन छिन छिन या सुखै कासौं कहौं।
महामधुरे रस उपासक स्वादभेदी जो लहौं।।
यह रस रसिकन कौ रस सार। यह रस रूप विसद बिहार।
रस रूप विसद बिहार जिनकैं और सुन्यौ न भावई।
जै श्रीवरबिहारिनिदास रसिकन हरषि सुजस सुनावई।।
यह रस रसिकन कियौ है निदान। यह रस सुनहु तजि अभिमान।।
अभिमान तजि भजि सुनहु प्रानी जन्म जन्म के श्रम मिटै।
प्रगट ललिता रूप श्रीहरिदास निज नामहिं रटै।।

श्रीस्वामी नागरीदेवजू के पद - राग-विहाग, ताल-धमार

श्रीवृन्दावन विपिन बिनोद मोद अति रति मन भाई।
पुलिन नलिन नव रंग सुभग जमुना फिरि आई।।
सारस हंस चकोर मोर नृत्तत गति माई।
कमल कुञ्ज कल्पद्रुम लपटि लता ललिताई।।
चित्रित दल फल फूलनि पीत असित अरूनाई।
विविध फूले फूले मधुरितु माधविका मधु आई।।
कूजित कोकिल कीर भीर भृंगनि गुञ्जाई।
त्रिविध पवन मृदु गवन भवन मन अति रूचिदाई।।
बनबीथी विचित्र सुरंग अनंग चित्र चतुराई।
रंगमहल मनिमय प्रतिबिम्बित धार झाँई।।

कुसुमित बिमल बितान लाल मुक्तन छबि छाई ।
अद्‌भुत सखी सुख दम्पति सम्पति देखि सिहाई ।।
बैठे निकुञ्ज झरोखनि विचित्र बनै बनराई ।।
छत्र चँवर जुगराज सजैं सहचरि सुखदाई ।
ललितादिक झूमि झुंडनि झूमक दै दुलराई ।।
एक अरगजा सरस सुगंध अबीर उड़ावत आई ।
एक बाजे विविध बजावत गावत सुरनि सुनाई ।।
एक नृत्त गीत संगीत उघटत सब्द सुनाई ।
तान तिरप में मान जान अतिसै सुघराई ।।
रूख लै स्वास सुरन सेवत सखी करत बधाई ।
उड़त पराग रह्यौ रमि राग सुरंग बढ़ाई ।।
करत कुञ्ज कौतूहल प्रीतम प्रियहिं रिझाई ।
तब कहत प्रिया जू सौं लाल ललित मुख करत बड़ाई।।
रीझि रसिक बीरी देत बसन भूषन पहिराई ।
दोऊ गुन रस रूप अनूप सकल अंग सुन्दरताई ।।
प्रतिबिम्बित विवि बदन बिलोकत अति चपलाई ।
अंग अंग पुलक ललक मन लालन लेत जँभाई ।।
अति उदार सुकुँवार त्रिषित आतुर अकुलाई ।
तब जानि बिबस मनमोहन मानिनि मृद मुसकाई ।।
तब हँसि कसि कामिनि कंत लटकि उर कंठ लगाई।
दरस परस रस सरस अधरसुधा मधु प्याई ।।

मगन मन मुदित छबीली छबीले लाल लड़ाई ।
गए चिकुर चन्द्रिका छूटि कुसुम मनो मधुप उड़ाई।।
कहुँ अञ्जन कहुँ बन्दन चन्दन चित्र बनाई ।
इति विधि खेलें फागु सरस अनुराग सदाई ।।
न जानत कुंवरि किसोर कित नसि निसि जाई ।
राग रंग अंग संग बिहरत अति सुख पाई ।।
श्रीबिहारीबिहारिनिदासि सुखद संग सुरति सहाई ।
श्रीनागरीदासि निरखि छबि तृन तोरति बलि जाई।।

राग-धनाश्री होरी, ताल-धमार

मेरे लाल लड़ैती रंग भरे मिलि खेलत छिन छिन होरी हो।
सुरति रंग अंग अंग छिरकत नित नवल छबीली जोरी हो।।
नव गुन रस रूप बिराजहीं कोककला अति जान ।
तान तरंगनि मन हरैं मिलि गावत रसिक निधान ।।
प्रेम उमगि चित चौप सौं चितवत बिबि मुख सुखरासि ।
कर कपोल परसैं हँसैं अँग अंग अनंग प्रकासि ।।
पुलकि पुलकि प्रीतम प्यारी लीने उर सौं उर लाइ ।
महामाधुरी पान के उपजत नव नव भाइ ।।
नवल निसंक अंक भरैं मन मगन भये चित चाइ ।
रस सागर नागर नवल क्रीड़त अति सुख पाइ ।।
तान तरंग मन भाँवती छबि उपजत रति दुहुँ कोद ।
रँगभीने लीने सहचरी सँग बढ़े बिचित्र बिनोद ।।
नैंन मैंन रंग रगमगे मृदु बैन सिथिल सुकुवाँर ।
श्रीविचित्रबिहारिनिदासि के उर आनन्द करत बिहार ।।

सरस सुहागिनि सहचरि नागरि नवल किसोर ।
नित नव निकुञ्ज सुख पुञ्ज में मिलि बिलसत निसि भोर।।
महामत्त मनमोहनी मोहन खेलत है रस होरी हो ।
प्रेम सहित सेवत सब सम्पत्ति लिये रूख सुख सोई सोरी हो ।।
सखी बाजें विविध बजावैं मधुरे सुर गावैं सहचरी चहुँ ओरी हो ।
सुक पिक भृंगनि राग रह्यौ रमि सुर देत हैं मोरा मोरी हो ।।
मौज मनोजनि चोज लाड़िलीलाल लेत चितै चित चोरी हो ।
सौरभ सरस अंग अंग अरगजा छिरकत छबि स्यामा गोरी हौ ।।
छन्द बन्द तकत छबीले इत भामिनि भेद भुकुटी भरि भोरी हो ।
सुर स्वासनि कसत हँसत कहि कहि रीझि कहत हो हो होरी हो।।
अंग संग सुरति हिडोरैं झूलत फूलत उर कर बिबुक टटोरी हो।
अद्‌भुत रंग अनंग प्रेम रस बिहरत कुंवरि किसोरी हो ।।
दोऊ लटपटात घूँमत मद झूमत नैननि नेह नयोरी हो ।
मधु मकरन्द दुलहिनी दूलहु पीवत मुदित मधु घोरी हो ।।
फूले बदन कमल लोचन मानों मधुप पराग प्रेम रंग रोर हो ।
रगमगे बसन कसन कंचुकी छबि बिथुरी अलक कच डोरी हो।।
श्रीबिहारीबिहारिनिदासि सुखद रति बरनैं ऐसो कबि को री हो ।
रहैं मगन दासि श्रीनागरी नागर नव अबिचल यह जोरी हो ।।
झूलत फूलत लाड़िले मिलि अँग संग सुरति हिडोरैं ।
आभूषन बाजे बाजहीं मधुर मधुर सुर थोरैं। ।
सप्त सुरनि राग रमि रह्यौ गावैं हँसैं संग सहचरी चहुँ ओरैं।
मदन मुदित मन मानिनी नव नेह सौं नवल निहोरैं ।।

बचन रचन सुनि लाल के प्यारी मुसिकत हैं मुख मोरैं ।
दूलहु दुलहिनि लाड़िली नव रंग अनंगनि रोरैं ।।
बिबि विधु बदन बिलोकहीं रँगे लोचन ललित चकोरैं ।
मैन ललक पलक न लगैं यौं हँसि हँसि चिबुक टटोरैं ।।
हाव भाव चित चौंप सौं कंचुकी छंद छंद छबि छोरैं ।
छबि सों छैल छबि छिरकहीं अंग अरगजा रंग घोरैं।।
मौज मनोजनि चोज सों छुटै भुकुटी कटाछि झकोरैं।
रीझि रसिक रस बस भए सौरभ रससिंधु हिलोरैं।।
अधरसुधा मधु माधुरी पीयें जीयें मुखसों मुख जोरैं।
फूले अलि पराग अनुराग सों रति रगमगे हित चित चौरैं।।
यों बिहरत नवल निकुंज में राजैं सुभग साँवल तन गोरैं।
श्रीबिहारिनिदासि लड़ावहीं भई बिपुल प्रेम मन भोरैं।।
जै जै श्रीहरिदास प्रताप ते सुख लो सरस सिरमोरैं।
श्रीनागरिदास बलि बलि हौं तुम नित नव नवल किसोरैं।।

राग-काफी धनाश्री होरी, ताल-धमार

लाल मनमोहनी हो।

काम कुंज कल कौतुकी मनमोहिनी हो मनमोहन मन हरि लेत।
अद्‌भुत रूप अनूपम छबि प्यारी पियहिं सहज सुख देत।। लाल

केस कुसुम कबरी लसैं मोतिन मंग अभंग।
अलक झलक श्रवनन खुभी बैंदी विचित्र सुरंग।।
भ्रूभंग तरंग अनंग नचैं ललित गति लोचन लोल।
नासिका नथ निरखि कैं ललित लाल लियैं मोल।।

अरून अधर दुति दसन की चिबुक चारू स्याम बिन्दु।
झलक कपोलन छबि छई वारों कोटि रवि इन्दु।।
चित्रित चोली उर लसै कण्ठ जगमगति पोति।
मृदु मनि लाल गुलाल की द्वै लर मोतिन जोति।।
बाहु बिचित्र बलया लसैं कृसि कटि किंकिनि जाल।
पग नूपुर मनि चूरा लसैं गति मोहत मत्त मराल।।
सारी सुवन लँहगा लसैं स्याम सुभग गोरै गात।
निरखि नव नैंन सिरात स्याम खेलन कौं अकुलात।।
निरखि हरखि बरषत सुखै हँसि करसि काम किसोर।
लाल उदित मदन मन मुदित है छुवै अचंल छबि छोर।।
हँसत लसत लाल रूख लियें कहत मधुर मृदु बैंन।
बहँसि रहसि रस रंग बढ़्यौ सैन मैन सुख चैंन।।
चारू चितै चित वित हरैं मिलि अंग अंग सलोल।
बिहरत भुज डाँडी गहैं झूलैं सुरति रंग हिडोल।।
सौरभ सरस अंग अरगजा छिरकि मुख उरज सरोज।
श्रम जलकन छबि छीटैं फबी अंग मौज मनोजनि चोज।।
अंग अंग रति प्रेम सौं मन तरंग झोटा देति।
रीझि बसन भूषन अलकैं छुटी वारों मोती कुसुम समेति।।
उदार अधर मधु माधुरी प्याइ पीवत कुँवरि किसोर।
रस बस मत्त मगन भये नहिं जानत निसि भोर।।
कपोल पलक रँगे पीक सों अधर अंजन अनुराग।
सुरत खेल अति रँग रह्यौ सरस रस फाग सुहाग।।
सेवत सुख रूख सहचरी ललित जै श्रीहरिदासि।
श्रीबिहारीबिहारिनिदासि अंग संग फूलत बलि नागरीदासि।।

राग-मारू, ताल-धमार

खेलत आजु रसिकबर नवल कामिनी कंत।
नव बन नव निकुंज नित्य नव आनंदहिं न अंत।।
नव द्रुम बेलि केलि नव सुखद तरनिजा कूल।
तहाँ भृंग बिहंग कुलाहला मत मुदित मन फूल।।
पुहुप पराग पवन बहै बिलसत नाना रंग।
नव अनुराग नई रति नवल सहचरी संग।।
संच सप्त मधुरे सुर गावत सरस धमारि।
सुनत श्रवन मन हरषित नेह नवल सुकुँवारि।।
गौरस्याम रति सागर नागर नवल किसोर।
मौज मनोज मनहीं मन उठत तरंग दुहुँ ओर।।
खेलत अति रस मेलत रंगभरे सुखरासि।
मदन मुदित दोऊ मिलि करत परस्पर हासि।।
भृकुटि कटाछिन चितवत प्रिया अंचल की कोर।
श्रवत सुधा ससि मानों मोहन नैन चकोर।।
रोम हरषि पुलकाकलि बिहरत प्रेम गंभीर।
गावत रीझि रिझावत सुघर सुरत मन धीर।।
कबरी कुसुम केस कटि कसन कंचुकी छूटि।
सहज सुधा सुंदरवर पीवत अधर मधुर रस घूँटि।।
अंजन अधरनि पीक कपोलनि नखसिख चित्र बनाइ।
अंग अरगजा श्रमजल मानों छिरकत छबि रही छाइ।।
रहसि रवन तन मन मिलि भये मत्त मगन मन मोद।
तब श्रीहरिदासी सहचरी धाइ धरे दोऊ गोद।।

जै श्रीबिपुल बिहारिन दासि दरसि सेवत नव नव भाइ।
श्रीनागरीदासि निरखि दम्पति छबि तृन तोरत बलि जाइ।।

बिहरैं श्रीस्यामा स्याम उदित अनंगे । सौरभ सदन सुख सेज सुरंगे।।
गौर साँवल झलमलैं अँग अंग । मौजनि मनोज मनौं नृत्तत सुधंगे।।
लटकति ग्रीवाँ गति भेद भूभंगे । उघटत सब्द ग्रिग्रि ताता थुंग थुंगे।।
बाजत बलय मानौं मधुर मृंदगे । कुंणित किंकिनी सुर नूपुर उपंगे।।
सादीये सहजादी सुंदरि सोहैसीसमंगे। मौहै हैं निरखि मोहन नासिका लवंगे।।
प्रतिबिंबित विवि बदन दरंगे । लगत न पलक नैना नेह भये पंगे।।
सोभित सुभट पट नट नवरंगे । काम कटाछिन बान धनुष भूभंगे।।
अधर मधुर जीति प्रति रति रंगे । मान न विरह भ्रम तहाँ न प्रसंगे।।
जचि रचि सचि सुख ललन त्रिभंगे । प्रेम प्रबीन प्यारी हँसि कसि रंगे।।
रोम रोमनि रमन रमे आनंद उतगे । रस बस प्यारी प्रीतम लेत उछंगे।।
सुरत संगम सिंधु प्रेम की तरंगे । तन मन मगन चतुर चित चंगे ।।
विटत लपटी कुजे ज्यौं बिहंगे । पुहुप पराग अलि अंगनि आलंगे।।
विपिन बिनोद नित यहै हौं जाचिंगे ।रसिक अनन्यश्रीहरिदासी सुख संगे।।
विचित्र बिहारीबिहारिनिदासि सब अंगे । सेवैं श्रीनागरिदासि प्रेम अभंगे ।।

झूलत डोल नबल स्याम प्रिया इत गोरी ।
नव निकुंज नव रंगमहल अति विचित्र बनी यह जोरी।।
गावत तान तरंग अनंगनि रीझि कहत हो हो होरी ।।
डाँडी छाँड़ै खेल करत परिरंभन चुंबन देत निहोरी ।
कच कुच कर कंचुकी रस परसत बिहरत कुंवरि किसोरी।।

तब सहचरी अति अनुराग उड़ावत बूका बंदन रोरी ।
निरखि नागरीदासी दम्पति छबि बिपुल प्रेम भई भोरी।।

राग-काफी होरी, ताल-धमार

छबीली नागरी हो,सारी सुमन सीसफूल राजैं मोतिन मंग सुरंग।
कबरी कुसुम करनफूल झलमलैं अंग अंग ।।
आनन अलकाबली छबि बैंदी भृकुटी भाल ।
अरून अधर दसननि दुति लोचन लोल विसाल ।।
नासामनि चिबुक चारू कण्ठ जंगाली पोति ।
कुच कमल कंचुकी चित्रित द्वै लर मोतिन जोति।।
बाहु बलय लँहगा लसैं कटि नूपुर रव (जु) रसाल।
लटकि चली पग प्रेम प्रिया मोहै मत्त मराल ।।
बैठी सौरभ सुख सेज पर पोषति पिय प्रान ।
रोम रोम सींचत रसैं दै अधरामृत पान ।।
हँसत लसत प्रेम मुदित उदित अति उदार ।
परस सरस सुरत रंग वर विचित्र बिहार ।।
अंग अंग माधुरी तरंग सुन्दरी सुकुँवारि ।
अद्‌भुत मौजनि चोज रहत नित नागर नैन निहारि ।।
श्रीकुञ्जबिहारीबिहारिनिदासि सुप्रेम प्रकासि ।
नव नव रति रंग महल सेवैं श्रीनागरीदासि ।।

श्रीस्वामी बीठलविपुलदेवजू कौ पद-

डोल झूलैं स्यामास्याम सहेली ।
नव निकुञ्ज नवरंग पिया संग बिहहरत गर्व गहेली ।।
कबहुँक प्रीतम रमकि झूलावत कबहुँक प्रिया नवेली
।श्रीबीठलबिपुल पुलकि ललितादिक देखत आनन्द केली।।

श्रीगुरूदेवजू के पद-

डोल झुलावत कुञ्जबिहारी ।
रमकि धरत पग नव जोवन भरि अति आनन्द दुलारी ।।
सारंग राग अलापत लाल रसाल दै दै करतारी।।
कबहुँक हँसत हँसावत रीझि रिझावत प्रीतम प्यारी ।।
री तब कर गहि लेत किसोरकिसोरी पुलकि भरत अँकवारी।
श्रीबिहारिनदासि दंपति नव नव छबि पर छिन छिन बलिहारी।।
डोल झुलावत लालबिहारी नाँउ लै लै बोलैं लालन प्यारी।
हों दुलहा दुलहिनी दुलारी सुन्दरबर सुकुमारी ।।
नखसिख सुन्दरि सिंगारी केस कुसुम सुहस्त सँवारी ।
स्याम कंचुकी सुरंग सारी अंचल चंचल छबि न्यारी ।।
बारम्बार बदन निहारी अलक झलक झलमलारी ।
रीझि रीझि लालन लै बलिहारी पुलकि भरत अँकवारी ।।
कोककला निपुन नारी कंठ सुघर सरस भारी ।
सुजस गावत दासबिहारी बिहारिन की बलिहारी ।।

श्रीस्वामी नागरीदेवजू कौ पद-

झूलत फूलत स्यामा स्याम ।
फूलडोल को फूल बनायो फूलैं फूल सुभग सुभ ग्राम ।।
फूलन ही की सेज्या राजत फूलनि ही के धाम ।
उभै अंग पर फूल परस्पर उपजावत अभिराम ।।
फूलन ही के आभूषन राजत देखे पूरन काम ।
श्रीनागरिदासि निरखि ललितादिक फूल सों फूली भाम।।

श्रीस्वामीजू कौ पद- राग-गौरी, ताल-चौताल

नव निकुंज ग्रह नवल आगैं नवल बीन मध्य राग गौरी ठटी। मानौ दस इन्दु पीयूष बरषत सुखद चपल करजावली दृष्टि पिय की जटी ।। रीझि रीझि पिय देत भूषन बसन दाम उर रसन दसननि धरत निरखि सारंग कटी । रसद श्रीहरिदास बिहारी अंग अंग मिलत अतन उदोत करत सुरत आरंभटी।।

श्रीस्वामी रसिकदेवजू कौ पद-

मंद मंद गति धरति अवनि पग श्रीस्यामा जू देखत बन सोभा। प्रीतम कौ गहैं हाथ पाछै निजु सखी साथ चौंर सौं भौंर उड़ावति निकटि झुकि आवत सौरभ के लोभा।। कालिंदी के कूल नाना बिधि फूले फूल रहसि कछु कहत बात मंद मुसिक्यात चितवन चित चोभा । श्रीरसिकबिहारी रूप उजारी बैठे पुलिन बिछाइ दुकूल आनंद के ओभा।।

श्रीस्वामी बीठलविपुलदेवजू कौ पद-

सुनहु रसिक श्रीवृन्दावन कौ जस ।
कुञ्जकेलि मानिनी मनोहर परबस भये नाहिनैं अपने बस ।।
यहि बन नित्य नवीन जुगलवर द्रुमदल दिव्य श्रवत सलिता लस।
श्रीबीठलबिपुल विनोदबिहारी कौ पान कियौ चाहत रसना रस।।

श्रीगुरूदेवजू के पद-

देखि सोभा सखी अति बन बिराजैं ।
फूल में फूल अनुकूल सब द्रुम लता लपटि भावै भजति स्यांम सुख साजैं ।। और रोचिक रसिक रहत राधा बसिक सघन तन तडित मिलि मधुर मृदु गाजैं । मुदित मोरी मोर देत चित चहुँ ओर रीझि कुँवरि किसोर सब सुख समाजैं ।। कहत श्रीमुख घनि

धन्य रसिक अनन्य रहत सन्मुख सुखद मम केलि काजैं।
श्रीबिहारिनदासि बिदित सुख समै मिलि हँसत सुजस रसना रसत सब दिन सुधनि आजैं।।

दूलहु दुलहिन दिन दुलराऊँ ।
कुमकुम मुख माँडों मडवातर नवल निकुञ्ज बसाऊँ ।।
बिबिध बरन गुहि सुरंग सेहरे रसिकनि सीस बँधाऊँ ।
कोमल पीठ दीठि करि ईठनि डीठि मिलै बैठाऊँ ।।
पानि परसि हँसि बचननि रूचि अंचल चंचलहिं गहाऊँ।
परम नरम रस रीति प्रियाजू की प्रीति निरंतर गाऊँ ।।
उत्कंठित जाँचित जुवतिन हित केलि बेलि बरषाऊँ ।
श्रीबिहारिनदासि हरिदासी के संग देखि दुहुँन सचु पाऊँ।।

प्यारीजू मोकों कृपा करौ ।
ऐसी रूचि उपजै जिय मेरे तुमहिं न छिन बिसरों ।।
आपुन अपनी करि प्रेम बढ़ावहु निज रस रीति सौं हियो भरौ।
श्रीबिहारीबिहारिनदासि कहत यों बिपिन बिहार ढरौ ।।

श्रीस्वामी नागरीदेवजू के पद-

मंजन करि मनमोहनी मोहन मुदित परस्पर करत सिंगार ।
माँग सुहाग कुसुम रची पाग अति अनुराग पहिरि उर हार ।।
मृगमद आड़ बनी बर बैंदी अंजन नैंन निरखि मुख चारू ।
श्रीनागरीदासि बलि विचित्र बिहारीबिहारिन हुलसि बिलसि सुखसार।।
बैठे नव निकुञ्ज मंदिर में गावत राग बिभास प्रवीन ।
नव किशोर चितचोर भोर प्यारी अति ही सरस बजावति बीन।।
कोक निपुन गुन सुघर लाड़िली पियहिं रिझै रस बस करि लीन।
श्रीनागरीदासि बलि बलि ललितादिक फूलत दिन देखि रसिक नवीन।।

श्रीस्वामी सरसदेवजू के पद-

लाल प्रिया कौ सिंगार बनावत ।
कोमल कर कुसुमनि कच गूँथत मृगमद आड़ रचित सचुपावत।।
अंजन मन रंजन नखवर कर चित्र बनाइ बनाइ रिझावत ।
लेत बलाय भाय अति उपजत रीझि रसाल माल पहिरावत ।।
अति आतुर आसक्त दीन भये चितवत कुँवर कुँवर मन भावत।
नैंनेन में मुसिकानि जानि पिय प्रेम बिबसि हँसि कंठ लगावत ।।
रूप रंग सीवाँ ग्रीवाँ भुज हँसत परस्पर मदन लड़ावत।
श्रीसरसदास सुख निरखत निहाल भये गई निसा नव नव गुन गावत ।।

आज अति राजत नागरि नाहु ।
बन घन कुञ्ज कुञ्ज प्रति डोलत अंसन पर धरि बाहु ।।
फूली लता परसि रस हँसि भरे गावत अधिक उछाहु ।
मंद मंद गति अति छबि उपजत निरखि सखी बलि जाहु।।
आनंद मगन भये लटकत नट पट भूषन तन जाहु ।
श्रीसरसदास सुखरासि लाड़ली लालन संग किलकाहु ।।

श्रीस्वामी नवलदेवजू कौ पद-

रंग भर्‌यो लालन रंगीली प्यारी राधा ।
एक तन एक मन एक ही समान दोऊ नेक हूँ न न्यारे ह्वै सकत पल आधा ।। छबि सौं छबीली भाँति नैननि में मुसिकाति मुसकनि ही में रंग बढ़्यौ है अगाधा । तैसीये नवल सखी तैसेई कुञ्जबिहारी तैसी मेरी प्रान प्यारो पूजी मन साधा ।।

श्रीस्वामी नरहरिदेवजू कौ पद-

सखी आज बने पिय साँवरे
रूप अनुप अधिक छबि राजत कुटिल केस मनौं भाँवरे ।।
टेढ़ी पाग ग्रीवा कटि टेढ़ी चितवनि की बलि जाँवरे ।
श्रीनरहरिदास पिय की छबि निरखत प्यारी रूप समाँवरे ।।

श्रीस्वामी रसिकदेवजू के पद-

प्यारी जू तैं मोहिं मोल लियौ ।
तेरी कृपा मदन दल जीत्यौ तेरौ जिवायौ जियौ ।।
उमड़ी सैन महामन्मथ की तैं अधरामृत दियौ ।
श्रीरसिकबिहारी कहत दीन ह्वै धनि स्यामा कौ हियौ ।।

श्रीस्वामी ललितकिसोरीदेवजू के पद-

जै जै जै श्रीनिधिवन राज ।
गौरस्याम कौ अति सुखदाई सब विधि करत दुहुनि के काज ।।
महारूप रसरासि छबीले अद्‌भुत जामें प्रेम समाज ।
श्रीकुञ्जबिहारिनि ललित रसिकवर तुमही कौ है हमरी लाज।।
श्रीनिधिबनराज की जै रहियै ।
जामें नित्यबिहार निरंतर काम कहानी कहिये ।।
श्रीहरिदास सुभायक अंग संग और कहा हमें चाहिये ।
श्रीकुञ्जबिहारिन प्रानपियारी उमँगि उमँगि दुलरैये ।।
हमारौ महल सदा सुखदाई ।
प्रियालाल कौ रंग बढ़ावत छिन छिन प्रीति सवाई ।।
छलकत छींट परी आन्द की ब्रज में नाँहि समाई ।
यह गुप्त रीति हरिदास प्रगट करी रसिकन के मन भाई।।

परसाद बिहारिन रानी कौ।
अति आनंद बढ़ै छिन ही छिन महाप्रेम सुखदानी कौ।।
जाकी सोभा कहत न आवै अद्भूत रूप निमानी कौ।
श्रीललितकिसोरी लाड़ लड़ावति अति जाननिमनि जानी कौ।।

साधो भाई ऐसौ महल हमारौ।
निरगुन सरगुन वारि है जाकी कहै न वेद विचारौ।।
अद्भूत प्रेम रंग रस अद्भुत अद्भुत नित्यबिहारौ।
ललितप्रिये सुखरासि रसिकवर करि राख्यौ उर हारौ।।

साधौ भजन करै सोई जीतै।
बात बनाये हाथ न आवै अंत चलै उठि रीतै।।
मन इन्द्री के बस है प्रानी खोवत हरि से मीतै।
श्रीहरिदास रसिक केलि बिन और कहा लै कीतै।।

सरि कौन करै मेरी प्यारी की।
जाकौ रूप रूप को मोहै पलक न लगै बिहारी की।।
अद्भुत प्रीति देखैं बनि आवै तन मन अति हितकारी की।
श्रीकुञ्जिबहारिनि ललित लाड़िनी जीवनि प्रान हमारी की।।

नमो नमो जै श्रीवृन्दावन रस बरषत घन घोरी।
नमो नमो जै कुञ्जमहल नित नमो नमो जामें सुख होरी।।
नमो नमो जय कुञ्जबिहारिन नमो नमो प्रीतम चितचोरी।
नमो नमो जय श्रीहरिदासी नमो नमो इनहीं की जोरी।।

श्रीस्वामी नगरीदेवजू के पद-

जै जै श्रीवृन्दान सुखदाई।
ललित लता झूमी द्रुम बेली मनिमय रज कर्पूर सुहाई।।
त्रिबिध पवन मन भवन मधुप कूजित पंछी जमुना रस छाई।
कुञ्जमहल कुसुमित सिज्या पर बिहरत कुँवर कुँवरि सुखदाई।।
ललितादिक निरखत हरषत नित जै जै श्रीवृन्दावन सुखदाई।
विमल कमल कर्पूर पुलिन रज सेवत जल जमुना जुगराजै।।
मृदुमनि भूमि खचित कंचनमय मनसिज सुमन सेज सुख साजैं।
नवनिकुञ्ज बिहरत दोउ प्रीतम श्रीनागरीदास सहचरी समाजैं।।
भृंग बिहंग सरस सौरभता अद्‌भुत विविध भाँति बनराजैं।

श्रीस्वामी ललितकिसोरीदेवजू के पद -

ऐरी मेरो वृन्दावन सुखधाम।
प्रियालाल को लाड़ लड़ावत सब विधि पूरन काम।।
महाप्रेम सोभा कौ सागर रोम रोम अभिराम।
ललित रसिकवर जू की जीवनि कुञ्जकेलि विश्राम।।

जै जै श्रीबनराज हमारे।
जिनकी कृपा बिहार बिलोक्यौ श्रीहरिदास सम्हारे।।
छिन छिन नई नई प्रीति प्रिया की प्रानन हूँ ते प्यारे।
श्रीरसिकसखी अंग संग सहजहीं कबहूँ होत न न्यारे।।

माई धामिन कौ धामी धाम धामवृन्दावन हैं।
प्रियालाल रंगभरे राजैं सदाई जहां एक जिय एक प्रान एक तन मन हैं।।
महारूप रस रास सुख के बिलास दोऊ मिले रस सिंधु आनंद के घन है।
ललित हियेमें आई लालन की भई भाई रोम रोम फूले ऐसे पाये रंक धन है।।

जै जै श्रीवृन्दावन चंद।
महारूप सुखरासि छबीले नित ही बिहरत आनंद कंद।।
जामें बसि जे अनत देत मन तेई हैं अति ही मतिमंद।
रसिक सिरोमनि श्रीहरिदासी कीनें सहज प्रेम के फंद।।

अनन्य कौ धन कुञ्जबिहारी।
श्रीहरिदास प्रेम रस सागर सोभित अंग संग प्रीतम प्यारी।।
श्रीबिपुलबिहारिनदास प्रगट नित सरसदास सुख की बरषा री।
श्रीनागरी नरहरिदास रसिक कुल मंडन जीवन प्रान सुकेल हमारी।।

भजि मन श्रीस्वामीहरिदास
रसिकसिरोमनि आनंद की निधि कुञ्जमहल में बास।।
निरखैं कुञ्जकेलि माधुरी सदा पियारी पास।
श्रीललितकिसोरी परम लाड़ली बिलसत प्रेम बिलास।।

श्रीगुरूदेवजू कौ पद -

को सरि करै हमारी राधा।
यद्यपि नाम महातम सेवत और वैस या रस में बाधा।।
अंग संग नवल किसोरकिसोरी एकबैस रससिंधु अगाधा।
जागत अनुरागत निसिबासर लगत न नैन निमेष न आधा।।
नित्यबिहार अधार हमारें एक प्रेम निज नाम अराधा।
श्रीबिहारीदास हरिदास बिपुल बल सब अभिलाष मिली सुख साधा।।
जै श्रीवृन्दावन घन नव निकुञ्ज में संतत सहज विराजत जोरी।
अति अगाध महिमा रस जिनकौ सो पैयत इक कृपा किसोरी।।
सुक नारद से भक्त मुक्त सनकादिक सुहृदन हूँ ते चोरी।
श्रीबिहारीदास जस कहैं कहाँ लौं रसना सहज तऊ मति थोरी।।

कहत स्याम स्यामा सों मोकों दरसन देत रहौ जू।
अंचल अलक पलक सु निरंतर यह संकोच सहौ जू।।
यह बिनती मानिये श्रबन सुनि नाहिन बचन कहौ जू।
श्रीबिहारिनदासी कहत रूख लिये यह सुख सहज लहौ जू।।

श्रीस्वामी ललितकिसोरीदेवजू के पद -

रस में रस पिये कुञ्जबिहारी।
रस की बात घात पुनि रस की रस ही सों रस दृष्टि निहारी।।
रस की प्रीति रीति सब रस की रस ही उमगत सहज हियारी।
रस की सखी रसिक हरिदासी रस भयौ ललितप्रिये उर हारी।।

हमारे धन वृन्दावन प्यारी।
खरचत खात घटै नहिं कबहूँ बाढ़त छिन छिन अति अधिकारी।।
ताही कौ अभिमान सदाई ताही बल बस कुञ्जबिहारी।
श्रीहरिदासी रसिकसिरोमनि प्रान प्रान मिलि कीनी यारी।।

राख्यौ लाड़ बिहारिनरानी।
जोइ जोइ रूचै करैं पुनि सोई क्यौं न करैं लालै सुखदानी।।
कुञ्जमहल कौ राजतिलक दियौ महाप्रेम अति रस में सानी।
बार बार हँसि कहत लाड़िली ललितकिसोरी मो मन मानी।।

श्रीहरिदास सरन जे आये।
कुञ्जबिहारी ललित लाड़िले अपने जानि निकट बैठाये।।
कुञ्जकेलि निरखैं निसिबासर अति आनंद हिये में छाये।
दासबिहारिन सब सुखरासी प्रानप्रिये हँसि कंठ लगाये।।

श्रीस्वामी भगवतरसिकदेवजू के पद -

हमारी जीवनि जुगलकिसोर।
कुञ्जबिहारिन कुञ्जबिहारी नित नव जोवन जोर।।
भूलि न जाऊ पलक कहूँ इत उत रहों निरंतर पासा।
दंपति संपति दिन दुलराऊ और न दूजी आसा।।
रूपमाधुरी दृगन पियाऊ श्रवन रसीली बानी।
अंग संग उद्गार नासिका तीनौ तान सिरानी।।
असन करौं उच्छिष्ट दुहुन कौ भूषन बसन उतारे।
श्रीभगवतरसिक मनाय लाड़िली करौं लाल दृग तारे।।

हमारी संपति दंपति केलि।
दिन दिन बढ़त घटत नहिं कबहूँ सुखसागर की रेल।।
अतुलित अमित अनूपम अद्भुत रस की ठेलाठेल।
श्रीभगवतरसिक दृगन में दीनी स्यामास्याम सकेल।।

मेरी महारानी श्रीराधारानी।
जाके बल मैं सब सौं तोरी लोक बेद कुलकानी।।
प्रानजीवन धन लालबिहारी कौ वारि पियत नित पानी।
श्रीभगवतरसिक सहायक सब दिन सर्वोपरि सुखदानी।।

सब सुख सदन बदन तुव राधे।
उपमा कमल ससी नहीं पावत भीत मान अपराधे।
मृदु मुसक्यानि हरत मन नैननि बंक बिलोकनि ही दृग आधे।
लेत बलाय दुहूँ कर भगवत रसिकसिरोमनि गुननि अगाधे।।

जावक जुम जुग चरन लली के।
अद्‌भुत अमल अनूप दिवाकर मोहन मानस कुञ्ज कली के।।
मंजुल मृदुल मनोहर सुखनिधि सुभग सिंगार निकुञ्ज गली के।
सुरतरू कामधेनु चिंतामनि भगवतरसिक अनन्य अली के।।
तुव मुखचंद चकोर ये नैना।
अति आरत अनुरागी लंपट भूल गये गति पल हूँ लगै ना।।
अरबरात मिलिबे कौं निसदिन मिलेइ रहत मनो कबहूँ मिलेना।
श्रीभगवतरसिक रसिक की बातैं रसिक बिना कोउ समुझि सकैना।।
हैं हम रसिक अनन्य प्रियापिय कुञ्जमहल के वासी।
नई नई केलि बिलोकैं छिन छिन रति विपरीत उपासी।।
बीरी बसन सुगंध आरसी रूख लै करत खवासी।
देत प्रसाद प्रेम सौं हँसि हँसि कहि कहि भगवतदासी।।

श्रीस्वामी रूपसखीजू के पद -

वंदे श्रीवृन्दावन की भूमि।
ललित लतनि कुंदनमनि खाँची बेलि द्रुम न रही झूमि।।
केलि निकुञ्ज नागरीनागर बदनचंद कौ चूमि।
रसिकरूप दंपति छबि संपति सुरंग रंग अलि घूमि।।
कीजै रंगमहल की दासी।
स्यामास्याम केलि अवलोकौं श्रीहरिदासी पासी।
बिबिध बिहार सार सुख सजनी बिपुल बिहारिन आसी।
सरस नागरी नरहरि रसिक ललित सु चरन उपासी।।
वृन्दावन की सहज माधुरी श्रीस्वामी परकासी।
रूप अनूप निरखि छबि अद्‌भुत महामधुर मृदुहासी।।

श्रीस्वामी रसिकदेवजू कौ पद -

भाग बड़ौ वृन्दावन पायौ।
जा रज कौ सुर नर मुनि बंछित बिधि संकर सिर नायौ।।
बहुतक जुग या रज बिनु बीते जन्म जन्म डहकायौ।
सो रज अब कृपा करि दीनी अभय निसान बजायौ।।
आइ मिल्यौ परिवार आपनौ हरि हँसि कंठ लगायौ।
स्यामास्यामजू बिहरत दोऊ सखी समाज मिलायौ।।
सोक संताप करौ मति कोई दाव भलौ बनि आयौ।
श्रीरसिकबिहारी की गति पाई धनि धनि लोक कहायौ।।

सजनी देखि खेल बसंत।
बन्यौ बन प्रसून फूले नवल कामिनी कंत।।
अरून बसन अंग अंग राजत अधर पलक रस मंत।
नैन सुफल करि पोष नागरी नवल सुखहिं न अंत।।

श्रीवृन्दावन नवल बसंत।
तरू तमाल उर बेली लपटी नवल भामिनी कंत।
नव निकुञ्ज नव केलि कलोलनि बदन कमल अति अलक मंत।
श्रीहरिदासी बिपुल बिहारी नागरि नवल पिय बिलसंत।।

नवल नवल वृन्दावन फूले।
नव पराग अति लोभी झूले।।
प्रिया कनक की बेलि झेलि रहे स्याम तमाल सह अनुकूले।
श्रीहरिदासी बिपुल बिहार नागरि नवल गहि भुज मूले।।

श्रीस्वामी भगवतरसिकदेवजू के पद -

अद्भुत रस की खानि सदा सुखदानि बिहारिनिरानी।
जीवनमूरि बिहारी को धनि वृन्दावन रजधानी।।
आदि न अन्त सनातन अविचल सहज सुभाव सुभानी।
नागरि अति सुकुमार नवल नित रसिक सिरोमनि जानी।।
कोककला संगीत लाल को सिखवति गति रस सानी।
रूप बयस गुन की मरयादा पटतर कौ नहिं आनी।।
सेष गिरीस मेरू मन्दर हिमकंदर में तप ठानी।
ग्रीवाँ सींव सकल सोभा की गोत कपोत उड़ानी।।
मेचक चिकुर सुचारू नीलमनि नीरद छबि न तुलानी।
बेनी बनक बिसाल प्याल अलकावलि अलि अलगानी।।
भृकुटी कुटिल विलोकि काम को दण्ड खंड भयो मानी।
श्रवन श्रवन सुनि गमन गगन में मगन भई शशि रानी।।
बदनचन्द्र को देखि सुधाकर घटत बढ़त भय मानी।
खंजन कंज मीन मृगनैननि सकुचि दुरे बन पानी।।
नासा निरखि सुमन तिल सूखौ कीर पीर उर आनी।
ललित कपोल गोल दरपन मन भये मधूक मलानी।।
अधरबिम्ब दाड़िम दसननि दुति कुंदकली कुम्हिलानी।
बचन रचन मुसिक्यान कोकिला दामिनि घन लपटानी।।
चिबुक चखौंड़ा चारू विराजत गुदना गंड गुमानी।
रस श्रृंगार रह्यौ रजनी में मानस मदन महानी।।
कम्बुकण्ठ की रेखि देखि त्रैकरत समुद्र तनु हानी।
चक्रवाक श्रीफल उरोज तरू सर सेवत बिलखानी।।

बाहु मृनाल भोग भोगी के अंगुल मूँग मुरझानी।
अतिसय भीति अभीत न अबलौं विवरन पंक परानी।।
चल दल उदर त्रिवेनी त्रिबली तलफत समुद्र समानी।
नाभि गँभीर सगीर सुधारस कियो पताल पयानी।।
बिपुल नितम्ब चक्र रति रथ के पृष्ठ पट्टिका भानी।
चाल मराल द्विरद केहरि कटि अटवी अटत अमानी।।
जंघा कदलि देख कम्पै अति गुल्फ गुलाब गलानी।
चरन अरून तल ललित दिवाकर भ्रमत हत मानी।।
कंचन तनु लज परम अग्नि में नख नछत्र नभ थानी।
उमा रमा रति सची सरस्वती सहित सुहाग बिकानी।
सुरतरू कामधेनु चिंतामनि वारि दिये देव दानी।
अष्टसिद्धि नवनिद्धि बापुरी कौंन करै समानी।।
षट्ऋतु बारह मास रैनदिन रहत एकरस सानी।
सेवत स्याम सकाम स्वामिनी स्यामा नेह निधानी।।
सब ऐश्वर्य छिपाइ पाँइ परि दीन भयो अभिमानी।
प्रगट कियो माधुर्य मधुर रस रसिकनरेस निसानी।।
नेति नेति निगमागम गावत पावत नहिं बुधि बानी।
श्रीभगवतरसिक सखियन संग अँखियन निरखि सिरानी।।

राग-टोड़ी, ताल चौताल

श्रीस्वामीजू के पद -

आजु की बानिक प्यारे तेरी प्यारीजू तुम्हारी बरनी न जाय छबि। इनकी स्यामता तुम्हारी गौरता जैसे सित असित बैनी रही ज्यों भुवंगम दबि। इनकौ पीताम्बार तुम्हारो नील निचोल ज्यों

रसि कुन्दन जेब रबि। श्री हरिदास के स्वामी स्यामा कुञ्जबिहारी की सोभा बरनी न जाय जो मिलै रसिक कोटि कबि।।

श्रीगुरूदेवजू के पद -

भोजन करत भली भाँति सोभा बहु भाँतिन कही न जाति।
कोमल करनि लेत देत लालप्रिया मुख मुरि मुरि मुसिकाति।।
बिबिध बिंजन मन रंजन बदननि की काँति।
अति सतृष्ण तृषित क्षुधित पाइ सुधारस बिबिस भूमि न जात।।
बारंबार निहारत आरत इनहि यहै हितात।
श्रीबिहारिनिदासि यहै सुख सेवत निरषि हरषि आँखि न सिरात।।

राग-सारंग, ताल-अद्धा तिताला -

भोजन करत दुहूँदिसि देखौं।
कहत न बनत बिनोद बिहारी बिहारिनि लै उर लेखों।।
अंग अंग अवलोकि लेत दोउ छुधित स्वाद की सेखौं।
बचन रचन रूचि में रूचि पावत सब रस रसिक विसेखौं।।
पान करत मकरन्द प्रियाप्रिय अवधि प्रेम की रेखौं।
यहै अहार बिहार निरन्तर करत न पाक परेखौं।।
इहि रस तुष्ट मेरे प्यारे तुम सुन्दरबर बेखौं।
श्रीबिहारिनिदासि कहत नैन सौं तुम जिन लगौ निमेखौं।।

श्रीस्वामी ललितकिसोरीदेवजू कौ पद -

भोजन जेइयें पिय प्यारी।
अति आनंदभरे रस कौरन परम रंग हितकारी।।
चितै चितै लालन तन मुसिकन त्यौं त्यौं सुख होत हियारी।
श्रीकुञ्जाबिहारिनि ललितकिसोरी जीवन प्रान हमारी।।

भोजन भोगिये पियप्यारी।
कुञ्जमहल ललिता हरिदासी दुलहिनि कुञ्जबिहारी।
श्रीबिपुलबिहारिनिदास सरस मिलि प्याय सुधारस झारी।।
श्रीनरहरिदास रसिक सखियन मिलि जेंवत ललन बिहारी।

श्रीस्वामी पीताम्बरदेवजू कौ पद -

भोजन भोगत हो हम जानी।
अपनी प्रियाजू कौ रूप सुब्यंजन अधरसुधा रस पानी।।
सखिय सँवारि श्रृंगार कौर दृग लेत परम रूचि मानी।
श्रीपीताम्बर दोऊ तृपति न मानत जेंवत रमन रमानी।।

श्रीगुरूदेवजू कौ पद -

भोजन करि बैठे दुलहिन दूलहु।
अचवन लेत कमल आनन सखि निरषि हरिष छबि फूलहु।।
बीरी परस्पर लेत खवावत रूप बैस समतूलहु।
दासिबिहारनि बिपुल रसिक श्रीहरिदासी दंपति रस झूलहु।।

श्रीस्वामी भगवतरसिकदेवजू कौ पद - ताल-अद्धा तिताला

आरति आनि सहचरिन साजी।
मनिमय थार प्रेम की बाती घृत कपूर रूचि राजी।।
जोति जगाय नेह चितवनि मुसिक्यान लाज लजि भाजी।
श्रीभगवतरसिक वारि तृन तोरत झाँझ झालरी बाजी।।

श्रीगुरूदेवजू कौ पद -

आरति कीजै सुन्दरबर की।
नागर नवल निकुञ्ज इन्दु जुग अखिल ताप तमहर की।।
नव विलास मृदुहास मनोहर श्रवत सुधा सुखकर की।
श्रीबिहारिनिदास लोचन चकोर नित अंस प्रिया भुजधर की।।

श्रीस्वामी पीताम्बरदेवजू कौ मंज -

श्रीहरिदास नाम निजु अमृत सब मंत्रनि कौ सारा।
आगम निगम पुरान पुकारैं श्री गुरू रूप हमारा।।
श्रीगुरू वृन्दाविपिन बसावैं दरसावैं पिय प्यारी।
बरसाबैं छबि रूप लहरि की महलिनि संग निहारी।।१।।

सरद निसारी प्रीतम प्यारी रूप उज्यारी आरी।
बोलत है नव लाल रंगीलौ तन मन मोद बढ़ारी।।
तेरे दरस परस बिन यह निसि विस्व अमावस कारी।
पीताम्बर कित जाइ स्वामिनी चरन कमल लपटारी।।२।।

खसम हमारा नंगे सिरदै हौं नगें दी रंडी।
मस्तिक तिलक गलै बिच कंठी तन गूदर कर हंडी।।
कटि कौपीन अँगोछा इक रस ग्रीष्म बरषा ठंडी।
पीताम्बर बन देखि रसिक संग छाँड़ि जगत सब भंडी।।३।।

श्रीस्वामी ललितकिसोरीदेवजू कौ मंज -

श्रीकुञ्जबिहारिन सब सुख रासी अद्भुत रूप रसाला।
मंद बिहँसि चितै छबीली लालहिं करति निहाला।।
अति बड़ भागी रसिक सिरोमनि करि राखी उर माला।
श्रीललित किसोरी लाड़ लड़ावति जानति है निजु हाला।।

श्रीहरिदासी अति रसरासी नित्य सुकेलि विलासी।
प्रीतम पासी बँधी मृदु हाँसी ललित सखी निजु खासी।।
इनकी बात इनहिं बनि आवै भागवान कोऊ पावै।
श्रीकुञ्जबिहारिनि लाड़ लड़ावै निरखत नैन सिरावै।।

रंग नवेली प्रिय अलबेली नित्य लाल सुखदानी।
उमगि उमगि अंकौ भरि प्रीतम महा प्रेम रस सानी।।
तन मन मिलै मित्यौई चाहैं मिलि बिलसनि की बानी।
श्रीललित किसोरी लाड़ लड़ावति अति जाननि मनि जानी।।

रँगी रस रंग तरंगनि में सु माधुरी रूप पियें अति प्यासी।
प्रेम भरी पुलकैं किलकैं कल सुन्दर सुच्छ सुधामय हासी।
कुञ्ज सुमंजु सदा सुख पुञ्ज अनंगनि ओटि लजैं सु प्रकासी।
दंपति केलि दृगंचल झेलि सनेह की मूरति श्रीहरिदासी।।

श्रीस्वामी नागरीदेवजू कौ मंज -

कौन करै तप तरपन तीरथ तीन प्रकार कहाँ मल लाऊ।
कौन करै ब्रत संजम नेम सुप्रेम पुनीत प्रसादहिं पाऊँ।।
कुञ्जनि वास निवास रसिक श्रीनागरीदासि विलास बढ़ाऊँ।
चित्त लगाइ उभै पद अम्बुज नित्त बिहारी बिहारिनि गाऊँ।।

श्रीस्वामी बिहारीबल्लभजू कौं मंज -

सबतें न्यारे सबके प्यारे ऐसी रहनी रहिये।
निन्दा अस्तुति छोड़ि पराई जुगल जीभ जस कहिये।।
दुख सुख हानि लाभ सम बरतै आनि परै सो सहिये।
भगवत रसिक सरन गहि वल्लभ सर्वोपर सुख लहिये।।
यह जग नाम धाम वृन्दावन भेद न काहू पायौ।
अपनी बुद्धि बिकार मुनिन मिलि नेति वेद हूं गायौ।।
आदि मध्य अवसान एकरस काम प्रेम छबि छायौ।
भगवत रसिक अनन्य भेद कह जीवन जुगल बतायौ।।

श्रीस्वामी रूपसखीजू कौ मंज -

फूलनि सेज निकुञ्ज के मंदिर मोहन लाल कौं आनन्द दानी।
अंगनि अंग सनेह भरे मधुरै सुर बोलत कोकिल बानी।
गोरे से गातनि फूल समात न कुन्दन कोंहरी बारह बानी।
सुन्दरि सील सुलज्ज सिरोमनि स्याम सुजान महा महारानी।।
श्रीहरिदास अनन्य नृपति रटि कुञ्जबिहारी पावैगौ।
श्रीस्वामी जू प्रेम सुधार सुहृद सील कौ ध्यावैगौ।।
आसुधीर कौ धीर पीर हर परम पुनीत कहावैगौ।
श्रीवृन्दावन छबि रूप प्रकासै रसिकनि के मन भवैगौ।।

श्रीस्वामीजू की नामावली

जितै स्वाँस नासा चलै तितै जपै हरिदास।
तन मन प्राननि यौं मिलै ज्यौं फूलनि में बास।।
श्रीहरिदास गाऊँ श्रीहरिदास गाऊँ।
श्रीहरिदास गाय गाय विपुल प्रेम पाऊँ।।१।।
श्रीहरिदास नाम गुन रूप तन राऊँ।
श्रीहरिदास प्राननि के प्रान जिवाऊँ।।२।।
श्रीहरिदास लैना श्रीहरिदास दैना।
श्रीहरिदास भजें भैया कछु भैना।।३।।
श्रीहरिदास द्यौसौ श्रीहरिदास रात्यौ।
श्रीहरिदास व्यौहार श्रीहरिदास बात्यौ।।४।।
श्रीहरिदास बल बुद्धि कुल जाति पाँती।
श्रीहरिदास भेंटत सीतल भई छाती।।५।।

श्रीहरिदास अंग बिन संग तजि सातौ।
श्रीहरिदास हिलग बिन हेत करि हातौ।।६।।
श्रीहरिदास प्रेम बिन नेम न सुहातौ।
श्रीहरिदास हित बोलत मिलत महल कौ नातौ।।७।।
श्रीहरिदास नाम रूचि श्रीहरिदास नाम सुचि।
श्रीहरिदास नाम लियैं जाहिं दुख दोष मुचि।।८।।
श्रीहरिदास कर्मैं श्रीहरिदास धर्मैं।
श्रीहरिदास नाम बेधि लै मन मर्मैं।।६।।
श्रीहरिदास ग्यानैं श्रीहरिदास ध्यानैं।
श्रीहरिदास नाम करि कोटि अस्नानैं।।१०।।
श्रीहरिदास नाम मेरे मंत्र माला।
श्रीहरिदास नाम मुद्रा तिलक भाला।।११।।
श्रीहरिदास सेवा श्रीहरिदास पूजा।
श्रीहरिदास भजन बिन भाव नहिं दूजा।।१२।।
श्रीहरिदास भक्ति रति श्रीहरिदास परम गति।
श्रीहरिदास जस गावत भई सुदृढ़ मति।।१३।।
श्रीहरिदास ब्रज रीति श्रीहरिदास रस रीति।
श्रीहरिदास नाम लिसै सकल साधन जीति।।१४।।
श्रीहरिदास निज दरसि श्रीहरिदास रस परसि।
श्रीहरिदास सुख देत श्रीहरिदास हित हेत।।१५।।
अनन्य नृपति श्रीस्वामी हरिदास निज दास।
श्रीवरबिहारिनिदास विलसत विलास।।१६।।

स्फुट-पदावली

श्रीगुरुदेवजू कौ पद-

प्रभु जू हौं तेरा तू मेरा।
राजी खसम कहा करै काजी लोग बकौ बहुतेरा।।
हौं तू एक अनेक गनै गुन दोष न किसहु केरा।
जल तरंग लौं सहज समागम निर्मल साँझ सवेरा।।
कोई स्वामी कोई साहब कोई चाकर कोई चेरा।
बिना ममत्व इकत्व न ऐसा जगतै भक्त घनेरा।।
तन मन प्रान प्रान सौं सन्मुख अब न फिरै मन फेरा।
श्रीबिहारिदास हरिदास नाम निज प्रेम निबेरा झेरा।।

श्री स्वामी भगवतरसिकदेवजू कौ पद-

आचारज ललिता सखी रसिक हमारी छाप।
नित्य किसोर उपासना जुगल मंत्र कौ जाप।।
जुगल मंत्र कौ जाप वेद रसिकन की बानी।
श्रीवृन्दावन धाम इष्ट स्यामा महारानी।।
प्रेम देवता मिले बिना सिधि होई न कारज।
भगवत सब सुखदानि प्रगट भये रसिकाचारज।।१।।
साँचे श्रीराधारमन झूठौ सब संसार।
बाजीगर कौ पेखनौ मिटत न लागै बार।।
मिटत न लागै बार भूत की संपति जैसे।
मिहरी नाती पूत धुवाँ कौप धौंहर तैसे।।
भगवत ते नर अधम लोभवस घर नाचे।
झूठे गढ़ै सुनार मैन के बोले साँचे।।२।।

कुञ्जन ते उठि प्रात गात जमुना में धोवै।
निधिवन करि दंडौत बिहारी कौ मुख जोवै।।
करै भावना बैठि स्वच्छ थल रहित उपाधा।
घर घर लेई प्रसाद लगै जब भोजन बाधा।।
संग करै भगवत रसिक कर करुवा गूदर गरें।
व न्दावन बिहरत फिरै जुगल रूप नैननि भरें।।३।।
गावैं हम सोई करैं सहज लाड़ली लाल।
करैं लाड़लीलाल सो हम गावैं तत्काल।।
हम गावैं तत्काल सूत दुहूँ दिसि कौ ऐसौ।
बुध जन लेहु विचार कमल दिनकर कौ जैसौ।
लीला ललित बिहार स्याम स्यामा मन भावैं।
भगवत रसिक अनन्य उपासक अनुदिन गावैं।।४।।
कोउ सुकिया कोउ परकिया कलप किये मत वादि।
जोरी भगवत रसिक की नित्य अनंत अनादि।।
नित्य अनंत अनादि लोक तें रीति विलच्छन।
श्रुति स्म ति बिलगाय देखि अनुभव के अच्छन।।
सहज प्रेम माधुर्य रहत अनुरागे दोऊ।
ललिता सखी प्रसाद बिना तहँ जात न कोऊ।।५।।

श्रीस्वामी सहचरिसरनदेवजू कौ मंज-

नाभी भँवर चारु छवि लहरैं गरजि मुरलिका भावे।
बंक बिहारी नाम सलोना नेह नदी चलि आवै।।
रूप कहर दरियाव परे द ग पार नहिं जावै।
मन मल्लाह की क्या कुदरत है पकर बाहिरे लावै।।

श्रीहरिदास हमारे प्रीतम।
परम उदार रसिक वर नागर रीझि रीझि कीनी आपुन सम।।
अंग संग केलि निरन्तर बिहरत कुञ्जबिहारिन प्राननि में रम।
सुख को सार समूह ललित रस ताहि पाय अब रही कौन गम।।
श्रीबिहारी प्यारी को खिलौना।
नाना रूप रंग रति अंग अंग प्रति अति रस रसिक सलौना।।
अति आसक्त रहत जू छबीली छैल छबीले सौं तन मन रौना।
सरस लाड़िलि लाल ख्याल को काहू परत पगौना।।

पद राग-कान्हरौ

अहो मेरे लाल-प्रिया की भावती, यह कौतुक देखो आई हो।
अहो हेली व न्दाविपिन सुहावनो, अरु रवि तनया के तीर हो।।
हेली, रसिकराय रस सौं भरे, इन पलटि पहिरि लिए चीर हो।
अहो हेली, श्याम प्रिया भई मानिनी, गोरेलाल मनावन हारहो।।
हेली मान न छाँड़ै मानिनी, ए तौ रिझवत बहुत प्रकार हो।
अहो हेली, पाँयन परि विनती करै, अरु कहत रसीले बैन हो।।
हेली पीठ फेरि मुख मोरही ए तौ करत न सूधे नैन हो।
अहो हेली नाचत गावत प्रेमसौं, अरु बेनु बजावै रसाल हो।।
हेली राधे कहि कहि बोलही, सुनि विहसि उठी ततकाल हो।
अहो हेली, बदन चूमि मेटे तबै, अरु लीने कंठ लगाई हो।।
हेली मदन रंग भीजै दोऊ, कछु सोभा बरनी न जाइ हो।
अहो हेली, पकी नदं काची करै अरु यह रसिकन की रीति हो।।
हेली मीन चाल हठ उलटिही खेल सदा रसरीति हो।
अहो, हेली भगवत रसिक खिलावही, जानत हारा जीति हो।।